MAHATMA GANDHI UNIVERSITY
of
MEDICAL SCIENCES & TECHNOLOGY
JAIPUR

ORGAN TRANSPLANTATION & ORGAN DONATION

PRESIDENT
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, JAIPUR-302 022

महात्मा गाँधी अस्पताल, जयपुर

इकाई-महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइन्सेज एण्ड टेक्नोलोजी
रीको संस्थानिक क्षेत्र, सीतापुरा, टोंक रोड, जयपुर-302022
फोन- 0141-2771777, आपातकालीन- 0141-2771000

MAHATMA GANDHI HOSPITAL, JAIPUR

SRI RAM CANCER & SUPER SPECIALTY CENTRE

H-2019-0603

Achievement s

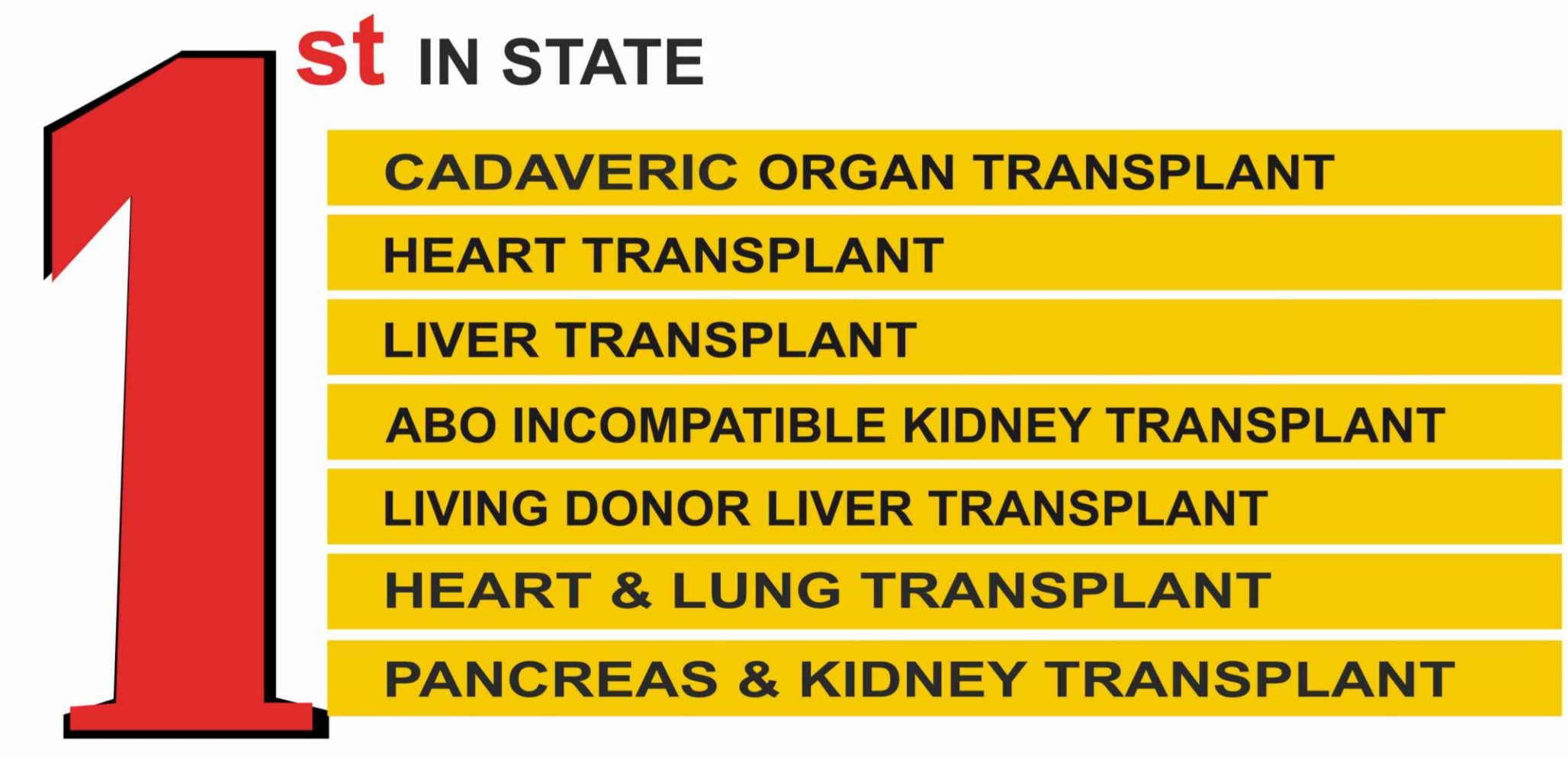

MGH News - Dainik Bhaskar, 4 Feb, 2015 Pg. 17

महात्मा गांधी अस्पताल में ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर शुरू

जयपुर| सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर शुरू हो गया है। हाल ही मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने इसका उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने अस्पताल के 60 बैडेड गहन चिकित्सा ब्लॉक, नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों, टेलीमेडिसिन सेंटर, 21 शैय्याओं की डायलिसिस इकाई तथा 33 किलोवाट सबस्टेशन का भी उद्घाटन किया। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ और महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टैक्नोलोजी के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार भी मौजूद थे।

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION
RAJASTHAN PATRIKA PAGE NO: 4 DATE 02-.02.2015

कठिन परिस्थितियों में डॉक्टरों का बेहतरीन काम : मुख्यमंत्री

महात्मा गांधी अस्पताल में कई सुविधाओं का लोकार्पण

महात्मा गांधी अस्पताल में नई सुविधाओं का लोकार्पण करतीं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे।

जयपुर . मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने चिकित्सा सेवा से जुड़े लोगों को टीम भावना से काम करने की सलाह देते हुए कहा कि इससे बेहतर परिणाम मिलते हैं। एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। वे शनिवार को महात्मा गांधी अस्पताल में नई सुविधाओं के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि एसएमएस अस्पताल में कठिन परिस्थितियों के बावजूद डॉक्टर, रेजीडेंट व अन्य स्टाफ बेहतरीन काम कर रहे हैं। राजे ने कहा कि जहां सफाई है, वहां देवी का निवास होता है।

इससे पहले राजे ने महात्मा गांधी अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर, 60 बैडेड आईसीयू, नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों, टेलीमेडिसिन सेंटर, 21 बैडेड डायलिसिस इकाई और 33 किलोवाट सब स्टेशन का लोकार्पण किया। समारोह को उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरफ सराफ, डॉ.आर.पी. सोनावाला, डॉ.आर.पी. चैरियन और हैदराबाद से आए लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. बलबीर सिंह ने भी संबोधित किया। अंत में महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने मुख्यमंत्री राजे को उनकी मां विजयराजे सिंधिया की मूर्ति भेंट की। इस मूर्ति का निर्माण अर्जुन प्रजापति ने किया।

Cadaver Organ Transplant

PRESIDENT
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, JAIPUR-302 022

भास्कर वॉल ऑफ फेम 2017 का पहला सिटी फ्रंट पेज 2016 के हीरोज के नाम-

हमारे हीरों जो अंगदान कर 2017 में भी किसी और की देह में जी रहे हैं

मुस्कुरा रहे हैं दिल-गुर्दे, हम जिंदा हैं...

वक्त नहीं रुकता। जैसे 2016 गुजर गया, 2017 आ गया। यादगार वही होता है, जो अमिट काम कर जाता है। ऐसे ही कुछ काम उन लोगों ने किए जो इस दुनिया में अब भले ही नहीं हैं, लेकिन वे किसी और की देह में जिंदा हैं। दिल, गुर्दा, और लीवर के रूप में। कहते हैं मौत पीछे आंसू छोड़ जाती है, लेकिन ये ऐसी मौतें हैं जो पीछे आंखों में जिंदगी की चमक छोड़ गई। अंगदान- जीवनदान की ये अलख जगाने वाले लोग और इनके परिवार ही हमारे लिए वास्तविक हीरो हैं, जो जानते थे कि जिंदगी लंबी नहीं होती, इसे बड़ा जरूर बनाया जा सकता है। और सबसे बड़ी बात- ये हीरो खेतों और खलिहानों से हैं। ये चिकित्सा क्रांति के बीज बने जिस पर आज ऑर्गन ट्रांसप्लांट का वृक्ष पनप रहा है। संदीप शर्मा की रिपोर्ट...

मोहित

उम्र छह वर्ष। निवासी- राजगढ़, अलवर। सड़क दुर्घटना में ब्रेनडेड हो गया। री-बर्थ : उसके लिवर और किडनियां तीन लोगों को लगाए गए, तीनों अब पूर्ण स्वस्थ हैं।

राजू लुहार

उम्र, 18 वर्ष। निवासी जयपुर। सड़क हादसे में दिमाग मर गया था, लिवर-किडनियां जिंदा थी। री-बर्थ : उसके अंग दान किए। 2 अगस्त 2015 को राजू चार जनों का जीवनदाता बन गया।

गिरधारी पांचाल

उम्र 27 वर्ष। निवासी जयपुर। सड़क हादसे में जान गई। री-बर्थ : मगर इनके जिंदा दिल, गुर्दे और लिवर, फेफड़े और कॉर्निया परिजनों ने दान कर दिए। 5 दिसंबर 2016 से गिरधारी अन्य पांच जनों की देह में जिंदा हैं।

पीयूष बंजारा

उम्र 21 वर्ष। निवासी- डीडवाना, नागौर। सड़क हादसे में मौत। री-बर्थ : कॉर्निया, लिवर और किडनियां डोनेट कर दी। 29 जनवरी 2016 को तीन बीमारों की नई जिंदगी दे गया।

सत्यभान

उम्र 22 वर्ष। निवासी भरतपुर। सड़क हादसे में ब्रेनडेड हो गया। री-बर्थ : 6 नवंबर 2016 को परिजनों ने उनके किडनियां और लिवर दान किए। इन अंगों से चार जनों को जिंदगी बच गई।

किशन सिंह

उम्र 33 साल। श्रीगंगानगर निवासी। 23 जुलाई 2015 को सड़क हादसे में ब्रेनडेड हुआ। री-बर्थ : किशन की इच्छा के मुताबिक दोनों किडनियां दान कर दीं। दो गंभीर बीमारों को नया जीवन मिल गया।

मनपाल

उम्र 36 साल। निवासी हरियाणा का महेन्द्रगढ़। सड़क दुर्घटना में इस युवा की सांसें छिन गईं। री-बर्थ : लिवर और किडनियां 27 नवंबर 2015 को दान किए जो तीन गंभीर बीमारों के लिए नई जिंदगी बन गए।

ओमप्रकाश

उम्र 55 वर्ष। निवासी खातीपुरा जयपुर। गंभीर बीमार हुए और ब्रेनडेड हो गया। री-बर्थ : इनकी किडनियां और लिवर जिंदा थे। अंगदान किए और 5 दिसंबर 2015 को 3 जनों के जीवनदाता बन गए।

इनके अलावा राधा रानी (14), निर्मला मेहता (45), जगन सिंह (48), नवीन (22), सुनील जांगिड़ (32) ने भी अंगदान किए और 16 लोगों को नया जीवनदान दिया।

इंद्रा देवी

उम्र 40 वर्ष। निवासी- निवाई, टोंक। सड़क हादसे में मौत। री-बर्थ : इंद्रा भी 29 अप्रैल 2016 से तीन जनों की देह में दिल, गुर्दा, लिवर बनकर आज भी जिंदा हैं। उनके कॉर्निया ने एक की आंखों को रोशनी दी।

सोनू गुर्जर

उम्र 30 वर्ष। निवासी जयपुर। सड़क दुर्घटना में सोनू को ब्रेनडेड घोषित किया गया। री-बर्थ : 29 नवंबर 2016 को सोनू का हार्ट, किडनी और कॉर्निया डोनेट। 3 की जिंदगी बचाई और एक की आंखें।

भास्कर विचार

हम सब भी बनाएं अंगदानियों को हीरो

नया साल आया है तो नए-नए कैलेंडर भी आएंगे। नेताओं के मुस्कुराते चेहरों के साथ शहर में चप्पे चप्पे पर नए साल की शुभकामनाओं वाले पोस्टर चिपकाएं जाएंगे। विचार यह कि नेता-सरकार या प्रशासन नए साल की शुभकामनाओं के साथ नए साल के संकल्पों का पोस्टर क्यों न छपवाएं? इन पोस्टरों पर संकल्प को साकार करने वाले हमारे ऐसे ही हीरोज के चेहरे क्यों न हों? होने तो चाहिए। इसलिए कि, हीरो ही साबित करता है कि अपनी मौत के साथ किसी और को जिंदगी देने का संकल्प पूरा कैसे किया जाए। दीवारों पर कैलेंडर तो हर साल बदलते हैं, लेकिन समाज की ये मजबूत दीवारें कभी नहीं हिलने वाली हैं। आने वाले समय में दीवारों पर लगने वाले इन हीरोज के पोस्टर लोगों प्रेरित करेंगे, तब अंगदान-महाअभियान बन जाएगा।

दो कैथ लैब से सुसज्जित राजस्थान का एक मात्र केन्द्र

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :
DAINIK BHASKAR
PAGE NO: 4 DATE 11.05.2015

पहले ब्रेन डैड डोनर मोहित के नाम पर होगा अस्पताल

अलवर। राजगढ़ के तिलवाड़ गांव का उप स्वास्थ्य केन्द्र अब मोहित के नाम पर होगा। मोहित राज्य का पहला ब्रेन डैड डोनर है, जिसके नाम पर केन्द्र का नामकरण हुआ। ग्रामीणों की मांग पर सरकार ने तीन महीने बाद नाम को मंजूरी दी है। जब एनएचएम के अतिरिक्त मिशन निदेशक नीरज के पवन के निर्देश पर महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर प्रशासन ने मोहित के इलाज पर खर्च 70 हजार रुपए वापस करने की पेशकश की थी, जो परिजनों ने लेने से इनकार कर दिया था। ग्रामीणों ने सरकारी भवन का नामकरण मोहित के नाम करने की मांग की थी। सरकार की मांग को मंजूर कर लिया।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :RAJASTHAN PATRIKA PAGE NO: 2 DATE 10-.02.2015

उपलब्धि राज्य में पहले मल्टी ऑर्गन रिट्रीवल की शुरूआत महात्मा गांधी अस्पताल में

ब्रेनडेथ बच्चे की किडनी का किया ट्रांसप्लांट

ब्रिटेन के डॉ. क्रिस्टोफेर बैरी भी रहे मौजूद

जयपुर (कासं)। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने ब्रेनडेथ बच्चे की किडनी दूसरे रोगी के ट्रान्सप्लान्ट कर राज्य में पहले कैडेवरिक किडनी ट्रान्सप्लान्ट तथा मल्टी ऑर्गन रिट्रीवल की शुरुआत की है। कैडवरिक रीनल ट्रांसप्लान्ट के इस आपरेशन को डॉ. टी.सदासुखी व उनकी टीम ने अन्जाम दिया। डॉ. टी. सदासुखी ने पत्रकारों को बताया कि 5 फरवरी को शाम पांच बजे टीश्यू मैचिंग के लिए नई दिल्ली भेजा गया। किडनी डोनर एक 6 वर्षीय बच्चा था। जिसकी किडनी का आकार 7 से 8 सेमी था। किडनी प्राप्त कर्ता रोगी जिसकी आयु पचास वर्ष है। जिसको किडनी ट्रान्सप्लान्ट की गई वह पिछले डेढ़ साल से किड़नी ट्रान्सप्लान्ट के इन्तजार में था। इस दौरान उसकी हफ्ते में दो बार डायलिसिस हो रही थी उसके ग्रुप मैचिंग का फैमिली ऑर्गन डोनर नहीं मिल रहा था। राज्य सरकार की किडनी ट्रान्सप्लान्ट चाहने वाले मरीजों की लिस्ट में वरियता पर था। इस ऑपरेशन के दौरान डॉ. क्रिस्टोफेर बैरी भी मौजूद रहे। उन्होंने बताया कि अंगदाता रोगी के शरीर से लीवर भी निकाला गया। शेष पृष्ठ 4 पर

इस सफल सर्जरी को अंजाम देने वाले चिकित्सक

महात्मा गांधी अस्पताल की ब्रेनडेथ डिक्लेरेशन कमेटी में अतिरिक्त मेडिकल सुपरिटेंडेन्ट डा. आर.सी. गुप्ता, विभागाध्यक्ष डा. पंकज गुप्ता, न्यूरोलोजिस्ट डा. गौरव गुप्ता, फिजिशियन डा. पुनीत रिझवानी के साथ साथ डा. टी. सदासुखी के साथ उनकी टीम में डा. एच.एल. गुप्ता, डा. मनीष गुप्ता, गोविन्द शर्मा, डा. सूरज गोदारा, डा. विपिन गोयल तथा डा. दुर्गा जेठवा शामिल थी। सरकार के नोडल अधिकारी आईएएस नीरज के. पवन का भी विशेष सहयोग रहा। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने अंगदाता बच्चे के परिजनों माता-पिता, दादा-दादी व भाई-बहन का उनके घर जाकर आभार प्रकट किया तथा अस्पताल की ओर से अधिकारिता प्रतिबद्धता पत्र पेश किया जिसके तहत अंगदाता के भाई-बहन, माता-पिता व दादा-दादी को महात्मा गांधी अस्पताल में निःशुल्क आजीवन मेडिकल व सर्जिकल सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी।

महात्मा गांधी अस्पताल में कैडेबर प्रत्यारोपण

अंगदाता बच्चे को हीरो-सी अंतिम विदाई

निःशुल्क इलाज की पेशकश पर बच्चे के परिजनों ने कहा- हम अंग बेचने नहीं आए हैं

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में लिवर और किडनी दान करने वाले अलवर जिले के 6 वर्षीय ब्रेन डेड बालक की मौत के बाद अंतिम विदाई हीरो के समान हुई। अस्पताल प्रशासन ने पूरे सम्मान के साथ उसका शव विदा किया। इस दौरान अस्पताल के गार्डों ने गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया। वहीं, परिजनों ने कहा कि दुनिया से विदा होने से पहले बच्चे के भाग्य में दो जिंदगी बचाने जैसा बड़ा पुण्य लिखा था, जो उसे मिल गया। परिजनों को अस्पताल प्रबंधन की तरफ से निःशुल्क इलाज की पेशकश की गई तो परिजनों ने इतना ही कहा- 'हम अंग बेचने नहीं आए है, इलाज का खर्च न देकर इसके पुण्य का रुख नहीं मोड़ना चाहते।'

सोमवार को अस्पताल प्रबंधन की ओर से राज्य के पहले किडनी प्रत्यारोपण की घोषणा की गई। इस अवसर पर महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने पहले तीन कैडेबर ट्रांसप्लांट और बच्चे के परिवारजनों का निःशुल्क इलाज करने की भी घोषणा की। यह बच्चा खेत में कुएं पर लगे इंजन की पैन बेल्ट की चपेट में आने के बाद यहां भर्ती किया गया था।

साढ़े तीन घंटे में दिल्ली पहुंचाया लिवर

ट्रांसप्लांट करने वाले डॉ. टी.सी. सदासुखी और अमरीका के डॉ. क्रिस्टोफर बैरी ने बताया कि टिश्यू मैच करने के लिए 5 फरवरी को सैंपल दिल्ली भेजे गए थे, जिनकी रिपोर्ट 6 फरवरी को सुबह मिलते ही प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। बच्चे का लिवर 50 वर्ष के व्यक्ति को लगाया गया है। पुलिस उपायुक्त यातायात हैदर अली जैदी ने कहा कि मात्र साढ़े तीन घंटे में जयपुर से दिल्ली तक वीआईपी मूवमेंट की विशेष व्यवस्था करवाकर लिवर दिल्ली पहुंचाया गया, जिसमें हरियाणा और दिल्ली सरकार का भी सहयोग लिया गया। उन्होंने बताया कि अंतरराज्यीय कॉरिडोर का यह पहला मामला था।

एसएमएस में इसलिए होती है देरी

डॉ. सदासुखी ने कहा कि निजी अस्पताल में किसी भी कार्य की मंजूरी के लिए एक स्तर होता है, वहीं सरकारी अस्पताल में इसके लिए कई स्तर होते हैं। गौरतलब है कि सवाई मानसिंह अस्पताल में करीब चार साल से कैडेबर किडनी प्रत्यारोपण की तैयारियां चल रही हैं, लेकिन अभी तक सफलता नहीं मिली है। वहीं महात्मा गांधी अस्पताल में यह काम 6 महीने में ही पूरा हो गया। इस अवसर पर मोहन फाउंडेशन और जयपुर सिटीजन फोरम की ओर से राजीव अरोड़ा भी मौजूद थे।

राज्य में पहला कैडेवरिक किडनी ट्रांसप

चिकित्सकों ने ब्रेन डैड बच्चे की किडनी दूसरे रोगी को लगाकर दिया जीवनदान

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर के चिकित्सकों ने पहला कैडेवरिक किडनी ट्रांसप्लाण्ट तथा मल्टी ऑर्गन रिट्रीवल कर राज्य के चिकित्सा इतिहास में एक नए अध्याय का सूत्रपात किया। अंगदान दाता रोगी-के परिवार की सहमति पश्चात अंगदान दाता रोगी के शरीर से किडनी और लीवर निकाले गए। अस्पताल में 6 फरवरी को एक ब्रेन डैड, बीटिंग हार्ट रोगी के परिवारजनों द्वारा अनुमति के बाद किडनी निकाल कर किडनी फेलियर के दूसरे गंभीर रोगी को लगाकर उसे जीवनदान दिया गया। डॉ. टी.सी. सदासुखी ने बताया कि महात्मा गांधी अस्पताल की ब्रैन डैड डिक्लेरेशन कमेटी - एडीशन्नल मेडिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट डॉ. आर.सी. गुप्ता, प्रोफेसर एण्ड विभागाध्यक्ष न्यूरोसर्जरी डॉ. पंकज गुप्ता, न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. गौरव गोयल, फिजिशियन प्रोफेसर डॉ. पुनीत रिझवानी तथा राज्य सरकार के प्रतिनिधि आदि द्वारा अंगदान दाता रोगी को ब्रेन डैड घोषित करने के उपरान्त ही यह ऑपरेशन किया जा सका।

राज्य सरकार के ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट प्रोग्राम के नोडल ऑफिसर वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी नीरज के. पवन भी तुरन्त महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचे और अपनी देखरेख में अंगदान दाता रोगी के घर वालों की सहमति लेने की प्रक्रिया पूरी करवाई जिससे इस ऑपरेषन को नियमानुसार सफलतापूर्वक किया जा सके। राज्य सरकार द्वारा निर्धारित नियमानुसार अंगदान दाता एवं अंग प्राप्तकर्ता दोनों ही की पहचान जाहिर करना वर्जित है।

कैडेवरिक रीनल ट्रांसप्लान्ट के इस ऑपरेशन को डॉ. सदासुखी और उनकी टीम ने सफलतापूर्वक किया। किडनी टिश्यू मैच करने के लिए गुरुवार 5 फरवरी को सायं 5 बजे दिल्ली भेजा गया जिसकी रिपोर्ट 6 फरवरी को सुबह 5 बजे आई तब इसके बाद यह ऑपरेशन किया जा सका। जिस रोगी (50 वर्षीय) को यह किडनी ट्रांसप्लान्ट की गई वह उच्च रक्तचाप से पीड़ित था, पिछले डेढ़ वर्ष से डायलिसियस था, उसे सप्ताह में दो बार डायलिसियस की जरूरत पड़ती थी, उसे अपने ग्रुप की मैचिंग का फैमिली ऑर्गन डोनर नहीं मिल पा रहा था। राज्य सरकार की किडनी ट्रांसप्लान्ट चाहने वाले पेशेन्ट की लिस्ट में वह वरीयता पर था। आपात स्थिति में कैडेवरिक ऑर्गन डोनर से किडनी प्राप्त होने पर इस रोगी को किडनी [illegible] एक 6 [illegible] छोटे ([illegible] किडनी [illegible] ही स्था[illegible] अंगदा[illegible] किडनि[illegible] जगह [illegible] कि[illegible] अधिक[illegible] हाई [illegible] सदासु[illegible] एच.ए[illegible] गोविन[illegible] गोदार[illegible]

महर्षि दधीचि की परम्परा निभाई

अंगदान दाता रोगी के परिवार ने भारतीय संस्कृति के प्रखर पुरुष महर्षि दधीचि की परम्परा को निभाते हुए जो कार्य किया, उसके प्रति महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर डॉ. डी.पी. पूनिया, प्रो-वाईस चान्सलर डॉ. सुधीर सचदेव तथा ऑपरेशनकर्ता डॉ. टी.सी. सदासुखी ने अंगदान दाता परिवार के घर जाकर परिवार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और महात्मा गांधी अस्पताल की तरफ से अधिकारिक प्रतिबद्धता पत्र प्रस्तुत किया जिसके अनुसार अंगदान दाता के भाई-बहिन, उसके माता-पिता तथा दादा-दादी को महात्मा गांधी अस्पताल द्वारा आजीवन निःशुल्क मेडिकल एवं सर्जिकल ट्रीटमेंट उपलब्ध करवाया जाएगा।

जागरुकता का अभाव

मोहन फाउण्डेशन जयपुर सिटीजन फोरम के दिलीप जैन ने बताया कि राज्य में बड़ी संख्या में ब्रेन डैड रोगी आपात स्थितियों में मिल जाते हैं परन्तु जागरूकता के अभाव में एक तरफ तो वे समुचित अंगदान से वंचित रह जाते हैं, दूसरी तरफ इन अंगों के न मिल पाने की वजह से कई रोगियों के प्राण चले जाते हैं। हमारा प्रयास है कि समाज में यथासम्भव ऐसी जागृति और चेतना पैदा की जा सके कि जीवनोपरान्त हमारे अंगदान से जीवन से जूझते रोगियों को जीवनदान मिल सके।

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :NATIONAL DUNIYA, PAGE -2 DATE 10 .02.2015

P-6-2

राज्य में पहला कैडेवरिक ट्रांसप्लांट

ब्रेन डेड मरीज की किडनी जंयपुर में और लीवर दिल्ली में किया ट्रांसप्लांट

नेशनल दुनिया

जयपुर। राज्य में मल्टी आर्गन ट्रांसप्लांट प्रक्रिया को पंख लग गए हैं। राज्य सरकार के लम्बे प्रयास और ट्रांसप्लांट के लिए जागरुकता से प्रदेश में पहली बार कैडेवरिक ट्रांसप्लांट सम्भव हुआ। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टरों की टीम ने यह काम कर दिखाया। अस्पताल की टीम ने एक ब्रेन डेड बच्चे की दोनों किडनी एक 50 वर्षीय रोगी में ट्रांसप्लांट कर दी। वहीं इसी बच्चे का लीवर दिल्ली में एक मरीज के ट्रांसप्लांट किया गया। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने सोमवार को पत्रकारों को पहले कैडेवरिक ट्रांसप्लांट की जानकारी देते बताया कि यह काम राज्य सरकार के केडेवरिक ट्रांसप्लांट के लिए प्रयास, इच्छाशक्ति और विशेषज्ञ टीम के कारण हो सका। उन्होंने बताया कि अस्पताल में जल्द ही लीवर और हार्ट ट्रांसप्लांट भी किए जाएंगे। खास बात यह है कि पहले तीन लीवर, हार्ट व किडनी कैडेवरिक ट्रांसप्लांट अस्पताल में मुफ्त किए जाएंगे।

पत्रकारों को कैडेवरिक ट्रांसप्लांट की जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम एल स्वर्णकार एव अन्य अतिथि।

प्रेस वार्ता

- महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टरों ने किया मल्टी ऑर्गन रिट्रीवल
- डॉ. स्वर्णकार की घोषणा, पहले तीन कैडेवरिक लीवर, हार्ट और किडनी ट्रांसप्लांट किए जाएंगे मुफ्त

अपनाई यह प्रक्रिया

महात्मा गांधी अस्पताल में पिछले दिनों एक्सीडेंट में गंभीर रूप से घायल अलवर का एक छह वर्षीय बच्चा इलाज के लिए आया था। अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टरों की ब्रेन डैड डिक्लेरीशेन कमेटी ने पूरी पड़ताल के बाद उसे ब्रेन डेड घोषित किया। बाद में बच्चे के परिजनों को उसकी स्थिति बताकर समझाया गया तो वे आर्गन डोनेट करने को तैयार हो गए। बच्चे की दोनों किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में ही वरिष्ठ यूरोलॉजिस्ट डॉ. टीसी सदासुखी ने उच्च रक्तचाप से पीड़ित डेढ़ साल से डायलेसिस पर चल रहे एक 50 वर्षीय गंभीर मरीज के ट्रांसप्लांट की। अस्पताल में छह फरवरी को हुए इस ऑपरेशन के दौरान राज्य सरकार के ऑर्गन ट्रांसप्लांट प्रोग्राम के नोडल अफसर आईएएस नीरज के. पवन, सरकार के सलाहकार अमेरिका के डॉक्टर डॉ. क्रिस्टोफर वैरी भी पूरे समय मॉनिटरिंग करते रहे। किडनी ट्रांसप्लांट के बाद मरीज अब पूरी तरह स्वस्थ है। समाजसेवी राजीव अरोड़ा ने बताया कि ब्रेन डेड मरीज के परिजनों को समझाने में मोहन फाउंडेशन, जयपुर सिटीजन फोरम की टीम का बड़ा सहयोग रहा।

सड़क मार्ग से भेजा गया लीवर

महात्मा गांधी अस्पताल में ब्रेड डेड बच्चे का लीवर ट्रांसप्लांट के लिए दिल्ली स्थित डॉ. शिव सरीन के अस्पताल में ले जाया गया। खास बात यह रही कि राज्य में पहली बार सड़क मार्ग से लीवर ले जाया गया। डीसीपी ट्रैफिक हैदरअली जैदी ने पत्रकारों को बताया कि राज्य के डीजीपी ने हमें लीवर दिल्ली पहुंचने के लिए सिर्फ 3.30 घंटे का समय दिया। जैदी ने इसके लिए अनुभवी पुलिस अफसरों की टीम बनाकर प्लान तैयार किया और पुलिस एस्कोर्ट में महात्मा गांधी अस्पताल से लीवर दिल्ली ले जाने के लिए विशेष ग्रीन कॉरीडोर तैयार किया।

देना पड़ेगा सिर्फ दवाओं का खर्च

महात्मा गांधी अस्पताल में अत्याधुनिक सुविधाओं वाले मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर में पहले तीन कैडेवरिक लीवर, हार्ट व किडनी ट्रांसप्लांट मुफ्त किए जाएंगे। ऐसे मरीजों को सिर्फ दवाओं का खर्च ही देना पड़ेगा। अस्पताल चेयरमैन डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि लीवर ट्रांसप्लांट का खर्च करीब 27 से 30 लाख रुपये आता है, मगर हमारे यहां इसे मात्र 10 लाख में किया जाएगा। इसी तरह हार्ट ट्रांसप्लांट जैसे बड़े ऑपरेशन को भी नाममात्र के खर्च सात लाख में ही किया जाएगा। अस्पताल में किडनी ट्रांसप्लांट तो डेढ़ साल से हो रहा है, मगर कैडेवरिक ट्रांसप्लांट की अब शुरुआत हो गई है। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य मरीजों की सेवा है, न की धन कमाना।

डॉ. सदासुखी के नेतृत्व में इस टीम ने किया कमाल

ब्रेन डैड मरीज से महात्मा गांधी अस्पताल में 50 वर्षीय मरीज में किडनी के कैडेवरिक ट्रांसप्लांट ऑपरेशन करने वाली टीम में डॉ. टीसी सदासुखी के नेतृत्व में डॉ. एचएल गुप्ता, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. गोविंद शर्मा, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. विपिन गोयल, डा. दुर्गा जेठवा शामिल थी।

जागरूकता से बचाई जा सकती है कई जानें

राज्य में ब्रेन डैड मरीजों के अंगदान (कैडेवरिक ट्रांसप्लांट) के लिए जागरुकता के लिए काम कर रहे संगठन मोहन फाउंडेशन, जयपुर सिटीजन फोरम के दिलीप जैन, राजीव अरोड़ा ने कहा कि राज्य में बड़ी संख्या में ब्रेन डेड मरीज आपात स्थितियों में मिल जाते है। उनके आर्गन ट्रांसप्लांट करके लोगों की जान बचाई जा सकती है।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION
:DAINIK NAVJYOTI PAGE NO: 5 DATE 10-.02.2015

महात्मा गांधी अस्पताल में पत्रकारों को जानकारी देते डॉ. एम.एल. स्वर्णकार और मंचस्थ अतिथि। दिनेश

महात्मा गांधी हॉस्पिटल में राज्य का पहला कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट

नवज्योति, जयपुर

छह साल के एक ब्रेन डेड बच्चे की किड़नी व लीवर निकालकर उसे 50 वर्षीय ब्लड प्रेशर के मरीज के ट्रांसप्लान्ट कर महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टरों ने नया जीवन दिया है। इसी के साथ महात्मा गांधी अस्पताल राज्य का पहला ऐसा अस्पताल बन गया है जिसने सफलतापूर्वक कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट किया है। आज पत्रकारों से बातचीत में अस्पताल के डॉ.टी.सी.सदासुखी ने बताया कि 6 फरवरी को [illegible]स एक केसा आया था जिसके अन्दर एक 6 साल [illegible] को महात्मा गांधी अस्पताल की ब्रेन डैड कमेटी, [illegible]न मेडिकल सुपरिंटेन्डेन्ट डॉ.आर.सी.गुप्ता, प्रोफेसर [illegible]भागाध्यक्ष न्यूरोसर्जरी डॉ.पंकज गुप्ता, न्यूरोलॉजिस्ट [illegible] गोयल, फिजीशियन प्रोफेसर डॉ.पुनीत रिझवानी तथा [illegible]कार के प्रतिनिधियों ने ब्रेन डैड घोषित कर दिया था। [illegible]या के तहत बच्चे के माता-पिता की अनुमति लेने [illegible]त उसकी किडनी लेकर एक 50 वर्षीय व्यक्ति के [illegible]पूर्वक ट्रांसप्लांट कर दी गई जो अब पूरी तरह से [illegible]। बच्चे की किडनी 6 से 7 सेन्टीमीटर आकार की [illegible] व्यक्ति को हाई ब्लड की शिकायत थी और पिछले [illegible] से डायलिसिस पर था। उसे सप्ताह में दो बार [illegible]स करना पड़ता था। उसकी फैमिली में किसी भी [illegible] ग्रुप मैच नहीं हुआ जिससे की ऑर्गन डोनेट किया [illegible] राज्य सरकार की किडनी ट्रांसप्लांट चाहने वाले [illegible] लिस्ट में वरीयता पर था। डॉ.सदासुखी ने बताया [illegible]नी टिश्यू मैच कराने के लिए दिल्ली भेजा गया। 6 [illegible]को सुबह 5 बजे उसकी रिपोर्ट आई तब जाकर [illegible] शुरू हुआ। किडनी प्राप्तकर्ता रोगी के दायी ओर [illegible]न पर 15 सेमी की जगह बनाकर किडनी डोनर से [illegible]गई दोनों किडनियां एक साथ दायी तरफ एक ही [illegible]ा दी गई। किडनी डोनर के शरीर से लीवर भी [illegible] गया जिसे दिल्ली के इण्डियन इंस्टीटयूट ऑफ [illegible] एण्ड लीवर साइन्सेज के प्रमुख डॉ.शिव सरीन से [illegible] राज्य सरकार ने ग्रीन कॉरीडोर की व्यवस्था कर [illegible]के अन्दर दिल्ली भिजवाया। 6 फरवरी को एम्बुलेंस [illegible]स्कॉर्ट के साथ दिल्ली के रवाना हुई। लीवर को एक अन्य 6 वर्षीय लीवर रोग से पीड़ित बच्चे के ट्रांसप्लांट किया है। इस तरह महात्मा गांधी अस्पताल ने सफलतापूर्वक मल्टी ऑर्गन रिट्रीवल के इस ऑपरेशन को पूरा किया।

कौन-कौन रहा टीम में

ऑपरेशन में डॉ.सदासुखी के साथ डॉ.एच.एल.गुप्ता, डॉ.मनीष गुप्ता, डॉ.गोविन्द शर्मा, नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ.सूरज गोदारा, ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट एनेस्थिसिया विशेषज्ञ डॉ.विपिन गोयल तथा एनेस्थिसिया विभाग की अध्यक्षा डॉ.दुर्गा जेठवा उपस्थित रहीं। इस ऑपरेशन में राज्य सरकार के ऑर्गन ट्रांसप्लांट सलाहकार डॉ.किस्टोफर बेरी भी मौजद रहे। महात्मा गांधी हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉ. एम.एल.स्वर्णकार ने कहा कि अस्पताल भविष्य में कैडेवरिक लीवर एवं हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए पूरी तरह तैयार है और पहले तीन कैडेवरिक किडनी, लीवर, एवं हार्ट ट्रांसप्लांट अस्पताल में निशुल्क किए जाएंगे। दवाइयों का खर्चा अंगप्राप्तकर्त्ता को वहन करना होगा जिसमें एक लाख से ज्यादा का खर्चा नहीं है। उन्होंने डॉ.किस्टोफर बैरी को धन्यवाद दिया जो ऑपरेशन शुरू होने से लेकर ऑपरेशन खत्म के बाद तक वहीं पर मौजूद रहे और प्रत्येक स्थिति पर अपनी गाइडेंस देते रहे। डॉ.बेरी ने कहा कि बहुत खुशी हुई देखकर तमिलनाडु के बाद अव राजस्थान में भी ऑर्गन ट्रांसप्लांट शुरू हो गया। उन्होंने कहा कि इसके लिए पेंशेट के परिजनों की इच्छा शक्ति को जाग्रत करने की जरूरत है ताकि दूसरों की जिंदगी को बचाया जा सके।

कार्यक्रम में मौजूद डीसीपी ट्रैफिक हैदर अली जैदी ने कहा कि ग्रीन कॉरीडोर के माध्यम से लीवर को दिल्ली ले जाना बेहद चुनौतीपूर्ण था। इसके लिए सिटी कंट्रोल रूम को इंन्फॉर्म करके हमने ट्रैफिक कंट्रोल रूम से जानकारी लेकर ग्रामीण पुलिस की मदद से अलवर होते हुए दिल्ली पहुंचाया और यह कार्य मात्र तीन घंटे में पूरा किया गया। इस अवसर पर मोहन फाउण्डेशन जयपुर सिटीजन फोरम के सदस्य, ब्रेन डैथ कमेटी के सदस्य, अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक मौजूद थे।

पहल : गंभीर मरीजों के लिए साबित होगी वरदान

देश की पहली ग्रीन कॉरिडोर विंग राज्य में

राजेश मीणा • जयपुर

इन्हें मिलेगा ग्रीन कॉरिडोर

अफसरों की मानें तो प्रसूताएं, हादसे में गंभीर रूप से घायल, अंग प्रत्यार्पण के लिए सहित अन्य गंभीर बीमारियों से पीड़ित मरीजों को ग्रीन कॉरिडोर उपलब्ध करवाया जाएगा।

दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल या खतरनाक बीमारी से पीड़ित हर मरीज की जान बचाने के लिए प्रदेश में उसे ग्रीन कॉरिडोर उपलब्ध करवाया जाएगा। इसके लिए राज्य में एक अलग विंग का गठन किया जाएगा, जो कि एंबुलेंस सेवा और यातायात पुलिस में सामंजस्य बनाने का काम करेगी। इसके लिए राजस्थान पुलिस ने एक प्रस्ताव तैयार किया है। इसे जल्द ही स्वीकृति मिलने की उम्मीद है। आने वाले समय में जल्द ही यादगार में इस विंग के लिए अलग से कार्यालय शुरू किया जाएगा।

बचाई थी जिंदगी

फरवरी माह के शुरुआत में सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल से ब्रेन डेड व्यक्ति का लीवर ट्रांसप्लाट के लिए दिल्ली भेजा गया था। इसके लिए पुलिस ने पहली बार ग्रीन कॉरिडोर बनाया था। ग्रीन कॉरिडोर की सहायता से तीन घंटे मे ही यह सफर तय किया गया। इससे पूर्व इसका उपयोग देश के अन्य हिस्सों में भी किया जा चुका है। लेकिन इसके लिए अलग से विंग देश में पहली बार बनाई जा रही है। इससे पूर्व बैंगलुरु, मुंबई और अन्य शहरों में मरीज की जान बचाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर का उपयोग किया जा चुका है। देश में ग्रीन कॉरिडोर उपलब्ध करवाने के कई मामले सामने आ चुके हैं, लेकिन यह पहली बार है, जब किसी राज्य में इस सेवा के लिए अलग से विंग बनेगी। यह संभवतया देश की पहली ग्रीन कॉरिडोर विंग है।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :NAV BHARAT TIMES , PAGE- 3, DATE 16.2.2015

3 घंटे में 336 KM दूर पहुंचा लीवर

NBT एक्सक्लूसिव

दिल्ली में बच्चे का किया जाना था ट्रांसप्लांट, बनाया गया ग्रीन कॉरिडोर

Durgadatt Pandey

1. छह फरवरी को सुबह 11 बजे जयपुर से लीवर को ट्रांसपोर्ट करना शुरू किया गया
2. जब लीवर जयपुर से चला था, उसी वक्त दिल्ली में रिसीवर मरीज की सर्जरी शुरू कर दी थी
3. राजस्थान पुलिस की एक वैन एंबुलेंस के आगे और एक पीछे चल रही थी
4. लीवर के हॉस्पिटल पहुंचते ही ट्रांसप्लांट कर दिया गया

तीन राज्यों की पुलिस ने मिलकर बनाया था जयपुर से दिल्ली के बीच ग्रीन कॉरिडोर

आगे का रास्ता हुआ साफ।

- जयपुर से ब्रेन डेड बच्चे का लीवर लाकर दिल्ली में बचाई एक जान
- सिर्फ 8 घंटे ही जिंदा रहता है लीवर, इसलिए टाइम था अहम फैक्टर
- पुलिस की हेल्प से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर 3 घंटे में हुई 336 किमी की दूरी
- देश में पहली बार तीन राज्यों की पुलिस ने मिलकर किया यह काम

■ राहुल आनंद, नई दिल्ली

देश में पहली बार तीन राज्यों की ट्रैफिक पुलिस ने एक बच्चे की जान बचाने और लीवर ट्रांसपोर्ट के लिए ग्रीन कॉरिडोर उपलब्ध कराया। सिर्फ तीन घंटे में 336 किलोमीटर की दूरी तय की गई। जयपुर में एक ब्रेन डेड बच्चे का लीवर निकालकर दिल्ली में एक दस साल के बच्चे में ट्रांसप्लांट किया गया। आमतौर पर सात से आठ घंटे लेने वाले इस सफर को सिर्फ तीन घंटे में तय किए जाने से ही ट्रांसप्लांट संभव हो पाया। इससे पहले साउथ में बेंगलुरु और चेन्नै के बीच ग्रीन कॉरिडोर की सर्विस मिली थी। इसमें भी दो राज्यों की पुलिस ने मदद की थी।

दिल्ली के इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर एंड बिलियरी साइंसेज (आईएलबीएस) में 6 फरवरी यह ट्रांसप्लांट किया गया है। आईएलबीएस के लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ वी. पामेचा ने बताया कि हमारे पास जयपुर के महात्मा गांधी हॉस्पिटल से कॉल आया था कि उनके यहां एक ब्रेन डेड बच्चा है। बच्चे की फैमिली ऑर्गन डोनेट करने के लिए तैयार थी। छह साल के इस बच्चे को सिर में चोट लगने की वजह से अस्पताल में एडमिट कराया गया था। इलाज के दौरान बच्चा ब्रेन डेड हो गया। इसके बाद वहां के डॉक्टरों ने आईएलबीएस को इसकी सूचना दी।

डॉ पामेचा ने कहा कि आईएलबीएस में दस साल का एक मरीज एडमिट था। इस मरीज का लीवर पूरी तरह से डैमेज था। जान बचाने के लिए लीवर ट्रांसप्लांट करना जरूरी था। इसीलिए लीवर ट्रांसपोर्ट करने से पहले एक टीम जयपुर गई। आईएलबीएस की टीम ने ब्रेन डेड मरीज की जांच की और बताया कि ब्रेन डेड मरीज का ऑर्गन ठीक है और लीवर ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। लेकिन जयपुर से दिल्ली के बीच की दूरी को देखते हुए यह मुमकिन नहीं लग रहा था। दरअसल बॉडी से लीवर निकालने के बाद इसे सिर्फ 8 घंटे तक ही इसे आईस बॉक्स में रखा जा सकता है। इससे ज्यादा वक्त तक ऑर्गन आईस पर रखने से ट्रांसप्लांट में कामयाबी मिलने के चांस कम होने लगते हैं।

ऐसी स्थिति में जयपुर से लीवर दिल्ली लाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर की जरूरत महसूस की गई। डॉक्टरों ने राजस्थान सरकार से बात की और वे इसके लिए तैयार हो गए। फिर आईएलबीएस ने दिल्ली ट्रैफिक पुलिस और हरियाणा ट्रैफिक पुलिस को भी रिक्वेस्ट भेजी।

तीनों राज्यों की पुलिस ने मदद का भरोसा दिया। इसके बाद छह फरवरी को सुबह 11 बजे जयपुर से लीवर को ट्रांसपोर्ट करना शुरू किया गया। राजस्थान पुलिस की एक वैन एंबुलेंस के आगे और एक पीछे चल रही थी। लगभग 336 किलोमीटर का रास्ता तीन घंटे में तय कर लिया गया। राजस्थान पुलिस हॉस्पिटल तक आई। हाई-वे पर टोल प्लाजा हो या रेड लाइट, पूरे रास्ते एंबुलेंस को ग्रीन सिग्नल मिलता गया और लीवर बसंत कुंज के आईएलबीएस अस्पताल पहुंच गया। डॉ पामेचा ने बताया कि वक्त बहुत कम था। इसलिए जब लीवर जयपुर से चला था, उसी वक्त दिल्ली में रिसिवर मरीज की सर्जरी शुरू कर दी थी। एनेस्थिसिया के बाद मरीज के खराब हुए लीवर को बॉडी से निकालना शुरू कर दिया गया था। इसमें लगभग तीन घंटे लगे। इस बीच लीवर भी पहुंच गया और इसके आते ही ट्रांसप्लांट शुरू कर दिया। छोटे बच्चे के लीवर ट्रांसप्लांट में ज्यादा समय लगता है, क्योंकि इनके ब्लड वेसेल्स काफी छोटे होते हैं। सर्जरी सफल रही और बच्चा ठीक है।

आईएलबीएस के डायरेक्टर डॉ एसके सरीन का कहना है कि इस तरह की प्रैक्टिस काफी सराहनीय है और इसकी जरूरत भी है। लोगों को कैडेवर डोनेशन के लिए आगे आना चाहिए। पिछले साल आईएलबीएस में सिर्फ एक ही ट्रांसप्लांट कैडेवर डोनेशन से हो पाया था। इस बार कैडेवर डोनेशन से अब तक चार ट्रांसप्लांट हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि ग्रीन कॉरिडोर में पुलिस की मदद भी काफी सराहनीय है। पुलिस के हेल्प के बिना यह संभव नहीं है।

महात्मा गांधी विवि को फीस निर्धारण की अनुमति

नेशनल दुनिया

सुप्रीम कोर्ट

- संस्थान की ओर से फीस वृद्धि को सही माना
- याचिकाओं के अंतिम नतीजों पर आधारित होगा आदेश विशेष

जयपुर। सर्वोच्च न्यायालय ने एक निर्देश प्रार्थना याचिका पर सुनवाई करते हुए महात्मा गांधी यूनिसर्विटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टैक्नोलोजी, जयपुर को एमबीबीएस एवं पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्सेज के लिए अगले तीन शैक्षणिक सत्रों 2015-16, 2016-17, 2017-18 की फीस निर्धारित करने की अनुमति दी है। इस सम्बन्ध में 16 फरवरी को जस्टिस एम.वाई इकबाल तथा जस्टिस कुरियन जोसेफ की खण्डपीठ ने सुनवाई कर संस्थान द्वारा बढ़ाई गई फीस को उचित माना तथा फीस निर्धारित करने के आदेश दिये हैं।

खण्डपीठ ने महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टैक्नोलोजी एक्ट 2011 की धारा 33 के तहत विशेष आज्ञा याचिका के सम्बन्ध में यह आदेश दिए हैं। आदेश विशेष आज्ञा याचिकाओं के अंतिम नतीजों पर आधारित होगा, जो जुलाई 2015 में सूचीबद्ध होंगी। यह आदेश प्रतिवादी सचिन मेहता एवं अन्य द्वारा दायर मामले में किए गए। याचिकाकर्ता की ओर से एडवोकेट दुष्यन्त ए दवे आदि तथा प्रतिवादी की ओर से एडवोकेट अजय चौधरी ने जिरह की।

जिंदगी की राह दिखा गया बच्चा

जयपुर, 12 फरवरी। केडेवर ट्रांसप्लांट की राह आसान होती नजर रही है। महात्मा गांधी अस्पताल में अलवर 6 साल के ब्रेन डेथ बच्चे का लिवर किडनी दो लोगों की जिंदगी बचा गया। दिखा गया- मौत के बाद जिंदगी की राह। बच्चे के परिजनों की सहमति के बाद 6 फरवरी को गुर्दे की गंभीर बीमारी से पीड़ित जयपुर निवासी 50 वर्षीय एक व्यक्ति को दोनों किडनी लगाई हैं। अस्पताल के डॉ.टी.सी.सदासुखी ने बताया कि ब्रेन डेथ कमेटी, राज्य सरकार के प्रतिनिधि एवं विशेषज्ञों की सलाह के बाद ही ऑपरेशन किया गया। छोटा बच्चा होने के कारण दोनों किडनी (एन ब्लॉक) निकालकर लगाया। इस तरह का देश में यह 23 वां मामला है। अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि पहले 3 लिवर 3 किडनी केडेवर ट्रांसप्लांट निशुल्क होंगे। डोनर के भाई-बहिन, माता-पिता, दादा-दादी का आजीवन निशुल्क मेडिकल सर्जिकल इलाज किया जाएगा।

ये थे टीम में : यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ.डी.पी.पूनिया, प्रो.वाइस चांसलर डॉ. सुधीर सचदेवा, नेफ्रोलोजिस्ट डॉ. एस. गोदारा, डॉ. एच. एल. गुप्ता, डॉ.मनीष गुप्ता, डॉ.पंकज गुप्ता, डॉ.गोविन्द शर्मा, डॉ.दुर्गा जेठवा, डॉ.विपिन गोयल, मोहन फाउंडेशन के पदाधिकारी, पुलिस अधिकारी हैदर अली ए.के.शर्मा।

महात्मा गांधी अस्पताल में न्यूनतम दरों पर चिकित्सा 28 फरवरी तक

जयपुर. सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में न्यूनतम दरों पर उपचार सेवाएं प्रदान करने का अभियान चलाया जा रहा है जो 28 फरवरी तक चलेगा। यहां मोतियाबिंद के ऑपरेशन लैंस सहित निशुल्क किए जा रहे हैं।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL Media – DNA (Daily News Analysis) Pg. 4 Dt. 27.2.2015

Rare neuro surgery performed by surgeons of pvt hospital

dna correspondent @jaipurdna

Doctors at the Mahatma Gandhi Hospital have performed a rare neuro-surgery removing a Pituitary tumour in an elderly woman named Savitri, a resident of Bhusawar, Bharatpur.

The patient had gradual onset of vision impairment in both eyes for the last four months. She also suffered with severe headache. She consulted local doctors and took treatment.

However, the lady yet again showed the doctor after around 15 days when she lost her complete vision in left eye and partially in the right eye. She visited several doctors but in the meantime a large pituitary tumour got developed in her brain which was crossing over the bilateral optic nerves.

Finally, she consulted Dr Pankaj Gupta, HoD Neuro and Spine Surgery Department, Mahatma Gandhi Hospital.

According to Dr. Pankaj Gupta, the patient needed urgent surgery.

This craniotomy surgery and retracting the normal brain is highly dangerous and complex. The doctors took chance and operated the patients on the next day through nasal route with Endoscope and Neuro Navigation machines.

The doctors were able to successfully remove the tumour completely which was confirmed by post operative MRI scans.

According to Dr. Gupta, as soon as patient recovered from anaesthesia her vision was absolutely normal. Team of Dr. Durga Jethwa, Dr. Nath and Dr. Jitendra Verma operated upon the patient.

After the operation, the patient has said that she is doing fine and can easily see. "I can see easily see now. Earlier I used to have severe headache and also got blind. But after the operation, things are much better," said Savitri.

DECODING THE TUMOUR

A pituitary tumour is an abnormal growth in the pituitary gland. This is the part of the brain that regulates the body's balance of many hormones. As a pituitary tumour grows, the normal hormone-releasing cells of the pituitary may be damaged. This results in the pituitary gland not producing enough of its hormones. This condition is called hypopituitarism which is why the operation was needed to be done soon.

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

अंगदाताओं के नाम पर किया वार्डों का नाम

महात्मा गांधी अस्पताल ने कई वार्ड यूनिटों के नाम बदले

डेली न्यूज़

जयपुर ▷ 13 अगस्त

महात्मा गांधी अस्पताल की ओर से शनिवार को विश्व अंगदान दिवस पर कैडेवर अंगदाताओं के परिजनों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर कैडेवर किडनी डोनर मास्टर मोहित के नाम पर 'मोहित मैमोरियल किडनी वार्ड' नामकरण किया। राजू लुहार के कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ था, के नाम पर 'राजू मैमोरियल हार्ट यूनिट' वार्ड बनाया गया। महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने बताया कि मनपाल के कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला लिवर ट्रांसप्लांट हुआ था। उनके नाम पर मनपाल मैमोरियल लिवर प्रत्यारोपण इकाई नामकरण किया गया है।

महात्मा गांधी अस्पताल की ओर से अंगदाताओं के परिजनों का किया सम्मान

अंगदान दिवस पर अंगदाताओं के नाम वार्डों का नामकरण

हर बड़े अस्पताल में ब्रेन डेथ डिक्लेरेशन कमेटी की जरूरत

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल की ओर से शनिवार को विश्व अंगदान दिवस पर कैडेवर अंगदाताओं के परिजनों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पहले कैडेवर किडनी डोनर मास्टर मोहित के नाम पर मोहित मैमोरियल किडनी वार्ड नामकरण किया है। साथ ही राजू लुहार जिनके कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ था, उसके नाम पर राजू मैमोरियल हार्ट यूनिट वार्ड बनाया है। मनपाल के कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला लिवर ट्रांसप्लांट हो सका था। उसके नाम पर मनपाल मैमोरियल लिवर प्रत्यारोपण इकाई का नामकरण किया है। इस अवसर महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार, चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एमए चिश्ती, डॉ. टी. सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा सहित अन्य चिकित्सक और अंगदाताओं के परिजन मौजूद थे।

अब तक 12 कैडेवर डोनेशन

स्वर्णकार ने बताया कि अब तक 12 कैडेवर डोनेशन के जरिए 44 जरूरतमंदों को अंग प्रत्यारोपित किए जा चुके हैं। अकेले महात्मा गांधी अस्पताल में अब तक हुए सात कैडेवर डोनेशन के जरिए 14 जरूरतमंद रोगियों को अंग लगाए जा चुके हैं और सवाई मानसिंह अस्पताल में छह अंग प्रत्यारोपित किए गए। डॉ. स्वर्णकार ने कहा कि शीघ्र ही गर्भाशय और फेफड़े का प्रत्यारोपण भी संभव हो सकेगा।

बनाई जानी चाहिए कमेटी

राज्य को लिवर प्रत्यारोपण का श्रेय देने वाली टीम के वरिष्ठ सदस्य डॉ. श्याम सुंदर मेहबूसरिया ने बताया कि देश में हर साल तीन लाख लोगों की मौत सड़क दुर्घटनाओं में होती है जिनके अंगों से दूसरो को जीवनदान मिल सकता है। हर बड़े अस्पताल में 'ब्रेन डैथ डिक्लेरेशन कमेटी' बनाई जानी चाहिए। उनकी देखरेख में ब्रेन डैड रोगियों के परिजनों को अंगदान के प्रति प्रेरित कर जरूरतमंद रोगियों की जान बचाई जा सकती है।

Organ donation & after: For donor's kin, woes continue

Intishab.Ali @timesgroup.com

Jaipur: Three years ago, when a girl was born to Manpal, he named her Khushi (happiness). Unfortunately, Manpal met with an accident in November last year and was declared brain dead.

But he became a source of happiness for three other families after his two kidneys and a liver were donated to patients, saving their lives.

After he died, his family is now living in penury, pointing to larger problem of lack of support for donors that may impede voluntary donation of organs.

At a recent meet organized by Mahatma Gandhi Hospital, where Manpal's organs were harvested, this fact was highlighted by his brother Madan Singh, who was present with Manpal's wife, two-year-old son and three-year-old daughter.

While the hospital named a ward after Manpal (his liver was used in the state's first cadaver liver transplant), nothing much could be done for his family as the Human Organ Transplant Act (HOTA) prevents the hospital as well as recipients of the transplant to help the donor's family financially.

"If we provide any financial relief to the organ donor's family, it will become a violation of HOTA," said Dr M L Swarnkar, chairman of Mahatma Gandhi Hospital.

Manpal's family members during an event on Organ Donation Day on Saturday

He said that NGOs or social activists could help such families and provide them relief.

Manpal was a driver by profession. "He had never had an accident while driving. But, unfortunately he was hit by a vehicle while he was walking on a road in Narnol in Haryana," Madan Singh said.

ORGAN DONATION DAY
13TH AUGUST
THE TIMES OF INDIA

A resident of Mulodi village in Narnol, Manpal was rushed to Jaipur where the doctors declared him brain dead. The hospital counselled the family and encouraged them to donate organs.

"Manpal's wife receives widow pension. They have a small piece of agricultural land. Those are the only sources of income," Manpal's brother-in-law Ram Chandra said. But the family is worried about the education and health of his two children.

"Every year, there is a requirement of 1.5 lakh kidneys, , but only 5,000 transplants are happening," said Dr Suraj Godara, consultant nephrologist in a private hospital.

Dr Manish Sharma, nodal officer for organ transplant, advocated adopting the method of donation after circulatory deaths (DCD), one which takes place after the withdrawal of treatment and circulatory arrest and can expand the potential pool of organs.

BSF holds events to mark Organ Donation Day

A function to mark the World Organ Donation Day was held at BSF Jaisalmer sector headquarters South campus in Dabla, Jaisalmer, on Saturday. The function was held under the aegis of B R Meghwal, IPS, IG, BSF, Rajasthan frontier.

In the joint programme of Sector South, Jaisalmer and 18 BN BSF, three officers, 35 subordinate officers and 115 other rank jawans took the oath to donate organs.

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : TIMES OF INDIA, PAGE NO: 4 DATE 09.08.2015

State now aims for liver transplant

'Op Could Be Done In Govt or Pvt Hospital'

TIMES NEWS NETWORK

Health minister Rajendra Rathore claimed that the state has become sixth in the country to conduct heart transplant. Now cadaver liver transplant will be conducted soon in the state as preparations for the same are afoot

Jaipur: Health minister Rajendra Rathore on Saturday said Rajasthan has become the sixth state in the country which has conducted a cadaver heart transplant. He claimed that a cadaver liver transplant will be conducted soon in the state as preparations for the same are afoot.

He also met the state's first recipient of heart at Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) on Saturday. He said that doctors have performed the heart transplant successfully. "It's a great success in the field of healthcare in Rajasthan," he said.

Rathore said there are no words to express the success the state has achieved by conducting a heart transplant. "I have seen life in his (heart recipient) eyes," he said.

Before the transplant surgery on Sunday last week, the 32-year-old patient was unwell. His heart was functioning just 10% of the capacity. But now, the doctors claimed that he could walk, talk and eat properly after the heart transplant.

Rathore said that first, a cadaver kidney transplant was done in the state in February and now the doctors have successful conducted a cadaver heart transplant. A cadaver liver will also be transplanted in the state. It could be done in government or in a private hospital.

Rathore wished the patient a long and healthy life.

Rathore said the government is making efforts to give an impetus to organ transplants in the state. A team of cardiac surgeons under Dr MA Chisti, a heart surgeon at MGMCH, had performed the first heart transplant of the state.

According to the hospital, the patient has now started walking and he is not facing any breathing problem while walking. He is recovering and the doctors are ensuring that he doesn't develop any infection. The doctors claimed that the patient needs an expert's care and a number of medicines. The hospital is providing everything that the patient needs.

The health minister is working on making free medicines available to cadaveric organ transplant patients.

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : RASTRADOOT, PAGE NO: 3 DATE 09.08.2015

राठौड़ ने सूरजभान की कुशलक्षेम पूछी

जयपुर, (कासं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने शनिवार को शहर के सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में पहुंच कर राज्य के पहले कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लान्ट से उपचारित रोगी सूरजभान से मुलाकात कर उसकी कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने सूरजभान को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की शुभकामना दी। उन्होंने अस्पताल को तथा हार्ट ट्रांसप्लाण्ट करने वाली टीम से भी मुलाकात कर बधाई दी।

राठौड़ ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल ने प्रदेश में कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लाण्ट के सपने को पूरा किया है। देश में कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लाण्ट करने वाला महात्मा गांधी अस्पताल इस सूची में छठे स्थान पर पहुंच गया है। उन्होंने भरोसा जताया कि राज्य में अब कैडेवरिक लिवर ट्रांसप्लाण्ट भी शीघ्र हो जायेगा। उन्होंने कैडेवरिक किडनी ट्रांसप्लाण्ट की दिशा में सवाई मानसिंह अस्पताल द्वारा किये जा रहे प्रयासों की भी सराहना की। अस्पताल पहुंचने पर चेयरमैन प्रोफेसर डॉ. एम.एल. स्वर्णकार, मैनेजिंग ट्रस्टी आर.आर. सोनी, वाइस चांसलर डॉ. डी.पी. पूनिया, प्रो. प्रेसीडेन्ट डॉ. सुधीर सचदेवा तथा प्राचार्य डॉ. जी.एन. सक्सैना सहित अन्य स्टाफ ने पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। राठौड़ ने अस्पताल के कार्डियक थौरेसिक सर्जन तथा इस पहले कैडेबर ट्रांसप्लान्ट के सूत्रधार डॉ. एम.ए. चिश्ती तथा उनकी समस्त टीम से मुलाकात कर राज्य सरकार की ओर से बधाई दी।

- **ट्रांसप्लांट के सूत्रधार डॉ. एम.ए.चिश्ती व उनकी टीम से भी की मुलाकात**

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में राज्य के पहले कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लांट प्राप्तकर्ता सूरजभान से शनिवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने मुलाकात कर कुशलक्षेम पूछी। फोटो-राष्ट्रदूत

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DNA

PAGE NO: 1 DATE 3.08.2015

In death, 18-yr-old ignites hope of life for four others

- *Maiden successful attempt at a heart transplant made in Jaipur*
- *Donor's kidney already saves life, liver taken to Delhi via green corridor*

Vishal Srivastav @vishalforu

Jaipur: For Rajasthan, it was a historical day in the field of medical science as maiden successful attempt for a heart transplant was made at Jaipur's Mahatma Gandhi (MG) Hospital on Sunday.

Raju Luhar

Call it destiny or eventuality but accidental death of an 18-year-old boy has given a new ray of hope for lives of at least four people including a 32-year-old recipient of his heart, who was going under the knife while this report was published.

Jaipur's Sanganer resident Raju Luhar, met with a fateful accident late on Saturday night. He was rushed to Mahatma Gandhi Hospital where doctors declared him brain dead during treatment. Subsequently, his family was pursued for his organ donation to which they generously nodded.

After this, Raju's both kidneys, liver and the heart were surgically extracted. One of the kidneys was transplanted in one Basanti Devi, a 45-year-old resident of city's Vaishali Nagar area, while his second kidney was sent to Sawai Man Singh Hospital where it has been preserved and would be fitted to a needy patient soon.

With this, Luhar's liver was sent to Delhi's ILBS Hospital through a specially formed 'Green Corridor'.

A 32-year-old man named Surajbhan who had been suffering from multiple heart related disorders, was brought to MG Hospital from Hanumangarh district. He was in a serious condition as only 10 per cent of his heart was functioning.

Turn to p4

A green corridor was formed to transport deceased Raju Luhar's liver to New Delhi from Jaipur on Sunday —Padam Saini.dna

FOUR ORGANS

HEART: Raju Luhar's heart has been transplanted to 32-year-old Surajbhan who's heart was critically ailing.

KIDNEYS: His both kidneys will give life to two patients of which one has already been transplanted into a 45-year-old lady from Jaipur. Other has been sent to SMS.

LIVER: It has been sent to ILBS Hospital, Delhi where it would give new life to an ailing man whose liver is damaged.

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI , PAGE NO: 2 DATE 13.08.2015

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल का जागरुकता कार्यक्रम

हार्ट के बाद अब जल्द होगा लीवर ट्रांसप्लांट

राजू के परिजनों को मिलेगा जीवनभर मुफ्त इलाज, पढ़ाई में भी मदद

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल में किडनी एवं हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद अब जल्द ही लीवर प्रत्यारोपण भी किया जाएगा। इसके लिए लीवर प्रत्यारोपण से पूर्व संसाधनों एवं अन्य सुविधाओं का विदेश एवं अन्य संस्थानों में चिकित्सकों की टीम भेजकर अध्ययन कराया जा रहा है। विश्व अंगदान दिवस से एक दिन पूर्व अस्पताल की ओर से आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने यह जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र में महात्मा गांधी अस्पताल हृदय प्रत्यारोपण करने वाला पहला अस्पताल बन गया है और राजस्थान देश का छठा राज्य बन गया है।

इस कार्यक्रम में अंगदान करने वाले और अंग प्रत्यारोपण कराने वालों के परिजन भी मौजूद थे। अंगदान करने वाले राजू के माता-पिता का इस अवसर पर सम्मान भी किया गया। अस्पताल में अब तक 130 से अधिक किडनी प्रत्यारोपण की जा चुकी है जिनमें तीन कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण की गई है। शेष परिजनों एवं अन्य द्वारा दान दी हुई किडनी प्रत्यारोपण की गई है।

कडनी देने वालों में सर्वाधिक 98 महिलाएं तथा 32 पुरुष शामिल है। कार्यक्रम में डॉ. टी. सदासुखी, डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. सूरज गोदारा आदि भी मौजूद थे।

सरकार से मिली आर्थिक मदद

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू के अंगदान के लिए परिजनों को चिकित्सा मंत्री की ओर से 51 हजार रुपए की आर्थिक मदद दी गई है और दो पट्टे भी अलॉट किए गए हैं। वहीं अस्पताल की ओर से राजू के परिजनों का मुफ्त इलाज करने और उसके भाई बहनों की पढ़ाई के लिए हर मदद की जाएगी।

प्रथम तीन ट्रांसप्लांट होंगे निःशुल्क

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल में प्रथम तीन हार्ट एवं किडनी का प्रत्यारोपण निशुल्क किया जाएगा और इसके बाद अंग प्रत्यारोपण पर ली जाने वाली राशि अन्य संस्थानों की तुलना में कम से कम ली जाएगी। डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू का दिल यहां अस्पताल में सूरजभान को लगाया गया जो अब स्वस्थ है। उन्होंने बताया कि अभी तक एमजीएच अस्पताल को किडनी, दिल, लीवर और टिश्यू प्रत्यारोपण की अनुमति मिली है और यहां लीवर का प्रत्यारोपण भी शीघ्र किया जाएगा। इसके अलावा अस्पताल की ओर से 10-12 अन्य अंगों के प्रत्यारोपण की भी अनुमति मांगी गई है जो शीघ्र मिलने की संभावना है।

एसएमएस में ट्रांसप्लांट की कछुआ चाल

मरीजों पर आर्थिक बोझ

सवाईमानसिंह अस्पताल में ऑर्गन ट्रांसप्लांट की कछुआ चाल रफ्तार निजी अस्पतालों में ट्रांसप्लांट कराने वाले मरीजों को आर्थिक दंश दे रही है। पैसों की कमी के बावजूद महंगे इलाज को मजबूर मरीजों को ट्रांसप्लांट के बाद भी महंगी दवाईयां अपना पेट काट लेनी पड़ रही है। महात्मां गांधी मेडिकल कॉलेज में कैडेबर और अपने रिश्तेदारों से किडनी ट्रांसप्लांट कराने के बाद मरीजों को नई जिंदगी तो मिल गई है लेकिन पैसों की तंगी ने उनकी इस राहत को फिलहाल आहत ही कर रखा है। ऐसे ही कुछ मरीजों से बातचीत की तो उनका यह दर्द सामने आया।

केस न. 1

अपने पति को किडनी दान करने वाली जयपुर के सोडाला निवासी सुनीता शर्मा ने बताया कि पति की किडनी खराब होने पर एसएमएस अस्पताल में इलाज के लिए गए। लेकिन यहां ट्रांसप्लांट को लेकर सिर्फ धक्के ही मिले। इस पर करीब आठ माह पहले महात्मां गांधी अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचे तो यहां किडनी ट्रांसप्लांट की आवश्यकता बताई। इस पर मैंने अपने पति को किडनी दान करने फैसला किया। जैसे तैसे पैसे का जुगाड़ कर करीब पांच लाख रुपए में किडनी ट्रांसप्लांट के बाद अब दवाईयों आदि पर काफी खर्च होता है। अगर सरकार की ओर से निजी अस्पतालों में ट्रांसप्लांट कराने वाले गरीब मरीजों को भी आर्थिक सहायता मिले तो काफी मदद मिल सकती है।

केस न. 2

अलवर के गोविन्दगढ़ निवासी सन्यासी स्वामी प्रीतम सिंह ने बताया कि उनकी पत्नी मंजीत कौर ने उन्हें अपनी किडनी दान की है। 23 अप्रैल को यहां किडनी प्रत्यारोपित की गई। हालांकि किडनी ट्रांसप्लांट तो यहां सफलतापूर्वक हो गया लेकिन अब ताउम्र चलने वाली दवाईयों और अन्य जरूरतों पर काफी पैसा खर्च होता है। अगर दवाइयां समय पर नहीं ली तो इंफेक्शन का खतरा बना रहता है। इसलिए सरकार से बीपीएल मरीजों की तरह आर्थिक रूप से पिछड़े मरीजों के लिए भी मदद की दरकार है।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : SAMACHAR JAGAT , PAGE NO. 12 DATE 28.11.2015

लीवर ट्रांसप्लांट की तैयारी

लीवर, हार्ट व दो किडनियां होगी ट्रांसप्लांट

24 वर्षीय युवक की हुई ब्रेन डेथ, परिजनों ने अंग दान करने में दी सहमति, 4 को मिलेगा अभयदान

जयपुर (कासं)। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल अब सफल हार्ट ट्रांसप्लान्ट करने के बाद लीवर ट्रान्सप्लान्ट की तैयारियों में जुट गया है।

शुक्रवार को हरियाणा निवासी एक युवक की ब्रेनडेथ होने के बाद उसके परिजनों ने अपने बेटे की दोनों किडनियां, हार्ट व लीवर चारों अंग दान करने की सहमति दे दी है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक महात्मा गांधी अस्पताल ने एक किडनी, लीवर व हार्ट ट्रान्सप्लान्ट करने की लगभग पूरी तैयारियां कर ली है। एक किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल में ट्रान्सप्लांट होगी। इस तरह हरियाणा के नारनौल निवासी युवक मनपाल चारों लोगों की जिन्दगी में उजाला करेगा। मनपाल 24 नवम्बर को एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। उसे महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी ब्रेनडेथ हो गई। बताया जा रहा है कि मनपाल के लीवर की मेचिंग करने के लिए सैम्पल गुड़गांव भेजा गया है। उसकी रिपोर्ट आने के साथ ही अस्पताल में लीवर ट्रान्सप्लान्ट शुरू होगा, जो राज्य का पहला लीवर ट्रान्सप्लान्ट होगा। गौरतलब है कि महात्मा गांधी अस्पताल में राज्य का पहला हार्ट ट्रान्सप्लान्ट किया गया था, जो पूरी तरह सफल रहा। लीवर ट्रान्सप्लान्ट में अंगदाता और अंग लेने वाले मरीज की जांचें कराई गई हैं। रिपोर्ट आने के तुरन्त बाद ट्रान्सप्लान्ट को शुरू किया जाएगा।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : PUNJAB KESARI , PAGE NO. 1 DATE 28.11.2015

ब्रेन डेथ मनपाल की किडनी लीवर और हार्ट दान

पहल

- महात्मा गांधी अस्पताल में देर रात तक चली ट्रांसप्लांट की तैयारी

- हार्ट के बाद पहली बार लीवर का प्रत्यारोपण होगा

जयपुर,(कासं): प्रदेश में अब हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद लीवर ट्रांसप्लांट शुरू करने की तैयारी हो गई है। शुक्रवार को शहर के महात्मा गांधी अस्पताल में एक युवक के परिजनों ने ब्रेन डेथ होने के बाद अपने बेटे की दोनों किडनी, लीवर और हार्ट सहित चार अंगों का दान कर दिया।

जानकारी के मुताबिक अस्पताल में लीवर ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। जांच के बाद तय किया गया कि लीवर हिण्डौन के सोनू जैन (26) के लगाया जाएगा। इसके लिए देर रात तक तैयारी चलती रही। बताया जा रहा है कि यदि यह लीवर ट्रांसप्लांट सफल होता है तो प्रदेश का पहला लीवर ट्रांसप्लांट होगा। अंग दान के बाद एक किडनी एसएमएस अस्पताल में भेजी गई जबकि एक किडनी, लीवर और हार्ट महात्मा गांधी में ही ट्रांसप्लांट होंगे। हरियाणा नारनौल के रहने वाले 24 वर्षीय मनपाल सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था, उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उसकी ब्रेन डेथ होने के बाद परिजनों ने उसके अंगों का दान कर दिया।

MAHATMA GANDHI HOSPITAL NEWS
PUBLICATION RAJASTHAN PATRIKA , PAGE – 3, DATE 07.12.2015

12 घंटे चला ऑपरेशन | 8 दिन के अंदर प्रदेश में दूसरा लिवर ट्रांसप्लांट सफल, युवक लिवर सिरोसिस से था पीड़ित

55 वर्षीय गार्ड ने 23 साल के युवा को दी नई जिंदगी

शनिवार रात 10 बजे प्रक्रिया, 2 बजे लिवर प्रत्यारोपण शुरू, दोपहर 2 बजे सफलता

28 नवंबर को कैडेवर दान के बाद महात्मा गांधी अस्पताल में प्रत्यारोपण

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में पहले सफल लिवर प्रत्यारोपण के ठीक आठ दिन बाद रविवार को एक और लिवर प्रत्यारोपण कर दिया गया। शनिवार रात करीब 10 बजे प्रक्रिया शुरू हुई। देर रात करीब 2 बजे लिवर प्रत्यारोपण शुरू किया गया जो रविवार दोपहर 2 बजे तक चला। लगातार 12 घंटे तक चले ऑपरेशन में 55 वर्षीय कैडेवर दानदाता के लिवर को एक 23 वर्षीय मरीज में सफल प्रत्यारोपित किया है। इसके साथ ही राज्य में लिवर प्रत्यारोपण के क्षेत्र में एक और बड़ी सफलता जुड़ गई।

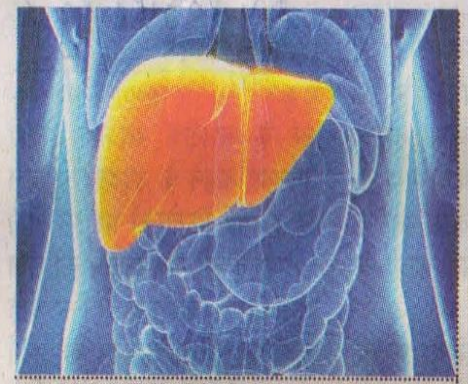

ऑपरेशन टीम के सर्जन

अस्पताल के चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ क्रिस्टोफेर बेरी के साथ ही डॉ. दुर्गा जेठवा, डॉ. सुरेश भार्गव इस प्रत्यारोपण में शामिल रहे।

नहीं था और कोई विकल्प

लिवर सिरोसिस से पीड़ित इस युवक के लिए लिवर प्रत्यारोपण के अलावा जान बचाने का और कोई विकल्प नहीं था। प्रत्यारोपण टीम को उम्मीद है कि यह प्रत्यारोपण सफल रहा है। प्रत्यारोपण निशुल्क किया गया।

...और लिवर देने को तैयार हो गए परिजन

अस्पताल के चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि ओमप्रकाश को ब्रेन हेमरेज होने पर 3 दिसम्बर को अस्पताल में भर्ती किया गया था। यहां उसे शनिवार को ब्रेनडेड घोषित किया गया। इसके बाद परिजनो को कैडेवर दान के बारे में जानकारी देने पर वे इस पुण्य के लिए तैयार हो गए। उन्होंने इस सफलता को लिवर प्रत्यारोपण के क्षेत्र में राज्य की अहम उपलब्धि बताया है।

एक किडनी भी प्रत्यारोपित

अस्पताल में श्योपुर निवासी 41 वर्षीय मंजू जांगिड़ को कैडेवर दानादता की एक किडनी लगाई गई। मधुमेह से ग्रसित यह मरीज पिछले 5 साल से डायलेसिस के सहारे जीवत थी। सुबह 4 बजे से 7 के बीच में अस्पताल के चीफ किडनी सर्जन डॉ. टी. सी. सदासुखी की टीम ने ये किडनी प्रत्यारोपण किया। वहीं दूसरी किडनी को कैडेवर दान के नियमों के तहत सवाई मानसिंह अस्पताल में भेजा गया। जहां एक और जरूरतमंद मरीज को किडनी लगाई गई।

... और काम नहीं आया दिल

कैडेवर दानदाता की दोनो किडनियां और लिवर का उपयोग हो गया, लेकिन हृदय काम नहीं आ पाया। दरअसल नियमानुसार एक 23 वर्षीय मरीज में हृदय प्रत्यारोपण करना तय किया गया। इस बीच डॉक्टरों की गहन जांच में पाया गया कि दानदाता मरीज के हृदय में एक गंभीर किस्म की बीमारी थी। दानदाता और दानग्राही की आयु में 22 साल का अंतर होने, दानदाता के हृदय में रोग होने और दोनो के वजन में काफी अंतर होने के कारण हृदय प्रत्यारोपण नहीं हो पाया।

Heart Transplant

राज्य में पहली बार महात्मा गांधी हॉस्पिटल में होंगे लीवर व हार्ट ट्रांसप्लांट

तैयार हो रही सबसे बड़ी 14 मंजिल की बिल्डिंग और अत्याधुनिक कैंसर सेंटर

आईवीएफ में शुरू होगी प्री इम्प्लांटेशन जेनेरिक डायग्नोसिस की बड़ी सुविधा

महात्मा गांधी हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार विशेष बातचीत

मंडे गेस्ट

नेशनल दुनिया

जयपुर। देश के जाने-माने परखनली शिशु रोग विशेषज्ञ और महात्मा गांधी हॉस्पिटल व मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार सादगी और ईमानदारी से भरे व्यक्तित्व के धनी हैं। करौली जिले के छोटे से कस्बे मासलपुर में जन्मे और सरकारी स्कूल से पढ़ाई करके निकले स्वर्णकार देश-विदेश में आईवीएफ व मेडिकल क्षेत्र में कई गोल्ड मेडल तथा प्रतिष्ठित सम्मान पा चुके हैं। उत्तरी भारत में पहला परखनली शिशु पैदा करने का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। डॉ. स्वर्णकार आज सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल के जरिए मरीजों को सस्ती व गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने को अपना ध्येय बना कर काम कर रहे हैं। इस बार 'मंडे गेस्ट' के रूप में डॉ. स्वर्णकार से हुई उनकी भावी योजनाओं और कार्यक्रमों पर विशेष बातचीत।

महात्मा गांधी अस्पताल आने वाले समय में मरीजों के लिए क्या सुविधा लाने वाला है ?

हम किडनी ट्रांसप्लांट मे सबसे आगे है। हर महीने करीब 15 ट्रांसप्लांट हो रहे है और अब इसे 20 केस तक करने की तैयारी है। केडेवर ट्रांसप्लांट भी हमने सक्सेसफुल किए है। इसमे सरकार का पूरा सहयोग मिला है। जल्द ही हम लीवर, हार्ट, टिश्यू ट्रांसप्लांट की सुविधा शुरू कर रहे है, जो राजस्थान मे पहली बार होगी। साथ ही पेनक्रियाज, बोनमेरो आदि के लिए अप्लाई कर रखा है। मरीजो की सुरक्षा और अत्याधुनिक तकनीक से इलाज ही हमारी प्राथमिकता है। इसीलिए हमने ट्रांसप्लांट टीम को देश के प्रमुख शहरो व विदेशो मे ट्रेनिंग करवाई है। देश के एक्सपर्ट ट्रांसप्लांट सर्जन हमने रखे है।

मरीजों को उपचार में क्या राहत देने की योजना है ?

हा, हमने तय किया है कि केडेवर में पहले तीन किडनी, लीवर और हार्ट ट्रांसप्लांट अस्पताल मे मुफ्त किए जाएगे। हमारे यहा सबसे सस्ता 12 से 15 लाख रुपये मे लीवर ट्रांसप्लांट किया जाएगा। वही हार्ट ट्रांसप्लांट मात्र 10 लाख मे करने की योजना है। दूसरे बडे शहरो मे इसका खर्चा कई गुना ज्यादा होता है। इसके अलावा महात्मा गांधी अस्पताल मे भर्ती मरीजो को भी कई राहत पैकेज दिए जा रहे है।

प्रदेश में अत्याधुनिक कैंसर सेंटर की कमी है, आप क्या सोचते हैं ?

सही कहा। कैंसर सबसे बडी समस्या है। इसीलिए हम महात्मा गांधी अस्पताल मे अत्याधुनिक वर्ल्ड क्लास सुविधा वाला कैंसर सेंटर ला रहे है, जो सभवत: इसी अक्टूबर तक शुरू हो जाएगा। इसके लिए मशीने आ गई है, रेडियो थैरेपी आदि तमाम सुविधा मिलेगी। अस्पताल मे अभी आधुनिक तकनीक व सुविधाओ से लैस हार्ट सेंटर चल रहा है। अनेक जटिल हार्ट सर्जरी हमारे यहा हुई है।

अस्पताल में रोगियों की संख्या को देखते विस्तार की कोई योजना ?

हमारे यहा अब जयपुर ही नही टोक, सवाई माधोपुर, कोटा, करौली, दौसा, भरतपुर, धौलपुर आदि कई जिलो के रोगी बडी सख्या मे आ रहे है। मरीजो की भीड़ को देखते ही हम प्रदेश की सबसे बडी 14 मंजिल की हॉस्पिटल बिल्डिंग बना रहे है। इसके अलावा न्यूरो सर्जरी, ट्रोमा सेंटर व कई सुपर स्पेशियलिटी सेवाओ का विस्तार भी किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि मरीज को किसी भी तरह के इलाज के लिए कही बाहर नही जाना पडे, सभी सुविधा यही मिल जाए।

आईवीएफ के नाम पर आजकल अनेक सेंटर खुल गए हैं। आप कैसा देखते हैं ?

आज प्रदेश मे जगह-जगह आईवीएफ सेंटर खुल गए है। अच्छी बात है, सुविधा बढनी चाहिए, मगर इसके नाम पर मरीजो को ठगने का धधा नही होना चाहिए। मै हमेशा गुणवत्तापूर्ण इलाज का पक्षधर हू। यह जटिल तकनीक है और सक्सेस रेट बहुत ज्यादा नही है। इसमे विशेषज्ञ चिकित्सक जरूरी है। इसलिए मरीज भी सारी जानकारी करके ही इलाज कराए। मै सेरोगेट आदि के पक्ष मे कभी नही रहा। मेरी प्राथमिकता विश्व स्तरीय आईवीएफ सेवा देना है। इसीलिए हमारे बनीपार्क स्थित जयपुर फर्टिलिटी सेंटर मे लैब को अत्याधुनिक तकनीक व उपकरणो से लैस किया गया है।

फर्टिलिटी क्षेत्र में आपका सेंटर क्या नई सुविधा देने वाला है ?

आईवीएफ क्षेत्र मे जयपुर फर्टिलिटी सेंटर जल्द ही प्री इम्प्लांटेशन जेनेटिक डायग्नोसिस सुविधा शुरू करेगा। अमेरिकन टीम के तालमेल से यह देश का पहला सेंटर होगा, जिसमे कैंसर, डायबिटीज व अन्य गभीर जेनेटिक बीमारियो के साथ ट्यूमर कितना कहा बढ रहा है आदि की परफेक्ट डायग्नोसिस व निदान हो सकेगा। इसके लिए देश ही नही विदेशो से भी सैंपल लेगे। साथ ही अत्याधुनिक नेक्स्ट जीन सिक्वेन्स सुविधा भी शुरू करेगे।

केडेवर ट्रांसप्लांट को किस रूप में देखते हैं ?

यह किसी को नया जीवन देने जैसा है। हर रोज सैकडो दुर्घटनाए होती है और अनेक मरीज ब्रेन डेड हो जाते है। ऐसे लोगो के परिजनो को सही तरीके से काउसलिंग करके समझाया जाए तो सबसे बडा पुण्य काम हो सकता है। ब्रेन डेड मरीज के किडनी, लीवर, हार्ट आदि सभी ऑर्गन जिदगी-मौत से जूझ रहे मरीजो के ट्रांसप्लांट करने से अनेक जान बचाई जा सकती है। केडेवर ट्रांसप्लांट को लेकर सरकार भी गभीर है। हमारा प्रयास भी है कि ऐसे मरीज के ऑर्गन्स से गभीर मरीजो को जीवनदान दिया जा सके।

FIRST HEART TRANSPLANT IN THE STATE OF RAJASTHAN

बड़ी कामयाबी | प्रदेश में पहली बार एक ब्रेन डैड डोनर से चार लोगों को मिली नई जिंदगी

पहली बार प्रदेश में हार्ट का सफल ट्रांसप्लांट

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

प्रदेश ने रविवार को मेडिकल साइंस में इतिहास रचा। राज्य का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट जयपुर में हुआ। 18 साल के युवक राजू का दिल 32 वर्षीय सूरजभान को लगाया गया। वाटिका (जयपुर) के पास बढवाली ढाणी निवासी राजू की दोनों किडनियां दो मरीजों को लगाई गई हैं। लिवर ट्रांसप्लांट के लिए दिल्ली भेजा गया है। राजू 31 जुलाई को सड़क हादसे में घायल हुआ था। महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया। शनिवार रात उसे ब्रेन डैड घोषित किया गया। हार्ट ट्रांसप्लांट इसी अस्पताल में हुआ। एनएचएम के अतिरिक्त मिशन निदेशक नीरज के पवन की काउंसलिंग के बाद परिजन अंगदान को तैयार हुए।

3 अंग जयपुर में ट्रांसप्लांट, लिवर दिल्ली भेजा

हार्ट : छह डॉक्टरों की टीम, छह घंटे...और रचा इतिहास

हनुमानगढ़ के सूरजभान का हार्ट कमजोर हो चुका था। उनके एक वॉल्व का ऑपरेशन हो चुका है। दिल सिर्फ 10% काम कर रहा था। डॉक्टर्स के अनुसार उनके पास ज्यादा से ज्यादा एक महीने की जिंदगी थी। उनके राजू का दिल लगाने के लिए दोपहर दो बजे ऑपरेशन शुरू हुआ। छह डॉक्टर छह घंटे तक लगे रहे...और प्रदेश ने सफल हार्ट ट्रांसप्लांट का इतिहास रच दिया।

किडनी : दो में से एक ट्रांसप्लांट एसएमएस में

राजू की एक किडनी एसएमएस अस्पताल को भेजी गई। जहां डॉ. विनय तोमर के नेतृत्व में उसे शकुंतला देवी को लगाया गया। दूसरी किडनी उसी अस्पताल में बसंती को लगाई गई, जहां राजू भर्ती था।

लिवर : दिल्ली भेजने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया

राजू का लिवर ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दिल्ली के आईएलबीएस हॉस्पिटल भेजा गया। लिवर 3 घंटे में शाम 7:30 बजे दिल्ली पहुंचा। उसे मंगलवार को वहां किसी मरीज को ट्रांसप्लांट किया जाएगा।

बड़ी कामयाबी इसलिए...

- राज्य में यह पहला मौका रहा जब किसी ब्रेन डैड शख्स से चार लोगों को जीवन मिलेगा। अब तक ब्रेन डैड व्यक्ति के अंगदान से प्रदेश में तीन लोगों का जीवन बचाया गया।
- जयपुर में एसएमएस सहित तीन अस्पताल हार्ट ट्रांसप्लांट की तैयारी में जुटे थे। यह हार्ट ट्रांसप्लांट का पहला प्रयास रहा और सफल भी हुआ।

छोटी उम्र में बड़ा नाम कर गया राजू

राजू

हर पिता की तरह राजू के पिता सीताराम की भी ख्वाहिश थी कि वे बेटे की वजह से जाने जाएं। लुहार का काम करने वाले सीताराम कहते हैं- मुझे नहीं पता था वह पहचान ऐसी मिलेगी। कहता था बड़ा होकर बड़ा काम करूंगा, लेकिन अंदाजा भी नहीं था वह छोटी उम्र में ही हमारा इतना बड़ा नाम कर जाएगा।

अंजना बनी केरल की सबसे कम उम्र की डोनर

तीन साल की अंजना केरल की सबसे छोटी उम्र की डोनर बन गई है। अंजना खेलते समय घर में गिर गई थी। उसकी अस्पताल में मौत हो गई। दो किडनियां, लिवर व कॉर्निया 5 साल के एक लड़के को दे दी गई।

राजू का दिल सूरजभान के सीने में धड़कने लगा

हृदय प्रत्यारोपण

राज्य का पहला सफल ऑपरेशन

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

राजू लौहार

राजस्थान के चिकित्सा इतिहास में रविवार का दिन स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। राज्य में पहली बार हृदय प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक कर दिया गया है। सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में बड़वाली ढाणी निवासी ब्रेन डेड राजू लौहार (18) के कैडेवर दान के बाद उसका हृदय हनुमानगढ़ जिले के जोरावरपुरा निवासी सूरजभान (32) को प्रत्यारोपित किया गया। अब राजू का दिल सूरजभान के सीने में धड़क रहा है। शाम 4.30 बजे से रात 10 बजे तक चले इस ऑपरेशन के सफल होने की पुष्टि अस्पताल प्रबन्धन ने कर दी है। मरीज अभी आईसीयू में है। अगले तीन दिन में पूरे नतीजे सामने आ जाएंगे। प्राथमिक तौर पर प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल माना गया है। महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एम. ए. चिश्ती के साथ ही डॉ. बुद्धादित्य चक्रवर्ती व टीम ने इस काम को अंजाम दिया। पढ़ें राजू @ पेज 11

कैडेवर दान के बाद राजू का शव ले जाते परिजन।

(डॉ. चिश्ती से बातचीत @ पेज 2)

दो को किडनी मिली, लीवर दिल्ली भेजा

बड़वाली की ढाणी के लौहार परिवार के त्याग और डॉक्टरों के कौशल से यह सफलता मिली है। साथ ही चार लोगों को जीवनदान मिला। सड़क दुर्घटना के बाद परिवार के लाडले बेटे राजू को शनिवार को ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया था। महात्मा गांधी अस्पताल में ही डॉ. टीसी सदासुखी के नेतृत्व में टीम ने बसंती देवी (वैशालीनगर) को एक किडनी प्रत्यारोपित की। वहीं दूसरी किडनी नियमानुसार सवाई मानसिंह अस्पताल में भेजी गई। यहां इसे तुरंत ही जयपुर की 43 वर्षीय महिला मरीज को प्रत्यारोपित किया। दोपहर बाद यातायात पुलिस की विशेष व्यवस्थाओं में ग्रीन कॉरीडोर में लीवर को आईएलबीएस (इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर एंड बिलियरी साइंसेज) दिल्ली भेज दिया गया।

फ्रैंडशिप-डे पर अनजान दोस्त का तोहफा

सूरजभान को गंभीर हृदय रोग था और फ्रैंडशिप डे के मौके पर सूरजभान के 'अनजान' दोस्त ने उसे तोहफे में नई जिंदगी ही दे डाली। प्रत्यारोपण के दौरान सवाई मानसिंह अस्पताल के विशेषज्ञों की टीम भी मौजूद रही।

राजू का दिल धड़केगा अब सूरजभान के सीने में

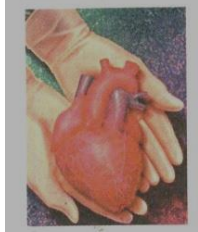

राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट

सिटी रिपोर्टर जयपुर ▷ 2 अगस्त

प्रदेश में पहली बार हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। रविवार को शहर के एक छोटे-से गांव के 18 साल के युवक के ब्रेन डेड होने के बाद उसके दिल को एक अन्य रोगी के शरीर में ट्रांसप्लांट करके डॉक्टरों की ओर से उसको नया जीवन देने की कोशिश की गई है। प्रदेश में उत्तर भारत का यह 38वां हार्ट ट्रांसप्लांट है, साथ ही सीतापुरा स्थित निजी अस्पताल प्रदेश में हार्ट ट्रांसप्लांट का पायोनियर बन गया है। चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाली टीम को बधाई दी है।

साढ़े पांच घंटे में ट्रांसप्लांट ऑपरेटिंग लेवल पर सफल

महात्मा गांधी अस्पताल में वाटिका के 18 साल के राजू का दिल हनुमानगढ़ के जोरावरपुरा निवासी सूरजभान (32) को लगाया गया है। दोपहर तीन बजे हार्ट ट्रांसप्लांट शुरू किया गया, जो रात साढ़े आठ बजे तक चला। मरीज को कार्डियक आईसीयू में वेंटिलेटर पर रखा गया है। डॉक्टरों की माने तो ऑपरेटिंग लेवल पर यह ट्रांसप्लांट सफल रहा है।

अब तक 37 : जानकारी के अनुसार अब तक एम्स में 37 हार्ट ट्रांसप्लांट हो चुके है।

हार्ट को रखा सुरक्षित

राजू के शरीर से हार्ट को निकालने के बाद उसे कार्डियोप्लिजिया सॉल्यूशन में रखा गया और उसे कोल्ड आईस का माध्यम दिया गया। ताकि हार्ट की मांसपेशियां सामान्य बनी रहे।

डॉक्टर्स की टीम

हृदय शल्य चिकित्सक डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. बुद्धादित्य चक्रवर्ती, डॉ. अजय मौना के अलावा एसएमएस अस्पताल से डॉ. आर.एम. माथुर, डॉ. अनिल शर्मा व डॉ. संजीव देवगरा भी इसमें शामिल थे।

हार्ट ट्रांसप्लांट में चैलेंज

- चार घंटे के अंदर रोगी तक प्रत्यारोपण के लिए दिल पहुंचना
- एचएलए मैचिंग

यूं होता है हार्ट ट्रांसप्लांट

ब्रेन डेड व्यक्ति के शरीर से हार्ट की हार्वेस्टिंग करके पहले उसे सुरक्षित रखा जाता है। उसके बाद अन्य मरीज का हार्ट निकालकर नया दिल लगाया जाता है। हार्ट ट्रांसप्लांट करने के बाद मरीज को एंडवांस इम्यूनोसप्रेसेंट दवाएं दी जाती है, ताकि उसका शरीर नए दिल को सहजता से स्वीकार कर ले। इस दौरान दवा की सही मात्रा व टाइम मैनेजमेंट काफी अहम होता है।

हार्ट ट्रांसप्लांट के पहले व बाद में

हार्ट फेलियर की अंतिम स्थिति में जब जीवन की छह माह से अधिक उम्मीद न हो उन मरीजों के हार्ट ट्रांसप्लांट किया जाता है। मैचिंग डॉनर के मिलने के बाद हार्ट ट्रांसप्लांट किया जाता है। इसके जरिए अब 95 फीसदी रोगियों का जीवनकाल पांच से तीस फीसदी तक बढ़ सकता है। एक तिहाई मरीज प्रत्यारोपण के बाद तीस साल तक जीवित रह सकते है।

दुनिया से विदा होते-होते मिसाल बन गया राजू

चार मरीजों को मिल सकेगी नई जिंदगी

दिल, लिवर और दोनों किडनी का दान

जयपुर। दुनिया से विदा होते होते राजू समाज के लिए एक मिसाल बन गया। अब न सिर्फ उसका दिल किसी और के सीने में धड़केगा, बल्कि उसके अंग तीन और मरीजों की जिंदगियों को रोशन करेंगे। 18 साल के राजू के सड़क हादसे के बाद ब्रेन डेड होने पर उसके परिजनों ने उसके चारों अंग दान कर दिए। रविवार को सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में राजू के लिवर, दोनों किडनी व दिल दान में दे दिए गए। रविवार को ही राजू का दिल एक अन्य मरीज के ट्रांसप्लांट कर दिया गया। राजू की एक किडनी अस्पताल में और दूसरी एसएमएस अस्पताल में गुर्दा रोगियों को लगाई गई। वहीं, लिवर ग्रीन कॉरिडोर के जरिए दिल्ली के आईएलबीएस अस्पताल भेज दिया गया। (शेष पेज 4 पर)

ग्रीन कॉरिडोर से लिवर भेजा

राजू का लिवर ग्रीन कॉरिडोर के जरिए दिल्ली के आईएलबीएस अस्पताल भेजा गया है। आईएलबीएस अस्पताल में अभी तक 15 लिवर ट्रांसप्लांट हुए हैं, जिसमें चार लिवर राजस्थान से भेजे गए हैं।

दो महिला रोगियों को लगाई किडनी

राजू के शरीर से निकाली गई दो किडनियों में से एक एसएमएस अस्पताल में शकुंतला नामक मरीज को लगाई गई है, वह काफी समय से डायलिसिस पर थी। वहीं, महात्मा गांधी अस्पताल में वैशाली नगर की बसंती देवी (45) को राजू की किडनी का ट्रांसप्लांट किया गया।

राजू का दिल...

जरूरतमंदों को लगाए गए हैं। हाल में करीब चार माह पहले ही राजू का विवाह हुआ था। उसका परिवार बेहद गरीब है और परिजन ज्यादा पढ़े-लिखे भी नहीं हैं। डॉक्टरों के अनुसार किसी भी व्यक्ति में हार्ट ट्रांसप्लांट हार्ट फेल्योर या कॉर्नरी आर्टरी डिजीज की दशा में ही किया जाता है। हार्ट मरणोपरान्त ही दान किया जा सकता है।

Health Minister Rajendra Rathore(2nd from left) meeting Surajbhan, the state's first cadaver heart transplant recipient on Saturday. —dna

Health min meets transplant patient

dna correspondent @jaipurdna

It was an emotional moment for state's health minister Rajendra Rathore who met state's first cadaver heart transplant recipient Surajbhan as he visited the Mahatma Gandhi Hospital on Saturday morning.

During the meeting, Rathore wished him long healthy life and speedy recovery. On the occasion, Rathore expressed his views and congratulated the team of doctors at Mahatma Gandhi Hospital which performed the operation. He also acknowledged hospital's management for making arrangements for the transplant on time.

Rathore in his address said that the hospital has taken up the initiative of Government of Rajasthan and visionary chief minister Vasundhara Raje and led the campaign of organ transplant in the state. "Doctors at the Mahatma Gandhi Hospital have performed the heart transplant successfully. It's a great success in the field of health care in state. We are proud of this achievement," said the minister amid a huge round of applause.

The minister became emotional when he met Surajbhan and said, "I have no words to describe this immaculate feat. I have seen life in the eyes of this heart transplant patient Surajbhan."

"Media is playing an important role in organ donation. It gives a positive impact in the society and develops the confidence in masses in status of healthcare services in state," Rathore said.

अंगदाताओं के नाम पर किया वार्डों का नाम

महात्मा गांधी अस्पताल ने कई वार्ड यूनिटों के नाम बदले

डेली न्यूज

जयपुर ▷ 13 अगस्त

महात्मा गांधी अस्पताल की ओर से शनिवार को विश्व अंगदान दिवस पर कैडेवर अंगदाताओं के परिजनों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर कैडेवर किडनी डोनर मास्टर

मोहित के नाम पर 'मोहित मैमोरियल किडनी वार्ड' नामकरण किया। राजू लुहार के कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ था, के नाम पर 'राजू मैमोरियल हार्ट यूनिट' वार्ड बनाया गया। महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने बताया कि मनपाल के कैडेवर अंगदान से राज्य में पहला लिवर ट्रांसप्लांट हुआ था। उनके नाम पर मनपाल मैमोरियल लिवर प्रत्यारोपण इकाई नामकरण किया गया है।

हृदय प्रत्यारोपित सूरजभान ने काटा केक, अंगदान के लिए किया जागरूक

पहले सफल हार्ट ट्रांसप्लांट की वर्षगांठ मनाई

मेरे दिल में हमेशा राजू है जिंदा...

कहा, खेती के काम के साथ चलता हूं पैदल भी, अब जी रहा हूं सामान्य जीवन

जयपुर (मोन्यू)। हृदय प्रत्यारोपण के बाद मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं और अपने खेती बाड़ी के काम को बखूबी कर रहा हूं। इतना नहीं रोजाना तीन से चार किमी पैदल भी चलता हूं। ये कहकर पिछले साल महात्मा गांधी अस्पताल में हुए ले हॉर्ट ट्रांसप्लांट करा वाले सूरजभान ने इसकी सफलता पर मोहर लगा दी है। मंगलवार को हॉर्ट ट्रांसप्लांट की पहली वर्षगांठ के सेलीब्रेशन में सूरजभान न सिर्फ शरीक हुआ बल्कि राजू को तहेदिल से याद भी किया। उसने कहा कि जब तक मैं हूं मेरे दिल में राजू हमेशा जिन्दा रहेगा, क्योंकि मेरा दिल महज 10 फीसदी काम कर रहा था, लेकिन मुझे नई मिली जिंदगी उसी की देन है जो अपनी धड़कन में हमेशा महसूस करता हूं। इसके लिए मैं राजू और उसके परिजनों का जीवनभर ऋणी रहूंगा।

सूरजभान के साथ अस्पताल प्रबंधन के अधिकारियों और स्टॉफ ने केक काटकर इस सफलता की खुशी को बांटा। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल. स्वर्णकार ने बताया कि महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर में हुए

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट के साथ ही हमारा राजस्थान देश के उन चुनिंदा 6 राज्यों की सूची में शामिल हो गया था जहां हृदय प्रत्यारोपण हुए हैं। अस्पताल में हुआ यह पहला हृदय प्रत्यारोपण सफल रहा है। जो कि विश्वस्तरीय तकनीक एवं सुविधाओं से संभव हो सका है।

अच्छे केन्द्रों पर हॉर्ट ट्रांसप्लांट बाईपास सर्जरी की तरह संभव : अस्पताल में राज्य को पहले हार्ट ट्रांसप्लांट की राह दिखाने वाली टीम के मुखिया सुप्रसिद्ध हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती ने बताया कि दुनिया के अच्छे केन्द्रों पर हार्ट ट्रांसप्लांट बाइपास सर्जरी की तरह ही संभव होता है। इसक लिए हार्ट फेलियर रोगियों को पहले से ही अपना संबन्धित जांचें कराकर तैयार रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि सबसे बड़े हार्ट ट्रांसप्लांट केन्द्र लॉस एंजिलिस स्थित सेडर्स साइनाई में जागरूकता की वजह से हर साल सौ हृदय प्रत्यारोपण होते हैं। जबकि हमारे देश में अब तक कोई सौ ही प्रत्यारोपण हुए हैं। इनमें से अधिकांश दक्षिण भारतीय अस्पतालों में हुए जहां अंगदान अब आम हो गया है।

राज्य में भी अच्छे प्रशिक्षित चिकित्सक, तकनीक, उपकरण मौजूद हैं पर अंगदान तथा अंग प्राप्तकर्ताओं में अभी जागरूकता का अभाव है। इस दिशा में और प्रयास किए जाने चाहिए।

-डॉ. एल.एल. स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल

2 अगस्त 2015 को सूरजभान को मिला था दूसरे के अंग से जीवनदान, ब्रेन डेड राजू का हार्ट लगाया था

1 साल का हुआ जयपुर का हार्ट ट्रांसप्लांट

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

सूरजभान और राजू .....। जी हां ये दो नाम हैं, जिनकी वजह से प्रदेश ने ठीक एक वर्ष पूर्व हृदय प्रत्यारोपण (हार्ट ट्रांसप्लांट) के क्षेत्र में पहला कदम रखा। अब मरीज सूरजभान पूरी तरह स्वस्थ है। कुछ साल पहले पहले वह कुछ कदम भी नहीं चल पाता था, अब खेतीबाड़ी कर रहा है। हालांकि, महात्मा गांधी अस्पताल में किए गए पहले ट्रांसप्लांट के बाद लोगों में अंगदान के प्रति जागरूकता की कमी से डोनर नहीं मिल रहे, लिहाजा एक साल बाद भी दूसरा ट्रांसप्लांट नहीं हो सका।

हनुमानगढ़ निवासी सूरजभान ने महात्मा गांधी अस्पताल में हार्ट सर्जन एमए चिश्ती को दिखाया तो पता चला कि हार्ट के काम करने की गति कम हो गई है और अब ट्रांसप्लांट ही एकमात्र विकल्प बचा है। उन्हीं दिनों सड़क दुर्घटना में घायल होने से ब्रेन डेड (निष्प्राण मस्तिष्क) घोषित राजू के परिजनों ने उसके अंगदान का निर्णय किया और 2 अगस्त 2015 को सूरजभान के राजू का हार्ट लगाया गया। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि प्रदेश में विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाएं हैं और अन्य ट्रांसप्लांट भी किए जा सकते हैं, लेकिन डोनर की कमी और हार्ट ट्रांसप्लांट में रिसीवर भी आसानी से नहीं मिलते।

मेरे परिवार को अंगदान के लिए प्रेरित करूंगा

दूसरे का हार्ट लेने के बाद सफल जीवन जी रहे सूरजभान ने कहा कि वह अपने परिवार के अलावा समाज के अन्य लोगों को भी अंगदान देने के लिए प्रेरित करेगा। यहां तक कि मरणोपरांत भी वह स्वयं और परिवार के लोगों का संभव हो सकने वाले अंगों का दान करेगा।

कितना सफल हार्ट ट्रांसप्लांट

डॉ. एमए चिश्ती ने बताया कि 80 प्रतिशत मरीजों में पांच साल से अधिक और 60 प्रतिशत से अधिक मरीजों में 10 साल से अधिक तक ट्रांसप्लांट सफल रहता है। अभी अंगदान के प्रति कम जागरूकता, ट्रांसप्लांट का महंगा होना और लोगों को हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी के बारे में अधिक जानकारी नहीं होने से भी परेशानी हो रही है। यहां तक कि हार्ट ट्रांसप्लांट में रिसीवर भी घबराते हैं। उन्हें भी काफी समझाइश की जरूरत होती है।

राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट : राजू का दिल अब सूरजभान के शरीर में धड़केगा

चार व्यक्तियों को मिला जीवनदान

बसंती देवी व शकुंतला को मिली किडनी

लिवर भेजा ग्रीन कॉरिडोर के जरिए नई दिल्ली

जयपुर (कासं)। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने नया इतिहास रच दिया है। राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट महात्मा गांधी अस्पताल के कार्डियो सर्जन ने किया। राजस्थान की भूमि त्याग, वीरता व बलिदान के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और अब यहां के लोग दूसरों का जीवन बचाने के लिए आगे आकर अंगदान करने में रुचि दिखाने लगे हैं। वाटिका सांगानेर निवासी 18 वर्षीय राजू लुहार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था और पिछले कई दिनों से आईसीयू में भर्ती था। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों की टीम ने उसे ब्रेन डेड घोषित किया। वहीं उसके परिजनों को समझाइश की गई। परिजन रविवार को राजू के ऑर्गन डोनेट करने के लिए तैयार हो गए। महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती डायलिसिस पर चल रही बसंती देवी (45) निवासी वैशाली नगर के राज की एक किडनी प्रत्यारोपित की गई। दूसरी किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल भेज दी गई। जहां गुर्दा विभाग में डायलिसिस पर चल रही जयपुर निवासी शकुंतला (47) को डॉ. विनय तोमर व उनकी टीम ने दूसरी किडनी प्रत्यारोपित की है। राजू का लीवर नई दिल्ली के

आईएलबीएस अस्पताल को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर भेजा गया। महात्मा गांधी अस्पताल को अभी हाल ही में हार्ट व लिवर ट्रांसप्लांट करने की सरकार की ओर स्वीकृति मिली है। लिवर का कोई भी मरीज प्रदेश में वेब रजिस्ट्री के जरिए रजिस्टर्ड नहीं था। इस कारण से महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने लिवर नई दिल्ली भेज दिया।

राजू का हार्ट हनुमानगढ़ निवासी 32 वर्षीय सूरजभान को प्रत्यारोपित कर दिया है। सूरजभान का हार्ट दस प्रतिशत काम कर रहा था। रविवार को उसके परिजनों को हार्ट प्रत्यारोपित करने के लिए कहा तो वह तुरंत राजी हो गए। यह ऑपरेशन महात्मा गांधी अस्पताल के हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. के.के. कुशवाह, डॉ. बुधादित्य चक्रवती व उनकी टीम ने हार्ट ट्रांसप्लान्ट करने में सफलता प्राप्त की है। चिकित्सा मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने महात्मा गांधी अस्पताल को राज्य में पहले हार्ट ट्रांसप्लांट की बधाई दी है। राठौड़ ने कहा कि हमारे चिकित्सों की मेहनत रंग लाई है और अब चेन्नई, नई दिल्ली, मुम्बई जैसे बड़े शहरों में मिलने वाली चिकित्सा सुविधाएं जयपुर में शुरू हो गई है।

झोंपड़े में मिला सबसे बड़ा दिल

चिकित्सा मंत्री की घोषणा

बडवाली ढाणी में राजू के नाम पर बनेगी धर्मशाला

जयपुर @ पत्रिका. राजस्थान के चिकित्सा इतिहास की नई तासीर कहें या निर्धनतम परिवार के त्याग की अदभुत मिसाल। राज्य के पहले सफल हॉर्ट ट्रांसप्लांट में जिस मरीज का दिल सूरजभान को लगाया गया, वह परिजन के साथ वाटिका के पास बड़वाली ढाणी में एक कच्चे झोपड़े में रहता था। जब सोमवार को यहां चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़ और विभाग के आला अधिकारी पहुंचे तो त्याग की आद्वितीय मिसाल पेश करने वाले इस परिवार का शुक्रिया अदा करने के लिए उनके पास भी शब्द नहीं थे। चिकित्सा मंत्री ने इस परिवार को राजू की असामयिक मौत की दिलासा देते हुए इतना कहा कि आपने जो काम किया वह काम करने के लिए ना किसी धन की जरूरत है और ना ही किसी प्रभाव की। इस काम को करने के लिए बड़ा दिल चाहिए, जो सिर्फ आपके पास है। राठौड़ ने ढाणी में राजू लौहार के नाम पर धर्मशाला का निर्माण कराने की घोषणा की है। साथ ही ढाणी के अस्पताल का नाम भी उसके नाम पर करने की घोषणा की। राजू के पिता सीताराम ने कहा कि राजू हमेशा कहा करता था कि वह बड़ा काम करेगा। लेकिन छोटी उम्र में इस तरह बड़ा काम करके वह जाएगा, यह उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था। सीताराम ने बताया कि कुछ साल पहले ही राजू का विवाह हुआ था। लेकिन दुर्घटना में उनका पुत्र चूं जाएगा और चार लोगों को जिंदगी देकर जाएगा, यह तो परिवार का बड़ा नाम वह कर गया। गौरतलब है कि दुर्घटना में उसकी मौत हुई थी।

राजू लौहार

राज्य में पहली बार हृदय प्रत्यारोपण में सफलता प्राप्त करने के बाद अब महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टरों की टीम मरीज सूरजभान के स्वास्थ्य पर लगातार निगाह रखे हुए है। अब उसकी तबियत सुधरने का दावा किया गया है। अस्पताल के चीफ कार्डियक सर्जन डॉ.एम. चिश्ती ने बताया कि सूरजभान अब परिजन और अन्य को पहचान रहा है।

मिसाल बनेगा

एनएचएम के अतिरिक्त मिशन निदेशक नीरज के पवन ने कहा कि राजू का त्याग प्रदेश में ब्रेन डेड होने वाले दूसरे मरीजों के परिजनों के लिए मिसाल बनेगा कि किस तरह दुनिया से जाते हुए इंसान को मौत के बाद भी जिंदा रखा जा सकता है। अन्य मरीजों की काउंसलिंग के समय ऐसे केस को मिसाल के तौर पर रखा जाएगा, जिन्होंने पहली बार साहस भरा कदम उठाया।

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

राजस्थान पत्रिका

अंगदान की अलख जगाएगा सूरज

प्रदेश के पहले हार्ट ट्रांसप्लांट वाले मरीज को मिली अस्पताल से छुट्टी

जयपुर@. करीब डेढ़ महीने पहले प्रदेश के पहले हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद हनुमानगढ़ जिले के निवासी सूरजभान को अब अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। डॉक्टरों की मेहनत और विज्ञान के चमत्कार ने जहां उसका दिल बदला, वहीं हालात ने उसके दिमाग और मन को भी बदल दिया है। राजू के अंगदान से सीख लेकर अब वह अंगदान जागरुकता की अलख जगाएगा और जरुरत पड़ी तो खुद के अंग भी दान करने से पीछे नहीं हटेगा। अस्पताल से घर जाते समय सूरजभान से जब पूछा गया कि ट्रांसप्लांट से पहले और अब में क्या परिवर्तन उनमें आया है ? तो उसके मुंह से यही निकला कि वह अब सूरज नहीं रहा राजू बन गया।

इस अवसर पर महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि सूरजभान को दस दिनों से अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद यहीं धर्मशाला में रखा गया था। इसके बाद उसे रोजाना आधे घंटे की सैर करवाई जा रही है। अस्पताल के चीफ हॉर्ट सर्जन डॉ.एम.ए.चिश्ती ने कहा कि इस ट्रांसप्लांट को सफल बनाने में उनकी पूरी टीम का सहयोग रहा।

महात्मा गांधी अस्पताल में धर्मशाला से बिना किसी सहारे के खुद पैदल चलकर आया सूरजभान।

लंग्स व लीवर ट्रांसप्लांट भी जल्द

डॉ.चिश्ती ने बताया कि जल्द ही अस्पताल में लंग्स और लीवर ट्रांसप्लांट भी शुरू किया जाएगा।

सब कुछ पहले जैसा

विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो सूरजभान के दिमाग और मन की परिस्थितियों में बिल्कुल परिवर्तन नहीं आएगा। उसका व्यवहार और अन्य क्रियाएं पहले की तरह ही है।

धर्मशाला से खुद चलकर पहुंचा

सूरजभान सोमवार को खुद धर्मशाला से चलते हुए करीब 500 मीटर की दूरी तय कर मीडिया के पास पहुंचा। इस दौरान उसका हौसला चरम पर था। उन्होंने ठेठ पंजाबी लहजे में अपने स्वास्थ्य को ए-वन बताया।

दैनिक भास्कर

राज्य के पहले हार्ट प्रत्यारोपण रोगी को अस्पताल से विदा किया

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर में 2 अगस्त को किए गए प्रदेश का पहला हार्ट प्रत्यारोपण ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा। ऑपरेशन के सूरजभान अब पूरी तरह स्वस्थ होकर अपने घर लौटा। इस मौके पर महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने कहा कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र के किसी अस्पताल में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ है। साथ ही राज्य में पहली बार किसी कैडेवर देह के 2 अंगों हृदय, लिवर, दो किडनी से 4 रोगियों को जीवनदान दिया गया है। उन्होंने कहा कि पहले प्रयास में मिली सफलता से टीम का मनोबल बढ़ा है तथा शीघ्र ही लिवर प्रत्यारोपण भी किए जाएंगे।

THE TIMES OF INDIA

1st heart transplant patient heads home

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: After 43 days of medication and monitoring by the doctors, first cadaver heart recipient of the state, 32-year-old Surajbhan walked out hale and hearty from Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Hospital on Monday.

It's a second life for him, gifted by a person much younger than him. All those interested in organ transplant were focused on Surajbhan's case for the past 43 days. Surajbhan got a new life and those suffering from heart ailments and require heart transplant got a new ray of hope. Surajbhan stayed in guest house near the hospital for 10 days in doctor's close watch before heading to his hometown Hanumangarh. He said, "I will assist my family in agricultural field after returning to my village," Surajbhan said. He was eager to meet his family and start his new life.

He was emotionally charged when he thanked cadaver donor 18-year-old Raju. "I am Raju first and then Surajbhan," he said.

The heart beating in Surajbhan's body was "gifted" to him by Raju's family. The 18-year-old was declared brain dead in the hospital after he had met with an accident. His family gave consent for Raju's cadaver organ donation to the hospital. The doctors harvested kidney, liver and heart from his body and transplanted heart to Surajbhan giving him a new life. "I thank Raju's family for giving me this precious life," Surajbhan said.

Surajbhan, the first cadaver heart recipient of the state, with doctors on Monday

Rajasthan's first heart transplant was conducted on August 2, 2015. He said, he is feeling normal and is walking for 30 minutes daily and doing all routine activities on his own. The doctors who conducted the surgery said Surajbhan will have to take medicines but he is fine and can lead a normal life. Surajbhan can walk without feeling any breathlessness.

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद मिली विदाई...

'मैं पहले 'राजू' बाद में 'सूरज' हूं.....

ऑपरेशन के बाद स्वस्थ होने पर डेढ़ माह बाद घर वापसी

अपने सभी काम करने में खुद सक्षम, रोज आधा घंटे सैर भी

जाते हुए कहा, कुछ दिन परिवार के बीच आराम कर फिर खेती-बाड़ी का काम देखूंगा

जयपुर (मोन्यू)। हार्ट ट्रांससप्लाण्ट के बाद स्वास्थ्य लाभ ले रहे सूरजभान ने बताया कि मैं पहले 'राजू' हूं और फिर 'सूरजभान'। ये कहना है करीब डेढ़ माह पहले महात्मा गांधी अस्पताल में पहला हॉर्ट ट्रांसप्लांट कराने वाले सूरज का। पूरी तरह स्वास्थ्य सुधार के बाद सोमवार को अस्पताल से विदाई लेते हुए सूरजभान ने राजू को नमन किया और कहा कि वह आज भी उनके बीच जीवित है और हमेशा उसकी दिन की धड़कन में उसे वे महसूस करेंगे। इसी भावुक माहौल के बीच सूरजभान अपने घर लौट पड़े। उन्होंने कहा कि काफी दिनों बाद नया जीवन पाकर वह फिर से अपने परिवार व गांव के बीच लौट रहे हैं तो कुछ दिन उनके बीच रहकर आराम करेंगे और फिर से अपने खेती बाड़ी के काम में जुटेंगे।

सूरज ने बताया कि ऑपरेशन से पहले मैं मौत की घड़ियां गिनता था, लेकिन हार्ट प्रत्यारोपण के बाद जीवन को नई उर्जा मिली है। दिनचर्या अब पहले से नियमित हो गई है। रोजाना आधा घण्टा सैर करता हूं, खाना खाता हूं। पूछे जाने पर पंजाबी लहजे में अपने स्वास्थ्य को 'ए वन' बताया।

दो सालों की मेहनत 2 अगस्त को हुई थी पूरी : महात्मा गांधी अस्पताल में 2 अगस्त को प्रदेश का पहला हार्ट प्रत्यारोपण कराने वाले सूरजभान ने स्वस्थ होने के साथ ही सोमवार को अस्पताल से विदाई दे दी गई। इस दौरान महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ हार्ट सर्जन डॉ. एम. ए. चिश्ती ने कहा कि हमारे हार्ट प्रत्यारोपण प्रशिक्षण की शुरूआत 1996 में ही ऑस्ट्रेलिया में हुई । उसके बाद फ्रांस व अमेरिका में हार्ट प्रत्यारोपण की नवीनतम तकनीकों का अनुभव लिया। अपने अनुभव को साथी चिकित्सकों तथा टीम के सदस्यों से साझा कर पिछले दो सालों से लगातार की जा रही मेहनत का नतीजा है कि हार्ट प्रत्यारोपण प्रयास ही पूरी तरह सफल रहा। इसमें कैडेवर डोनर 'राजू' के परिजनों, सूरजभान के परिजनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है।

इनका कहना है

राज्य में पहली बार किसी कैडेवर देह के चार अंगों को हृदय, लिवर व दो किडनी की मदद से चार रोगियों को जीवनदान दिया गया है। पहले प्रयास में मिली सफलता से टीम का मनोबल बढ़ा है तथा शीघ्र ही लिवर प्रत्यारोपण भी किये जायेंगे।

-डॉ.एम.एल स्वर्णकार (चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल)

डैली न्यूज़ 4

'अब सूरज नहीं, राजू हूं'

हृदय प्रत्यारोपण के डेढ़ माह बाद घर लौटा सूरजभान

सिटी रिपोर्टर, जयपुर ▷ 14 सितंबर

पहले मैं मौत की घड़ियां गिनता था, लेकिन राजू ने मुझे नई जिंदगी दी है। इसीलिए इस जिंदगी पर सूरजभान से पहले राजू का ही हक है। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दो अगस्त को प्रदेश का पहला हार्ट प्रत्यारोपण होने के करीब डेढ़ महीने बाद सूरजभान अपने घर लौटा। सूरज ने सोमवार को प्रेस वार्ता मे कहा कि ऑपरेशन से पहले मैं सिर्फ सूरजभान था, लेकिन अब मैं पहले राजू हूं। ये शरीर तो मेरा है, लेकिन दिल हमेशा राजू का रहेगा। उसने मुझे दिल देकर बचा लिया, साथ ही कई लोगों की उम्मीद की किरण भी बन गया।

महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र के किसी हॉस्पिटल में यह पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ, जो कि सफल रहा। इसके अलावा प्रदेश में पहली बार किसी कैडेवर देह के हृदय, लीवर और दो किडनी की मदद से चार रोगियों को जीवनदान मिला। अब जल्द ही लीवर ट्रांसप्लांट भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चीफ हार्ट सर्जन डॉ. एमए चिश्ती ने हॉस्पिटल में संक्रमण नियंत्रण, ऑपरेशन के बाद चौबीसों घंटे एनेस्थेटिस्ट और नर्सिंग स्टाफ की देखरेख आदि को बेहतरीन तरीके से संभाला।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : SAMACHAR JAGAT, PAGE NO: 3 DATE 15.09.2015

मैं सूरज नहीं राजू हूं

राज्य का पहला हार्ट ट्रान्सप्लान्ट रोगी स्वस्थ होकर हनुमानगढ़ लौटा

महात्मा गांधी अस्पताल के हार्ट सर्जन डा. एम.ए. चिश्ती ने रचा इतिहास

जयपुर कासं.। सूरज नहीं मैं राजू हूं। यह उद्गार आज महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी एवं हास्पिटल में 2 अगस्त को हुए प्रदेश के पहले हार्ट ट्रान्सप्लान्ट मरीज सूरजभान ने स्वस्थ होकर हास्पिटल से विदा होने के दौरान प्रकट किए। चेहरे पर विशेष दमक साफ दिखाई दे रही थी। वह तहे दिल से केडेबर डोनर राजू के परिजनों का आभार प्रकट कर रहा था जिनके निर्णय से उसका जीवन वापस लौटा है। अस्पताल जब पहुंचे थे तो वह दो कदम भी नही चल सकते थे। चिकित्सकों ने साफ जवाब दे दिया था, लेकिन महात्मा गांधी अस्पताल के हार्ट ट्रान्सप्लान्ट सर्जन डा. एम.ए. चिश्ती ने उनको नया जीवन देते हुए प्रदेश में एक नया इतिहास रच दिया। डा. एम.ए. चिश्ती की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है। जयपुर के नागरिकों का सपना था कि कभी जयपुर में भी हार्ट ट्रान्सप्लान्ट होगा जिसे उन्होंने पूरा किया है। आज सूरजभान के परिजन बेहद खुश हैं, वह नई रोशनी व उम्मीदों के साथ वापस हनुमानगढ़ लौट रहे हैं। 2 अगस्त को हुए केडेवर ट्रान्सप्लान्ट में चार मरीजों को जीवन दान मिला यह प्रदेश में केडेबर ट्रान्सप्लान्ट के क्षेत्र में सुखद संकेत हैं। ट्रान्सप्लान्ट सर्जन डा. एम.एम. चिश्ती ने कहा वे 1996 से हार्ट ट्रान्सप्लान्ट में प्रशिक्षित हैं। जब वे आस्ट्रेलिया में थे तो उन्होंने फ्रान्स व अमेरिका में हार्ट ट्रान्सप्लान्ट की नवीनतम तकनीक की जानकारियो ली। अपने अनुभवों को साथी चिकित्सकों के बीच साझा करते हुए दो साल की कठिन मेहनत का नतीजा निकला और हम जयपुर में हार्ट ट्रान्स प्लान्ट करने में सफल रहे। इस अवसर पर महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइन्सेज एण्ड टेक्नोलोजी के चेयरमेन डा. एम.एल. स्वर्णकार ने कहा कि पिछले कई सालों के ऑर्गन ट्रान्सप्लान्ट पर हमारे द्वारा किए गए प्रयासों को अब सफलता मिली है। इस सफलता का श्रेय डॉ. एम.एम. चिश्ती के नेतृत्व में हार्ट ट्रान्सप्लान्ट टीम को जाता है साथ ही संक्रमण नियन्त्रण, आपरेशन के बाद चौबीस घण्टे कुशल व प्रशिक्षित एनेस्थेटिस्ट व नर्सिंग स्टाफ की देखरेख व राज्य की जनता को जाता है जिन्होंने इनकी लम्बी उम्र की दुआएं की। हार्ट ट्रान्सप्लान्ट के बाद पूरी तरह स्वस्थ जीवन जी रहे सूरजभान ने कहा कि मैं पहले राजू हूं ओर फिर सूरजभान। आपरेशन से पहले मैं मौत की घड़ियां गिनता था किन्तु हार्ट ट्रान्सप्लान्ट के बाद मेरे जीवन में खुशियां लौट आई। हनुमानगढ़ निवासी सूरजभान के परिजनों के चेहरे पर खुशी की खिलखिलाहट थी। इस पूरे ट्रान्सप्लान्ट में राजू के परिजनों की भूमिका सकारात्मक रही जिन्होंन राजू का केडेबर डोनर करना स्वीकार किया।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
CATION : DAILY NEWS, PAGE NO: 4 DATE 15.0

डेली न्यूज़ 4

'अब सूरज नहीं, राजू हूं'

हृदय प्रत्यारोपण के डेढ़ माह बाद घर लौटा सूरजभान

सिटी रिपोर्टर, जयपुर ▷ 14 सितंबर

पहले मै मौत की घड़ियां गिनता था, लेकिन राजू ने मुझे नई जिंदगी दी है। इसीलिए इस जिंदगी पर सूरजभान से पहले राजू का ही हक है। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दो अगस्त को प्रदेश का पहला हार्ट प्रत्यारोपण होने के करीब डेढ़ महीने बाद सूरजभान अपने घर लौटा। सूरज ने सोमवार को प्रेस वार्ता मे कहा कि ऑपरेशन से पहले मै सिर्फ सूरजभान था, लेकिन अब मै पहले राजू हूं। ये शरीर तो मेरा है, लेकिन दिल हमेशा राजू का रहेगा। उसने मुझे दिल देकर बचा लिया, साथ ही कई लोगों की उम्मीद की किरण भी बन गया।

महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र के किसी हॉस्पिटल में यह पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ, जो कि सफल रहा। इसके अलावा प्रदेश में पहली बार किसी कैडेवर देह के हृदय, लीवर और दो किडनी की मदद से चार रोगियों को जीवनदान मिला। अब जल्द ही लीवर ट्रांसप्लांट भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चीफ हार्ट सर्जन डॉ. एमए चिश्ती ने हॉस्पिटल में संक्रमण नियंत्रण, ऑपरेशन के बाद चौबीसों घंटे एनेस्थेटिस्ट और नर्सिंग स्टाफ की देखरेख आदि को बेहतरीन तरीके से संभाला।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
UBLICATION TIMES OF INDIA, PAGE NO: 3 DATE 15.09.2

1st heart transplant patient heads home

TIMES NEWS NETWORK

Surajbhan, the first cadaver heart recipient of the state, with doctors on Monday

Jaipur: After 43 days of medication and monitoring by the doctors, first cadaver heart recipient of the state, 32-year-old Surajbhan walked out hale and hearty from Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Hospital on Monday.

It's a second life for him, gifted by a person much younger than him. All those interested in organ transplant were focused on Surajbhan's case for the past 43 days. Surajbhan got a new life and those suffering from heart ailments and require heart transplant got a new ray of hope. Surajbhan stayed in guest house near the hospital for 10 days in doctor's close watch before heading to his hometown Hanumangarh. He said, "I will assist my family in agricultural field after returning to my village," Surajbhan said. He was eager to meet his family and start his new life.

He was emotionally charged when he thanked cadaver donor 18-year-old Raju. "I am Raju first and then Surajbhan," he said.

The heart beating in Surajbhan's body was "gifted" to him by Raju's family. The 18-year-old was declared brain dead in the hospital after he had met with an accident. His family gave consent for Raju's cadaver organ donation to the hospital. The doctors harvested kidney, liver and heart from his body and transplanted heart to Surajbhan giving him a new life. "I thank Raju's family for giving me this precious life," Surajbhan said.

Rajasthan's first heart transplant was conducted on August 2, 2015. He said, he is feeling normal and is walking for 30 minutes daily and doing all routine activities on his own. The doctors who conducted the surgery said Surajbhan will have to take medicines but he is fine and can lead a normal life. Surajbhan can walk without feeling any breathlessness.

अंगदान की अलख जगाएगा सूरज

प्रदेश के पहले हार्ट ट्रांसप्लांट वाले मरीज को मिली अस्पताल से छुट्टी

महात्मा गांधी अस्पताल में धर्मशाला से बिना किसी सहारे के खुद पैदल चलकर आया सूरजभान।

जयपुर@. करीब डेढ़ महीने पहले प्रदेश के पहले हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद हनुमानगढ़ जिले के निवासी सूरजभान को अब अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। डॉक्टरों की मेहनत और विज्ञान के चमत्कार ने जहां उसका दिल बदला, वहीं हालात ने उसके दिमाग और मन को भी बदल दिया है। राजू के अंगदान से सीख लेकर अब वह अंगदान जागरुकता की अलख जगाएगा और जरुरत पड़ी तो खुद के अंग भी दान करने से पीछे नहीं हटेगा। अस्पताल से घर जाते समय सूरजभान से जब पूछा गया कि ट्रांसप्लांट से पहले और अब में क्या परिवर्तन उनमें आया है ? तो उसके मुंह से यही निकला कि वह अब सूरज नहीं रहा राजू बन गया।

इस अवसर पर महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि सूरजभान को दस दिनों से अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद यहीं धर्मशाला में रखा गया था। इसके बाद उसे रोजाना आधे घंटे की सैर करवाई जा रही है। अस्पताल के चीफ हॉर्ट सर्जन डॉ.एम.ए.चिश्ती ने कहा कि इस ट्रांसप्लांट को सफल बनाने में उनकी पूरी टीम का सहयोग रहा।

लंग्स व लीवर ट्रांसप्लांट भी जल्द

डॉ.चिश्ती ने बताया कि जल्द ही अस्पताल में लंग्स और लीवर ट्रांसप्लांट भी शुरू किया जाएगा।

सब कुछ पहले जैसा

विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो सूरजभान के दिमाग और मन की परिस्थितियों में बिल्कुल परिवर्तन नहीं आएगा। उसका व्यवहार और अन्य क्रियाएं पहले की तरह ही है।

धर्मशाला से खुद चलकर पहुंचा

सूरजभान सोमवार को खुद धर्मशाला से चलते हुए करीब 500 मीटर की दूरी तय कर मीडिया के पास पहुंचा। इस दौरान उसका हौंसला चरम पर था। उन्होंने ठेठ पंजाबी लहजे में अपने स्वास्थ्य को ए-वन बताया।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION TIMES OF INDIA, PAGE NO: 3 DATE 15.09.2015

1st heart transplant patient heads home

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: After 43 days of medication and monitoring by the doctors, first cadaver heart recipient of the state, 32-year-old Surajbhan walked out hale and hearty from Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Hospital on Monday.

It's a second life for him, gifted by a person much younger than him. All those interested in organ transplant were focused on Surajbhan's case for the past 43 days. Surajbhan got a new life and those suffering from heart ailments and require heart transplant got a new ray of hope. Surajbhan stayed in guest house near the hospital for 10 days in doctor's close watch before heading to his hometown Hanumangarh. He said, "I will assist my family in agricultural field after returning to my village," Surajbhan said. He was eager to meet his family and start his new life.

He was emotionally charged when he thanked cadaver donor 18-year-old Raju. "I am Raju first and then Surajbhan," he said.

The heart beating in Surajbhan's body was "gifted" to him by Raju's family. The 18-year-old was declared brain dead in the hospital after he had met with an accident. His family gave consent for Raju's cadaver organ donation to the hospital. The doctors harvested kidney, liver and heart from his body and transplanted heart to Surajbhan giving him a new life. "I thank Raju's family for giving me this precious life," Surajbhan said.

Surajbhan, the first cadaver heart recipient of the state, with doctors on Monday

Rajasthan's first heart transplant was conducted on August 2, 2015. He said, he is feeling normal and is walking for 30 minutes daily and doing all routine activities on his own. The doctors who conducted the surgery said Surajbhan will have to take medicines but he is fine and can lead a normal life. Surajbhan can walk without feeling any breathlessness.

स्वस्थ होकर घर गया राज्य का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट रोगी

अस्पताल से मिली छुट्टी सूरजभान बोला 'मैं पहले राजू हूं'

जयपुर,(कासं): राज्य के पहले हार्ट ट्रांसप्लांट रोगी सूरजभान को सोमवार को महात्मा गांधी अस्पताल से छुट्टी मिल गई। ऑपरेशन 2 अगस्त को किया गया था। यह ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा और अब वह स्वस्थ है। घर रवाना होने से पहले सूरजभान ने कहा कि मैं पहले राजू और बाद में सूरज हूं।

महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने कहा कि प्रदेश के लिए यह गौरव का विषय है कि यहां उत्तर भारत में निजी क्षेत्र के किसी अस्पताल में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट हुआ है।

साथ ही राज्य में पहली बार किसी कैडेवर देह के चार अंगों को हृदय, लिवर व दो किडनी की मदद से चार रोगियों को जीवनदान दिया गया है। उन्होंने कहा कि पहले प्रयास में मिली सफलता से टीम का मनोबल बढ़ा है तथा शीघ्र ही यहां लिवर प्रत्यारोपण भी किए जाएंगे। अस्पताल के चीफ हार्ट सर्जन डॉ. एम. ए. चिश्ती ने कहा कि पिछले दो सालों से लगातार की जा रही मेहनत का नतीजा है कि प्रत्यारोपण पूरी तरह सफल रहा। इसमें कैडेवर डोनर राजू के परिजनों के परिजनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही। इस मौके पर सूरजभान ने बताया कि ऑपरेशन से पहले मैं मौत की घड़ियां गिनता था किन्तु हार्ट प्रत्यारोपण के बाद मेरे जीवन को नई ऊर्जा मिली है। अब मेरी दिनचर्या पहले से नियमित हो गई है।

दैनिक भास्कर
आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAINIK BHASKAR, PAGE NO: 2 DATE 3.08.2015

बड़ी कामयाबी | पहला मौका, जब एक ब्रेन डैड डोनर से चार लोगों को मिली नई जिंदगी

प्रदेश में पहली बार हार्ट का सफल ट्रांसप्लांट

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

प्रदेश ने रविवार को मेडिकल साइंस में इतिहास रचा। राज्य का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट जयपुर में हुआ। 18 साल के युवक राजू का दिल 32 वर्षीय सूरजभान को लगाया गया। वाटिका (जयपुर) के पास बढवाली ढाणी निवासी राजू की दोनों किडनियां दो मरीजों को लगाई गई हैं। लिवर ट्रांसप्लांट के लिए दिल्ली भेजा गया है। राजू 31 जुलाई को सड़क हादसे में घायल हुआ था। महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया। शनिवार रात उसे ब्रेन डैड घोषित किया गया। हार्ट ट्रांसप्लांट इसी अस्पताल में हुआ। एनएचएम के अतिरिक्त मिशन निदेशक नीरज के. पवन की काउंसलिंग के बाद परिजन अंगदान को तैयार हुए।

3 अंग जयपुर में ट्रांसप्लांट, लिवर दिल्ली भेजा

हार्ट : छह डॉक्टरों की टीम, छह घंटे...और रचा इतिहास

हनुमानगढ़ के सूरजभान का हार्ट कमजोर हो चुका था। उनके एक वॉल्व का ऑपरेशन हो चुका है। दिल सिर्फ 10% काम कर रहा था। डॉक्टर्स के अनुसार उनके पास ज्यादा से ज्यादा एक महीने की जिंदगी थी। उनके राजू का दिल लगाने के लिए दोपहर दो बजे ऑपरेशन शुरू हुआ। छह डॉक्टरों ने छह घंटे तक ऑपरेशन किया...और प्रदेश ने हार्ट ट्रांसप्लांट का इतिहास रच दिया।

किडनी : दो में से एक ट्रांसप्लांट एसएमएस में

राजू की एक किडनी एसएमएस अस्पताल को भेजी गई। जहां डॉ. विनय तोमर के नेतृत्व में उसे शकुंतला देवी को लगाया गया। दूसरी किडनी उसी अस्पताल में बसंती को लगाई गई, जहां राजू भर्ती था।

लिवर : दिल्ली भेजने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया

राजू का लिवर ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दिल्ली के आईएलबीएस हॉस्पिटल भेजा गया। लिवर 3 घंटे में शाम 7:30 बजे दिल्ली पहुंचा। उसे मंगलवार को वहां किसी मरीज को ट्रांसप्लांट किया जाएगा।

बड़ी कामयाबी इसलिए...

- राज्य में यह पहला मौका रहा जब किसी ब्रेन डैड शख्स से चार लोगों को जीवन मिलेगा। अब तक ब्रेन डैड व्यक्ति के अंगदान से प्रदेश में तीन लोगों का जीवन बचाया गया।
- जयपुर में एसएमएस सहित तीन अस्पताल हार्ट ट्रांसप्लांट की तैयारी में जुटे थे। यह हार्ट ट्रांसप्लांट का पहला प्रयास रहा और सफल भी हुआ।

छोटी उम्र में बड़ा नाम कर गया राजू

राजू

हर पिता की तरह राजू के पिता सीताराम की भी ख्वाहिश थी कि वे बेटे की वजह से जाने जाएं। लुहार का काम करने वाले सीताराम कहते हैं- मुझे नहीं पता था वह पहचान ऐसी मिलेगी। कहता था बड़ा होकर बड़ा काम करूंगा, लेकिन अंदाजा भी नहीं था वह छोटी उम्र में ही हमारा इतना बड़ा नाम कर जाएगा।

अंजना बनी केरल की सबसे कम उम्र की डोनर

तीन साल की अंजना केरल की सबसे छोटी उम्र की डोनर बन गई है। अंजना खेलते समय घर में गिर गई थी। उसकी अस्पताल में मौत हो गई। दो किडनियां, लिवर व कॉर्निया 5 साल के एक लड़के को दे दी गई।

NEWS : **MAHATMA GANDHI HOSPITAL** PUBLICATION : SAMACHAR JAGAT - PAGE NO: 1 DATE 03.08.2015

राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट : राजू का दिल अब सूरजभान के शरीर में धड़केगा

चार व्यक्तियों को मिला जीवनदान

बसंती देवी व शकुंतला को मिली किडनी

लिवर भेजा ग्रीन कॉरिडोर के जरिए नई दिल्ली

जयपुर (कासं)। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने नया इतिहास रच दिया है। राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट महात्मा गांधी अस्पताल के कार्डियो सर्जन ने किया। राजस्थान की भूमि त्याग, वीरता व बलिदान के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और अब यहां के लोग दूसरों का जीवन बचाने के लिए आगे आकर अंगदान करने में रुचि दिखाने लगे हैं। वाटिका सांगानेर निवासी 18 वर्षीय राजू लुहार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था और पिछले कई दिनों से आईसीयू में भर्ती था। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों की टीम ने उसे ब्रेन डेड घोषित किया। वहीं उसके परिजनों को समझाइश की गई। परिजन रविवार को राजू के ऑर्गन डोनेट करने के लिए तैयार हो गए। महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती डायलिसिस पर चल रही बसंती देवी (45) निवासी वैशाली नगर के राज की एक किडनी प्रत्यारोपित की गई। दूसरी किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल भेज दी गई। जहां गुर्दा विभाग में डायलिसिस पर चल रही जयपुर निवासी शकुंतला (47) को डॉ. विनय तोमर व उनकी टीम ने दूसरी किडनी प्रत्यारोपित की है। राजू का लीवर नई दिल्ली के

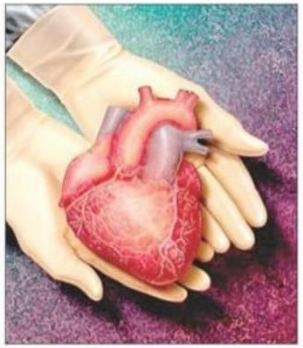

आईएलबीएस अस्पताल को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर भेजा गया। महात्मा गांधी अस्पताल को अभी हाल ही में हार्ट व लिवर ट्रांसप्लांट करने की सरकार की ओर स्वीकृति मिली है। लिवर का कोई भी मरीज प्रदेश में वेब रजिस्ट्री के जरिए रजिस्टर्ड नहीं था। इस कारण से महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने लिवर नई दिल्ली भेज दिया।

राजू का हार्ट हनुमानगढ़ निवासी 32 वर्षीय सूरजभान को प्रत्यारोपित कर दिया है। सूरजभान का हार्ट दस प्रतिशत काम कर रहा था। रविवार को उसके परिजनों को हार्ट प्रत्यारोपित करने के लिए कहा तो वह तुरंत राजी हो गए। यह ऑपरेशन महात्मा गांधी अस्पताल के हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. के.के. कुशवाह, डॉ. बुधादित्य चक्रवती व उनकी टीम ने हार्ट ट्रांसप्लान्ट करने में सफलता प्राप्त की है। चिकित्सा मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने महात्मा गांधी अस्पताल को राज्य में पहले हार्ट ट्रांसप्लांट की बधाई दी है। राठौड़ ने कहा कि हमारे चिकित्सों की मेहनत रंग लाई है और अब चेन्नई, नई दिल्ली, मुम्बई जैसे बड़े शहरों में मिलने वाली चिकित्सा सुविधाएं जयपुर में शुरू हो गई है।

राजस्थान पत्रिका

NEWS : **MAHATMA GANDHI HOSPITAL**
PUBLICATION : RAJASTHAN PATRIKA PAGE NO: 1 DATE 03.08.2015

राजू का दिल सूरजभान के सीने में धड़कने लगा

हृदय प्रत्यारोपण

राज्य का पहला सफल ऑपरेशन

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

राजस्थान के चिकित्सा इतिहास में रविवार का दिन स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। राज्य में पहली बार हृदय प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक कर दिया गया है। सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में बड़वाली ढाणी निवासी ब्रेन डेड राजू लौहार (18) के कैडेवर दान के बाद उसका हृदय हनुमानगढ़ जिले के जोरावरपुरा निवासी सूरजभान (32) को प्रत्यारोपित किया गया। अब राजू का दिल सूरजभान के सीने में धड़क रहा है। शाम 4.30 बजे से रात 10 बजे तक चले इस ऑपरेशन के सफल होने की पुष्टि अस्पताल प्रवक्ता ने कर दी है। मरीज अभी आईसीयू में है। अगले तीन दिन में पूरे नतीजे सामने आ जाएंगे। प्राथमिक तौर पर प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल माना गया है। महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एम. ए. चिश्ती के साथ ही डॉ. बुद्धादित्य चक्रवर्ती व टीम ने इस काम को अंजाम दिया। पढ़ें राजू@ पेज 11

राजू लौहार

कैडेवर दान के बाद राजू का शव ले जाते परिजन।

(डॉ. चिश्ती से बातचीत @ पेज 2)

दो को किडनी मिली, लीवर दिल्ली भेजा

बड़वाली की ढाणी के लौहार परिवार के त्याग और डॉक्टरों के कौशल से यह सफलता मिली है। साथ ही चार लोगों को जीवनदान मिला। सड़क दुर्घटना के बाद परिवार के लाडले बेटे राजू को शनिवार को ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया था। महात्मा गांधी अस्पताल में ही डॉ. टीसी सदासुखी के नेतृत्व में टीम ने बसंती देवी (वैशालीनगर) को एक किडनी प्रत्यारोपित की। वहीं दूसरी किडनी नियमानुसार सवाई मानसिंह अस्पताल में भेजी गई। यहां इसे तुरंत ही जयपुर की 43 वर्षीय महिला मरीज को प्रत्यारोपित किया। दोपहर बाद यातायात पुलिस की विशेष व्यवस्थाओं में ग्रीन कॉरिडोर में लीवर को आईएलबीएस (इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर एंड बिलियरी साइंसेज) दिल्ली भेज दिया गया।

फ्रैंडशिप-डे पर अनजान दोस्त का तोहफा

सूरजभान को गंभीर हृदय रोग था और फ्रैंडशिप डे के मौके पर सूरजभान के 'अनजान' दोस्त ने उसे तोहफे में नई जिंदगी ही दे डाली। प्रत्यारोपण के दौरान सवाई मानसिंह अस्पताल के विशेषज्ञों की टीम भी मौजूद रही।

3 साल की अंजना दे गई दूसरे को जिंदगी

तिरुवनंतपुरम @ पत्रिका . तीन साल की अंजना अंगदान करने वाली केरल की सबसे कम उम्र की डोनर बन गई है। अंजना का लीवर, किडनी और कॉर्निया अब से पांच वर्षीय लड़के को संजीवनी बनकर जीवन देंगे। केरल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में डॉक्टरों ने करीब छह घंटे चले मेजर ऑपरेशन के बाद अंजना के अंग नन्हे मरीज के शरीर में ट्रांसप्लांट करने में सफलता प्राप्त की।

दैनिक नवज्योति

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI, PAGE NO: 2 DATE 3.08.2015

प्रदेश में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट

राजू का दिल अब सूरज में

जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ सफल ऑपरेशन

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

सीतापुरा के महात्मा गांधी अस्पताल में दुर्घटना में घायल हो पहुंचे बाटिका निवासी मजदूर राजू (18) की मौत हो चुकी थी और हनुमानगढ़ निवासी सूरजभान (32) दिल खराब होने से अंतिम सांसें ले रहा था। लेकिन अस्पताल में पिछले छह माह के हार्ट ट्रांसप्लांट पर हो रहे अथक प्रयास रंग लाए। राजू का दिल निकालकर सूरजभान को लगाया गया।

राजू जिसने बचाई चार जिंदगियां

राजस्थान में पहली बार है, जब ब्रेन डेथ हो चुके मरीज का कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। डॉ. एमए चिश्ती के नेतृत्व में पांच घंटे चले हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद अब सूरजभान के लगाया गया राजू का दिल पूरी तरह ■ शेष पेज-7

"सूरजभान की पहले भी हार्ट सर्जरी हो चुकी थी, इसलिए हमारे लिए उसे नया दिल लगाना अत्यंत जटिल हो चुका था। लेकिन हमने कर दिखाया है। दिल बेहतर तरीके से काम कर रहा है। उम्मीद है कि 10 से 15 दिन में छुट्टी मिल जाएगी।

- डॉ. एमए चिश्ती (हॉर्ट ट्रांसप्लांट एक्सपर्ट)

"हमने शुरुआती तीन किडनी, हॉर्ट और लीवर निशुल्क ट्रांसप्लांट करने का फैसला किया था। अब तक 125 किडनियां हमारे यहां ट्रांसप्लांट हो चुकी है। छह माह पहले मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेन्टर की शुरुआत की थी। तभी से हॉर्ट ट्रांसप्लांट की जी-तोड़ मेहनत में हमारी टीम लगी थी। आज प्रयास रंग लाये। अब लीवर ट्रांसप्लांट की तैयारी है। अब राजस्थान में ही इन मरीजों को यह सेवाए दे सकेंगे।

- डॉ. एम.एल. स्वर्णकार, चेयरमैन, एवं मैनेजिंग ट्रस्टी महात्मा गांधी अस्पताल

यूं हुआ ट्रांसप्लांट

आईसीयू में भर्ती हनुमानगढ़ निवासी सूरजभान का दिल का केवल 10 फीसदी हिस्सा ही काम कर रहा था। परिजन उसकी जिंदगी की आस खो चुके थे। इसी बीच शनिवार को बाटिका के बडवाली की ढाणी निवासी राजू दुर्घटना में गंभीर घायल हो महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचा। अस्पताल में शनिवार रात उसे डॉक्टरों ने ब्रेन डेथ घोषित कर दिया। ■ शेष पेज-7

तीन और जिंदगियां बचाईं

महात्मा गांधी, एसएमएस में एक-एक मरीज को किडनी लगी

ग्रीन कॉरिडोर से दिल्ली भेजा लीवर, हाथों-हाथ हुआ ट्रांसप्लांट।

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

राजू के अपना दिल देकर केवल सूरजभान की ही जिंदगी नहीं बचाई, बल्कि तीन और टूटती सांसों को थामा है। उसकी दो किडनियां और लीवर भी अंगदान में निकालकर आज ही तीन मरीजों के लगा दिए गए। इनमें एक किडनी का ट्रांसप्लांट महात्मा गांधी ■ शेष पेज-7

आपसी कॉर्डिनेशन से सफल ट्रांसप्लांट

राजू का दिल, दो किडनी और एक लीवर को महात्मा गांधी अस्पताल के प्रशासन और चिकित्सा विभाग के राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अतिरिक्त निदेशक ■ शेष पेज-7

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : TIMES OF INDIA, PAGE NO: 2 DATE 37.08.2015

First heart transplant in state, 32-year-old farmer recipient

[illegible]@timesgroup.com

Jaipur: A farmer has become the first person to receive a heart transplant in the state. The state has created a history of sorts by saving lives of four persons through one cadaver organ donation. Two kidneys, liv-

SAVING 4 LIVES

er and heart of a brain dead person were harvested and

The donor's body being taken to the ambulance on Sunday

of Sanganer was declared brain dead at Mahatma

undergoing treatment for injuries he suffered in a road accident.

After being declared brain dead, his family was counseled and encouraged to donate his organs so that he would be able to save lives.

One of his kidneys was transplanted to a 45-year-old woman, a resident of Vaishali Nagar at MGMCH itself. Her kidneys failed and she was on dialysis for a

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट उपचारित से मिले मंत्री

जयपुर,(कासं): चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने शनिवार को महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचकर राज्य के प्रथम कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लान्ट से उपचारित रोगी सूरजभान से मुलाकात की। उन्होंने सूरजभान के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की और हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाली टीम को बधाई दी।

राठौड़ ने इस अवसर पर कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल ने कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लांट के राज्य सरकार के सपने को पूरा किया है।

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट उपचारित सूरजभान से मिलते चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़। (छायाः पंजाब केसरी)

कहा कि देश में कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाले चुनिंदा अस्पतालों में अब महात्मा गांधी भी शामिल हो गया है।

उन्होंने भरोसा जताया कि अब कैडेवरिक लीवर ट्रांसप्लांट भी जल्द ही हो सकेगा। इस मौके पर अस्पताल के चेयरमैन प्रोफेसर डॉ.एमएल स्वर्णकार, मैनेजिंग ट्रस्टी आरआर सोनी, वाइस चांसलर डॉ.डीपी पूनिया, प्रो.प्रेसीडेन्ट डॉ. सुधीर सचदेवा तथा प्राचार्य डॉ.जीएन सक्सेना भी उपस्थित रहे।

Health Minister Rajendra Rathore(2nd from left) meeting Surajbhan, the state's first cadaver heart transplant recipient on Saturday. —dna

Health min meets transplant patient

dna correspondent @jaipurdna

It was an emotional moment for state's health minister Rajendra Rathore who met state's first cadaver heart transplant recipient Surajbhan as he visited the Mahatma Gandhi Hospital on Saturday morning.

During the meeting, Rathore wished him long healthy life and speedy recovery. On the occasion, Rathore expressed his views and congratulated the team of doctors at Mahatma Gandhi Hospital which performed the operation. He also acknowledged hospital's management for making arrangements for the transplant on time.

Rathore in his address said that the hospital has taken up the initiative of Government of Rajasthan and visionary chief minister Vasundhara Raje and led the campaign of organ transplant in the state. "Doctors at the Mahatma Gandhi Hospital have performed the heart transplant successfully. It's a great success in the field of health care in state. We are proud of this achievement," said the minister amid a huge round of applause.

The minister became emotional when he met Surajbhan and said, "I have no words to describe this immaculate feat. I have seen life in the eyes of this heart transplant patient Surajbhan."

"Media is playing an important role in organ donation. It gives a positive impact in the society and develops the confidence in masses in status of healthcare services in state," Rathore said.

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : SAMACHAR JAGAT, PAGE NO: 5 DATE 14.08.2015

ब्रेन डेड के अंगदान से बचाई जा सकती हैं जान

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल ने किया जागरुकता कार्यक्रम का आगाज

जयपुर,(कासं)। विश्व अंगदान दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर की ओर से बुधवार को अंगदान जागरुकता कार्यक्र म आयोजित किया गया। इसमें राज्य में पहले किडनी तथा फिर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट करने वाले विशेषज्ञों ने अंगदान के महत्व को समझाया।

कार्यक्रम में अंग प्राप्तकर्ता रोगियों ने अंगदाताओं का आभार व सम्मान भी किया। राज्य में कै डेवर ट्रांसप्लाण्ट की शुरूआत करने वाले महात्मा गाँधी अस्पताल, जयपुर के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने कहा कि प्रदेश में ऑर्गन डोनेशन के लिए जागरुकता समय की आवश्यकता है।यदि आर्गन डोनेशन का वातावरण बनेगा तो ट्रांसप्लाण्ट केलिए प्रतीक्षारत लोगों को नया जीवन मिल सकता है। डॉ. स्वर्णकार ने कहा हर साल सैंकडों जाने चली जाती है। वहीं दूसरी ओर हार्ट, किडनी, आंख व लिवर आदि केप्त्यारोपण की प्रतीक्षा सूची लम्बी होती जा रही है। ऐसे में अंगदान करने से हर साल सैंकडों जानें बचाई जा सकती है।

महात्मा गांधी अस्पताल की अभूतपूर्व पहल पर एक कैडेवर देह से हाल ही में 4 जानें बचाई जा सकीं। महात्मा गांधी अस्पताल में हार्ट, किडनी तथा कॉर्निया प्रत्यारोपण किए जा रहे हैं तथा लिवर प्रत्यारोपण भी शीघ्र किया जाएगा।

अंगदान में महिलाएं आगे : राज्य में पहला कै डेवरिक ऑर्गन तथा किडनी ट्रांसप्लाण्ट करने का श्रेय हासिल करने वाले डॉ. टी.सी. सदासुखी ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल ने प्रदेश में पहला कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया। दो साल में एक सौ तीस किडनी ट्रांसप्लाण्ट कर लोगों को जीवनदान दिया गया है। उन्होंने बताया कि इनमें आठ मामले स्वैप प्रत्यारोपण के हैं। डोनर्स में 98 महिलाएं हैं तथा 32 पुरुष हैं। उन्होंने बताया कि अस्पताल में किए गए किडनी प्रत्यारोपण में अब तक सबसे अधिक अंगदान माताओं ने किया। अस्पताल में प्रत्यारोपित किडनी केएक सौ तीस मामलों में चालीस रोगियों को उनकी माताओं ने किडनी दान कर जीवनदान दिया है।

इकतीस मामलों में पत्नियों ने, अठारह मामलों में पिता ने, नौ मामलों में बहनों ने, छह मामलों में भाइयों ने, पांच पतियों ने पत्नियों के लिए अगदान किया। यहां तक कि चार मामलों में सास ने भी अंगदान किया तथा अन्य नजदीकी रिश्तेदारों ने अंगदान किए हैं। राज्य में कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट का सपना पूरा करने वाले महात्मा गांधी अस्पताल के मुख्य हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल में कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट जीवन में यह सबसे बड़ा सुखद अनुभव था कि जिस समय मैंने एक ब्रेनडैथ मरीज राजू का दिल निकालकर सूरजभान केलिए दिल में प्रत्यारोपित किया। जीवनदान सबसे बड़ा उपहार है।

मेडिकल हब के रूप में बन रही है राज्य की छवि

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल में जागरुकता कार्यक्रम

जयपुर,(कासं): विश्व अंगदान दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी एवं हॉस्पिटल में गुरुवार को जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर सिटीजन फोरम के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि राजस्थान की पहचान अब पर्यटन के साथ ही ऑर्गन ट्रांसप्लांट हब के रूप में होगी। यहां के अनुभवी चिकित्सक आधुनिक तकनीक के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। अरोड़ा ने बताया कि जयपुर सिटीजन्स फोरम ने पहल कर पिछले दो-तीन सालों से राज्य में अंगदान कार्यक्रम को आगे बढ़ाया है। समय के साथ-साथ नियम कायदे बने और आज राजस्थान कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाला देश का छठा राज्य बन गया है। यह श्रेय महात्मा गांधी अस्पताल ने प्रदेश को दिलाया है। महात्मा

जागरुकता कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि।

गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ.एम.एल. स्वर्णकार ने कहा कि हार्ट व किडनी प्रत्यारोपण के बाद हमारा अगला प्रयास लिवर प्रत्यारोपण का होगा। उन्होंने कहा कि एण्डोक्राइन टिश्यू ट्रांसप्लांट की सुविधाएं भी जुटाई जा रही हैं। इस अवसर महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट डॉ.डी.पी.पूनिया, प्रिंसीपल एडवाइजर डॉ.हरि गौतम, प्रो-प्रेसीडेंट डॉ.सुधीर सचदेव व प्रिंसीपल डॉ.जी.एन.सक्सेना ने भी सम्बोधित किया।

राजस्थान का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट करवाने वाले सूरजभान ने वर्ल्ड हार्ट डे के मौके पर सिटी भास्कर के साथ शेअर की ट्रांसप्लांट से संबंधित अपने दिल की बात।

मेरी धड़कन में राजीव, हमेशा हिफाजत करूंगा

CB SPECIAL

यासमीन सिद्दीकी • जयपुर

"घर में किसी को भी दिल की कोई बीमारी नहीं, लेकिन ना जाने कैसे मुझे ये बीमारी हुई। वॉल्व का पहला ऑपरेशन 12 साल की उम्र में करवाया। इतना छोटा था उस वक्त कि याद भी नहीं कि क्या सिमटम थे। ऑपरेशन के बाद ठीक भी हो ही गया था, लेकिन पिछले दो सालों से इस दिल ने फिर परेशान करना शुरू कर दिया था। हद तो ये थी कि रोजमर्रा के काम भी ढंग से नहीं कर पा रहा था। चलता था तो सांस फूलती थी। और लगता था कि ऐसी जिंदगी से क्या फायदा।

इसी साल अगस्त में जब अपना चैकअप करवाने अस्तपताल आया तो डॉक्टर्स ने ही मुझे बताया कि मेरा हार्ट 15 प्रतिशत ही काम कर रहा है। ऑपरेशन अब नहीं हो सकता था क्योंकि दिल में इतनी ताकत ही नहीं थी। फिर हार्ट ट्रांसप्लांट का विकल्प मेरे सामने आया। पहला ऑपरेशन होने वाला था इसलिए डर तो था ही, लेकिन 50 प्रतिशत ठीक होने की भी उम्मीद थी।

ऑपरेशन के बाद मुझे पता चला कि मेरे हार्ट डोनर का नाम राजीव है। मुझे नहीं पता था कि वो कैसा दिखता था। लेकिन हां अब हम दोनों में एक रिश्ता जुड़ चुका है। उसका दिल मेरे अंदर धड़कता है, और अब जाहिर है मुझ पर जिम्मेदारी भी ज्यादा है। इस दिल की हिफाजत करने की। वरना मेरा दिल तो बहुत ही कमजोर था। अब खुद के अंदर एक फुर्ती महसूस करता हूं। ऐसा लगता है जैसे जिंदगी दोबारा मिली है।

राजीव का दिल मेरे अंदर धड़कता है। कई सालों तक ये दिल राजीव के पास था और अब मेरे पास है। ऐसे में मेरे शरीर के साथ सहज होने में इसे वक्त तो लगेगा। धीरे-धीरे ही ये मुझसे दोस्ती करेगा। ऑपरेशन के बाद 40 दिन तक मुझे इंफेक्शन ना हो जाए इसलिए मुझे परिवार से भी दूर रखा गया था। मुझे अहसास है इस बात का कि आज अगर मैं सांस ले पा रहा हूं तो उसकी वजह कहीं ना कहीं राजीव है।

आज वो इस दुनिया में नहीं है, लेकिन मेरे जरिए उसका दिल तो धड़क रहा है। मेरे घरवाले तो राजीव के घरवालों से मिल चुके हैं। मेरा दिल भी बहुत है उनसे मिलने का। लेकिन फिलहाल इंफेक्शन के डर की वजह से नहीं जा सकता। लेकिन जब पूरी तरह ठीक हो जाऊंगा तो उनसे मिलने जरूर जाऊंगा।"

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI, PAGE NO: 3 DATE 15.09.2015

राजू का दिल लेकर सूरजभान पहुंचा घर

महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ था हार्ट ट्रांसप्लांट, शीघ्र होगा लीवर ट्रांसप्लांट

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल में पिछले महीने हुआ प्रदेश का पहला हार्ट प्रत्यारोपण ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा है। ह्रदय प्रत्यारोपण कराने के बाद सूरजभान अब पूरी तरह स्वस्थ होकर अपने घर लौट गया है। सोमवार को अस्पताल प्रशासन और चिकित्सकों ने सूरजभान को भावभीनी विदाई दी। इस अवसर पर महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टेक्नोलोजी के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने कहा कि राज्य के लिए यह गौरव का विषय है कि यहां उत्तर भारत में निजी क्षेत्र के किसी अस्पताल में पहला हार्ट ट्रांसप्लाण्ट हुआ है,। साथ ही राज्य में पहली बार किसी कैडेवर देह के चार अंगों को ह्रदय, लिवर व दो किडनी की मदद से चार रोगियों को जीवनदान दिया गया है। उन्होंने कहा कि पहले प्रयास में मिली सफलता से टीम का मनोबल बढ़ा है और शीघ्र ही लिवर प्रत्यारोपण भी किए जाएंगे। इस दौरान अस्पताल के चीफहार्ट सर्जन डॉ. एम. ए. चिश्ती भी उपस्थित थे।

सूरजभान को अस्पताल से छुट्टी मिलने के अवसर पर मौजूद चिकित्सक।

पहले मैं राजू हूं फिर सूरजभान

हार्ट ट्रांसप्लान्ट के बाद स्वास्थ्य लाभ ले रहे सूरजभान ने बताया कि मैं पहले 'राजू' हूं और पिर 'सूरजभान'। पिछले दिनों अस्पताल से छुट्टी होने के बाद मैं यहीं धर्मशाला में रह रहा था। ऑपरेशन से पहले मैं मौत की घड़ियां गिनता था लेकिन हार्ट प्रत्यारोपण के बाद मेरे जीवन को नई उर्जा मिली है। दिनचर्या अब पहले से नियमित हो गई है। सूरजभान ने बताया कि अभी कुछ दिनों तक वे आराम कर फिर से खेतीबाड़ी के अपने काम में जुटेंगे। उन्होंने कहा कि बहुत दिनों बाद नया जीवन पाकर अपने पूरे परिवार के पास पहुंच रहा हूं।

Dr Murtaza Chishti, a cardiac surgeon of a private hospital performed the first successful heart transplant of the state. He has been a heart surgeon since 1988. He had advanced training in heart surgery in some of the best centres of United States and Australia, including heart transplantation and artificial heart devices, before returning to India. He has more than 12,000 major heart surgeries to his credit. He has been given awards by the state government, CM of Kerala, Society for Heart Failure and Transplant (Sf HFT) and Association of Private Hospital and Nursing homes for contributions in field of transplantation. He does all sorts of complicated and high risk surgeries with world-class results.

THE TIMES OF INDIA

MATTER of HEART

WHY HEART TRANSPLANT IS NEEDED

After heart failure, the life of the patient becomes difficult as he cannot talk, sleep and do routine work properly. Fortunately, there are drugs available which can help the patient live for some years. But, there is a point when the patient reaches the end of the road. For such patients, the remedy is to get a heart transplant.

WHEN DOCTORS ADVISE FOR IT

When other treatment fails, the doctors assess how long the patient could stay alive in such a situation. The doctors advise for organ transplant when the life expectancy of the patient is less than one year.

HOW DOCTORS DECIDE IF PATIENT IS READY FOR ORGAN TRANSPLANT

The doctors conduct various tests to find out if the donor's heart is suitable for transplant to other patient who is suffering from a heart ailment. The doctors also check the blood group and body size of the donor and the receiver.

LEGALITIES INVOLVED IN TRANSPLANT

The heart of a brain-dead person can be transplanted to another patient only if the relatives (attendants) of both - the former and the latter - give their consent for the transplant. The Brain Death Declaration Committee declares a patient brain dead when it is 100% sure that there is no chance of survival of the patient. There should be zero chance of survival of the brain-dead person.

HOW HEART TRANSPLANT PROGRESSES

There are two teams: a heart retrieval team and a heart transplant team. The job of the retrieval team is to procure the organ. The transplant team prepares the recipient. The transplant team puts the recipient on the heart-and-lung machine temporarily. The donor's heart should be healthy. The transplant team reconfirms with the retrieval team before the operation about the health of the heart retrieved from the donor as the kind of work in which the transplant team is involved is not reversible.

HOW TO SAVE THE HEART AFTER BEING RETRIEVED

The doctors have only four hours to transplant the heart after it has been retrieved. If they fail to implant the heart into the recipient within four hours of retrieval, the heart goes waste and will not work after being implanted into the patient. During those four hours, the

doctors have to take care of the heart properly after retrieval. During these four hours, the doctors have to 'profuse the heart with blood'. There are five 'connections' in the heart which the transplant team has to connect with the recipient's body.

PRECAUTIONS AFTER SURGERY

Since heart implanted into a patient is a foreign body, there are chances of its rejection. The body's immunity rejects a foreign body. The doctors give anti-rejection drugs to prevent the body from rejecting the heart. But the problem is that anti-rejection drugs also expose the recipient to infections. So the doctors have to give drugs to prevent infections also. The doctors have to strike a balance by giving anti-rejection and anti-infection drugs to prevent rejection and infections.

(As told to **Syed Intishab Ali** by Dr MA Chishti, chief consultant cardiac surgeon, Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH), where the first heart transplant of the state was conducted on Sunday. He took the training of heart transplant in US and Australia.)

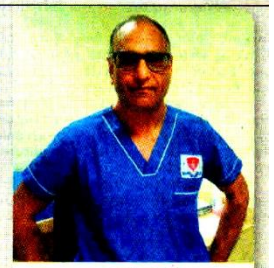

It was the first heart transplant headed by me. In the past 25 years, I have done more than 7,000 heart surgeries. So I did not feel intimidated. But I was slightly worried as it was a heart transplant surgery. I was thinking whether the heart would start working again. But the surgery was successful. The recipient has started walking and taking food. He is fine now. We have started the facility in the hospital. Now we will continue it whenever a patient needs heart transplant

DR MA CHISHTI
CHIEF CONSULTANT CARDIAC SURGEON, MGMCH

गुड न्यूज | बॉटम स्टोरी

ब्रेन डेथ व्यक्ति का दिल निकालकर सुरक्षित रखा

जयपुर प्रदेश में पहली बार ब्रेन डेथ व्यक्ति के शरीर से दिल को निकालकर उसे सुरक्षित रखा गया है। यही नहीं पहली बार ऐसा हुआ है कि राज्य में एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल तक अंग को सड़क मार्ग से ले जाया गया। महात्मा गांधी अस्पताल में दूसरी बार कैडेवरिक किडनी ट्रांसप्लांट किया गया है जिसमें एक गुर्दा अस्पताल के ही एक मरीज को लगाया गया है जबकि दूसरा गुर्दा सवाई मानसिंह अस्पताल में दान करके एक अन्य मरीज की जिंदगी बचाई गई है।

बताया जा रहा है कि मरीज के लीवर में सिरोसिस की बीमारी होने के चलते उसका लीवर ट्रांसप्लांट के योग्य नहीं है। वहीं हार्ट अरेस्ट होने की वजह से उसका दिल भी किसी अन्य मरीज के ट्रांसप्लांट नहीं किया जा सकता है। लेकिन उसके दिल के वाल्व का इस्तेमाल किया जा सकता है।

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल के किडनी ट्रांसप्लांट विभागाध्यक्ष डॉ. टीसी सदासुखी ने बताया कि विजयनगर के 33 वर्ष के किशनसिंह के ब्रेन हेमरेज होने की वजह से 21 जुलाई को अस्पताल में भर्ती किया गया। जांच में पाया कि उनका ब्रेन डेड हो चुका है। ब्रेन डेथ डिक्लेरेशन कमेटी ने उन्हें ब्रेन डेथ घोषित कर दिया। उसके बाद उनके परिजनों की कैडेवरिक ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए समझाइश की गई। इस पर मरीज की दोनों किडनी निकाली गई।

एक किडनी एसएमएस व दूसरी निजी अस्पताल में लगाई

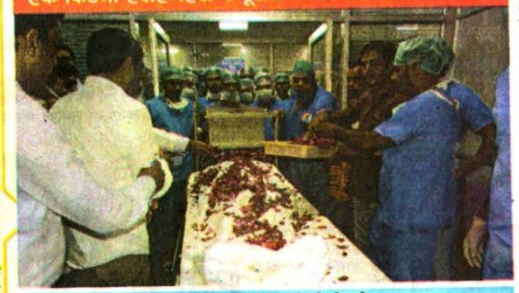

बारह साल से थी किडनी की बीमारी

अस्पताल में पिछले बारह साल से किडनी की बीमारी का इलाज करा रही चम्पा देवी (50) के एक किडनी लगाकर उन्हें नई जिंदगी दी गई है। वह डायलिसिस पर थी।

एसएमएस अस्पताल भेजी दूसरी किडनी

वहीं एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. यूएस अग्रवाल ने बताया कि दूसरी किडनी सुबह आठ बजे एसएमएस अस्पताल भेज दी गई। यह किडनी लेने के लिए अस्पताल के यूरोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. विनय तोमर की टीम पहुंची थी। इस टीम ने झुंझुनूं की 41 वर्षीय सीमा शर्मा के किडनी ट्रांसप्लांट किया है। सीमा पिछले एक वर्ष से डायलिसिस पर थी।

हार्ट वाल्व हो सकेंगे प्रत्यारोपित

अस्पताल के हृदय शल्य चिकित्सक डॉ. एम.ए.चिश्ती ने बताया कि वैसे तो हार्ट अरेस्ट होने की वजह से यह हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए सही नहीं पाया गया है। लेकिन उसके पल्मोनरी व एऑर्टिक वाल्व प्रत्यारोपित किये जा सकते हैं। इसलिए उसके दिल को निकालकर उसके सुरक्षित रखा गया है। अभी उसके दिल को चालीस दिनों तक एंटीबायोटिक्स में रखा जाएगा। यदि इस बीच कोई रिसीवर नहीं मिला तो इसे लिक्विड नाइट्रोजन में लंबे समय तक रखा जा सकेगा।

हार्ट ट्रांसप्लांट व टिशू बैंकिंग की भी मिली मंजूरी

महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रो. वाइस चांसलर डॉ. सुधीर सचदेव ने बताया कि अस्पताल को अब हार्ट ट्रांसप्लांट व टिशू बैंकिंग की मंजूरी भी मिल चुकी है। टिशू बैंकिंग का काम जल्द शुरू हो जाएगा। बीस जुलाई को अस्पताल को लिवर व हार्ट ट्रांसप्लांट की अनुमति राज्य सरकार से मिल चुकी है।

कैडेबर किडनी ट्रांसप्लांट पर चिकित्सा मंत्री की बधाई

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़ ने गुरूवार को एसएमएस अस्पताल को कैडेवर किडनी की सफलतापूर्वक ट्रांसप्लांट करने पर सवाई मानसिंह हॉस्पिटल के ट्रांसप्लांट में संलग्न सभी चिकित्सकों को बधाई दी है। श्री राठौड़ ने कहा कि कैडेवर ट्रांसप्लांट होने से लम्बे समय से प्रतीक्षारत रोगियों को जीवनदान मिल सकेगा। उन्होंने बताया कि देश में प्रतिवर्ष डेढ़ लाख किडनी की जरूरत होती है एवं 4 हजार किडनी ही प्रत्यारोपित की जाती है। उन्होंने बताया कि एसएमएस में गत वर्ष 40 किडनी ट्रांसप्लांट की गयी थी एवं इस वर्ष करीब 100 किडनी ट्रांसप्लांट करने की रूपरेखा है।

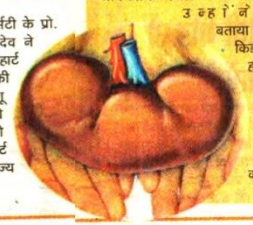

राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट : राजू का दिल अब सूरजभान के शरीर में धड़केगा

चार व्यक्तियों को मिला जीवनदान

बसंती देवी व शकुंतला को मिली किडनी

लिवर भेजा ग्रीन कॉरिडोर के जरिए नई दिल्ली

जयपुर (कासं)। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने नया इतिहास रच दिया है। राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट महात्मा गांधी अस्पताल के कार्डियो सर्जन ने किया। राजस्थान की भूमि त्याग, वीरता व बलिदान के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और अब यहां के लोग दूसरों का जीवन बचाने के लिए आगे आकर अंगदान करने में रुचि दिखाने लगे हैं। वाटिका सांगानेर निवासी 18 वर्षीय राजू लुहार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था और पिछले कई दिनों से आईसीयू में भर्ती था। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों की टीम ने उसे ब्रेन डेड घोषित किया। वहीं उसके परिजनों को समझाइश की गई। परिजन रविवार को राजू के ऑर्गन डोनेट करने के लिए तैयार हो गए। महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती डायलिसिस पर चल रही बसंती देवी (45) निवासी वैशाली नगर के राज की एक किडनी प्रत्यारोपित की गई। दूसरी किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल भेज दी गई। जहां गुर्दा विभाग में डायलिसिस पर चल रही जयपुर निवासी शकुंतला (47) को डॉ. विनय तोमर व उनकी टीम ने दूसरी किडनी प्रत्यारोपित की है। राजू का लीवर नई दिल्ली के

आईएलबीएस अस्पताल को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर भेजा गया। महात्मा गांधी अस्पताल को अभी हाल ही में हार्ट व लिवर ट्रांसप्लांट करने की सरकार की ओर स्वीकृति मिली है। लिवर का कोई भी मरीज प्रदेश में वेब रजिस्ट्री के जरिए रजिस्टर्ड नहीं था। इस कारण से महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने लिवर नई दिल्ली भेज दिया।

राजू का हार्ट हनुमानगढ़ निवासी 32 वर्षीय सूरजभान को प्रत्यारोपित कर दिया है। सूरजभान का हार्ट दस प्रतिशत काम कर रहा था। रविवार को उसके परिजनों को हार्ट प्रत्यारोपित करने के लिए कहा तो वह तुरंत राजी हो गए। यह ऑपरेशन महात्मा गांधी अस्पताल के हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. के.के. कुशवाह, डॉ. बुधादित्य चक्रवर्ती व उनकी टीम ने हार्ट ट्रांसप्लान्ट करने में सफलता प्राप्त की है। चिकित्सा मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने महात्मा गांधी अस्पताल को राज्य में पहले हार्ट ट्रांसप्लांट की बधाई दी है। राठौड़ ने कहा कि हमारे चिकित्सों की मेहनत रंग लाई है और अब चेन्नई, नई दिल्ली, मुम्बई जैसे बड़े शहरों में मिलने वाली चिकित्सा सुविधाएं जयपुर में शुरू हो गई है।

Leading with Love

Kashmir surgeon performs first cardiac transplant in Rajasthan

Published at August 05, 2015 12:19 AM

4Comment(s)16563views

Tweet Share 0

Junaid Kathju

Srinagar, Aug 04: A Kashmiri heart surgeon, Dr Murtaza Chishti, has performed the maiden heart transplant surgery in Mahatma Gandhi Medical College & Hospital (MGMCH) in Jaipur, Rajasthan.

Under the supervision of Dr Chisti, it was the first surgery of its kind in BJP-ruled Rajasthan and was also praised by State's Chief Minister Vasundra Raje and Health Minister Rajendra Rathore.

Talking to Rising Kashmir on phone from Jaipur, Chisti expressed his gratitude to his team and hospital

Dr M A Chishti was facilitated with state award for the First Heart Transplant in The Rajasthan

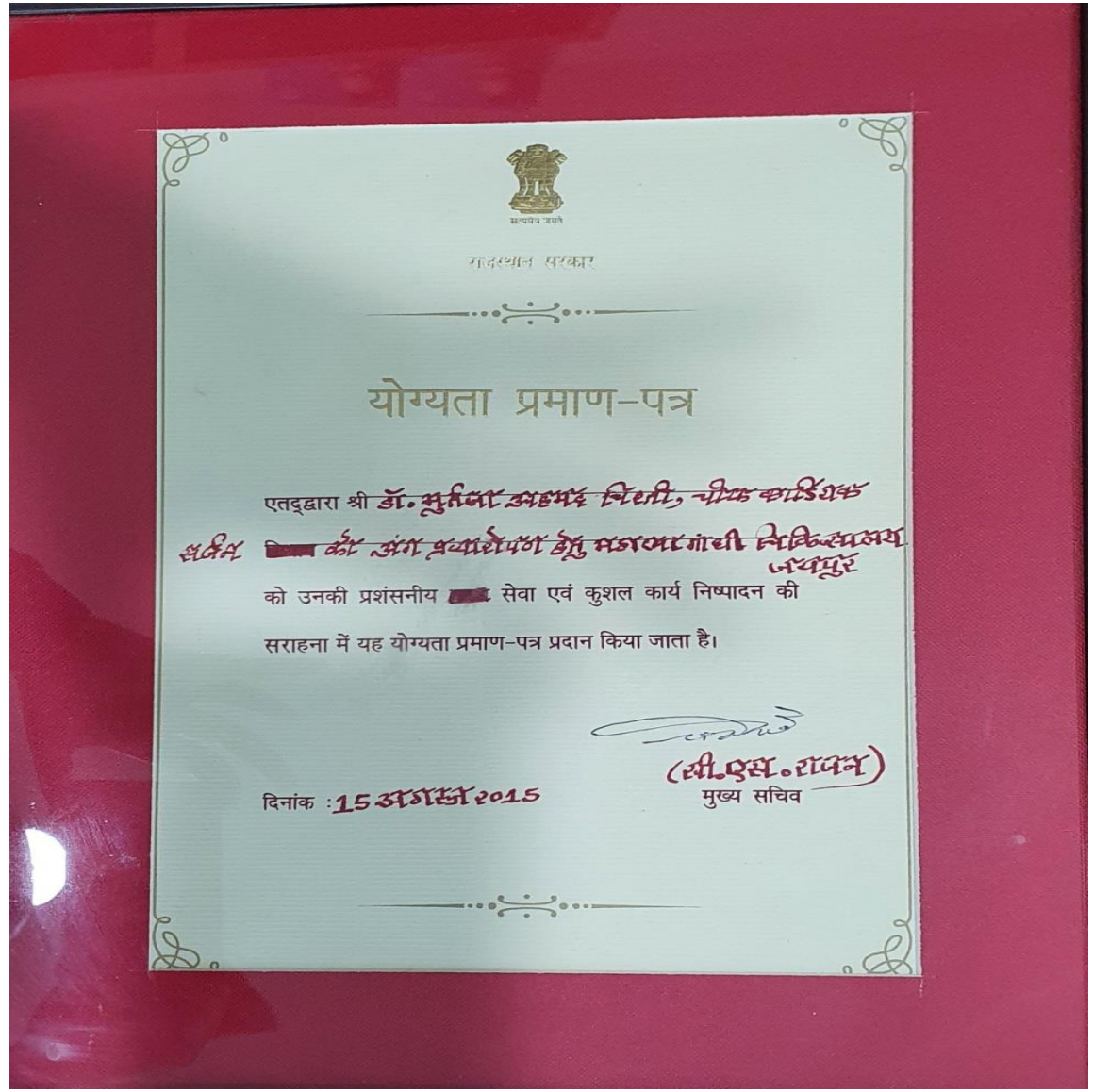

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

योग्यता प्रमाण-पत्र

एतद्द्वारा श्री डॉ. मुर्तजा अहमद चिश्ती, चीफ कार्डियक सर्जन [redacted] को अंग प्रत्यारोपण हेतु महात्मा गांधी चिकित्सालय जयपुर

को उनकी प्रशंसनीय [redacted] सेवा एवं कुशल कार्य निष्पादन की

सराहना में यह योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

(सी.एस. राजन)
मुख्य सचिव

दिनांक : 15 अगस्त 2015

Surajbhan (Heart Recipient) continue to lead his normal life after Heart Transplant

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI , PAGE NO: 2 DATE 13.08.2015

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल का जागरुकता कार्यक्रम

हार्ट के बाद अब जल्द होगा लीवर ट्रांसप्लांट

राजू के परिजनों को मिलेगा जीवनभर मुफ्त इलाज, पढ़ाई में भी मदद

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल में किडनी एवं हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद अब जल्द ही लीवर प्रत्यारोपण भी किया जाएगा। इसके लिए लीवर प्रत्यारोपण से पूर्व संसाधनों एवं अन्य सुविधाओं का विदेश एवं अन्य संस्थानों में चिकित्सकों की टीम भेजकर अध्ययन कराया जा रहा है। विश्व अंगदान दिवस से एक दिन पूर्व अस्पताल की ओर से आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने यह जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र में महात्मा गांधी अस्पताल हृदय प्रत्यारोपण करने वाला पहला अस्पताल बन गया है और राजस्थान देश का छठा राज्य बन गया है।

इस कार्यक्रम में अंगदान करने वाले और अंग प्रत्यारोपण कराने वालों के परिजन भी मौजूद थे। अंगदान करने वाले राजू के माता-पिता का इस अवसर पर सम्मान भी किया गया। अस्पताल में अब तक 130 से अधिक किडनी प्रत्यारोपण की जा चुकी है जिनमें तीन कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण की गई है। शेष परिजनों एवं अन्य द्वारा दान दी हुई किडनी प्रत्यारोपण की गई है।

कडनी देने वालों में सर्वाधिक 98 महिलाएं तथा 32 पुरुष शामिल है। कार्यक्रम में डॉ. टी. सदासुखी, डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. सूरज गोदारा आदि भी मौजूद थे।

सरकार से मिली आर्थिक मदद

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू के अंगदान के लिए परिजनों को चिकित्सा मंत्री की ओर से 51 हजार रुपए की आर्थिक मदद दी गई है और दो पट्टे भी अलॉट किए गए हैं। वहीं अस्पताल की ओर से राजू के परिजनों का मुफ्त इलाज करने और उसके भाई बहनों की पढ़ाई के लिए हर मदद की जाएगी।

प्रथम तीन ट्रांसप्लांट होंगे निःशुल्क

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल में प्रथम तीन हार्ट एवं किडनी का प्रत्यारोपण निशुल्क किया जाएगा और इसके बाद अंग प्रत्यारोपण पर ली जाने वाली राशि अन्य संस्थानों की तुलना में कम से कम ली जाएगी। डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू का दिल यहां अस्पताल में सूरजभान को लगाया गया जो अब स्वस्थ है। उन्होंने बताया कि अभी तक एमजीएच अस्पताल को किडनी, दिल, लीवर और टिश्यू प्रत्यारोपण की अनुमति मिली है और यहां लीवर का प्रत्यारोपण भी शीघ्र किया जाएगा। इसके अलावा अस्पताल की ओर से 10-12 अन्य अंगों के प्रत्यारोपण की भी अनुमति मांगी गई है जो शीघ्र मिलने की संभावना है।

एसएमएस में ट्रांसप्लांट की कछुआ चाल

मरीजों पर आर्थिक बोझ

सवाईमानसिंह अस्पताल में ऑर्गन ट्रांसप्लांट की कछुआ चाल रफ्तार निजी अस्पतालों में ट्रांसप्लांट कराने वाले मरीजों को आर्थिक दंश दे रही है। पैसों की कमी के बावजूद महंगे इलाज को मजबूर मरीजों को ट्रांसप्लांट के बाद भी महंगी दवाईयां अपना पेट काट लेनी पड़ रही है। महात्मां गांधी मेडिकल कॉलेज में कैडेबर और अपने रिश्तेदारों से किडनी ट्रांसप्लांट कराने के बाद मरीजों को नई जिंदगी तो मिल गई है लेकिन पैसों की तंगी ने उनकी इस राहत को फिलहाल आहत ही कर रखा है। ऐसे ही कुछ मरीजों से बातचीत की तो उनका यह दर्द सामने आया।

केस न. 1

अपने पति को किडनी दान करने वाली जयपुर के सोडाला निवासी सुनीता शर्मा ने बताया कि पति की किडनी खराब होने पर एसएमएस अस्पताल में इलाज के लिए गए। लेकिन यहां ट्रांसप्लांट को लेकर सिर्फ धक्के ही मिले। इस पर करीब आठ माह पहले महात्मां गांधी अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचे तो यहां किडनी ट्रांसप्लांट की आवश्यकता बताई। इस पर मैने अपने पति को किडनी दान करने फैसला किया। जैसे

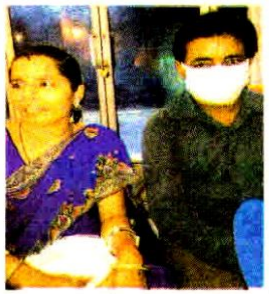

तैसे पैसे का जुगाड़ कर करीब पांच लाख रुपए में किडनी ट्रांसप्लांट के बाद अब दवाईयों आदि पर काफी खर्च होता है। अगर सरकार की ओर से निजी अस्पतालों में ट्रांसप्लांट कराने वाले गरीब मरीजों को भी आर्थिक सहायता मिले तो काफी मदद मिल सकती है।

केस न. 2

अलवर के गोविन्दगढ़ निवासी सन्यासी स्वामी प्रीतम सिंह ने बताया कि उनकी पत्नी मंजीत कौर ने उन्हें अपनी किडनी दान की है। 23 अप्रैल को यहां किडनी प्रत्यारोपित की गई। हालांकि किडनी ट्रांसप्लांट तो यहां सफलतापूर्वक हो गया लेकिन अब ताउम्र चलने वाली दवाईयों और

अन्य जरूरतों पर काफी पैसा खर्च होता है। अगर दवाइयां समय पर नहीं ली तो इंफेक्शन का खतरा बना रहता है। इसलिए सरकार से बीपीएल मरीजों की तरह आर्थिक रूप से पिछड़े मरीजों के लिए भी मदद की दरकार है।

Liver Transplant

State First Liver Transplant Performed At MGH, Jaipur

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

सफल रहा राज्य का पहला लिवर प्रत्यारोपण

DNA

Liver transplant patient recovering well: Docs

dna correspondent @jaipurdna

State's first liver transplant recipient, 26-year-old Hindaun City resident Sonu Jain, who was operated upon on November 28, is recovering at a good rate, doctors have said.

He was operated by a team of doctors from the Mahatma Gandhi Hospital, led by Dr Giriraj Bora, who has said that the patient is recovering well and that he would soon be sent home.

Dr Bora said, "On the fourth day post operation, the patient's blood pressure, sugar level, PT-INR, lactate, ABG and other vitals are found normal. He is attaining fast recovery."

DONOR'S KIDNEYS SAVED TWO LIVES

It was on the intervening night of November 27 that Manpal's liver, heart and both the kidneys were procured from his body. While Manpal's liver was given to Jain, his kidneys also saved two lives. The valves procured from his heart would also be used for saving someone's life in future. A team of 40 medics had performed the most critical surgery.

Speaking about the food that is being given to him, Dr Bora said, "Oral food including very light food and liquids, has already been started. He is being mobilised with the help of nursing attendants.

Dr Bora informed that medication for Hepatitis B has also been started to be administered in order to protect Sonu from existing Hepatitis B disease.

On the fourth day post surgery, the patient's BP, sugar level, PT-INR, lactate, ABG and other vitals are found normal. He is attaining fast recovery. A diet of light food and liquids has already been started.

GIRIRAJ BORA, chief liver transplant surgeon, MG hospital

He also appreciated the family members of the donor who have been constantly asking for Jain's health despite losing their own son in an accident.

"This miraculous success was only possible because of the family members of cadaver donor Manpal from Mahendragarh, Haryana. If it hadn't been for their large-heartedness, it wouldn't have been possible," Dr Bora added.

Manpal's kidneys also saved two lives while the valves procured from his heart would also be used for saving someone's life in future. A team of 40 medics had performed the most critical surgery.

लिवर प्रत्यारोपण रहा सफल, रोगी के स्वास्थ्य में सुधार

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में 28 नवम्बर को लिवर ट्रांसप्लाण्ट सर्जरी किया मरीज सोनू जैन ऑपरेशन के चौथे दिन बुधवार को सहारा लेकर चलने-फिरने लगा है। गौरतलब है राजधानी में लीवर ट्रांसप्लांट का यह पहला मामला है।

जयपुर, (कासं)। सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में गत 28 नवम्बर को लिवर ट्रांसप्लाण्ट सर्जरी करा चुके रोगी सोनू जैन ऑपरेशन के चौथे दिन बुधवार को सहारा लेकर चलने लगा है। चीफ लिवर ट्रांसप्लाण्ट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि रोगी के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो रहा है। उसने खाना-पीना शुरू कर दिया है। सहारा देकर उसे घुमाया भी जा रहा है। उसका ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल, पीटी-आईएनआर, लैक्टेट, एबीजी आदि सभी पैरामीटर्स सामान्य हो गये है। डॉ. बोरा ने बताया कि रोगी को दोबारा लिवर की खराबी से बचाने के लिए हेपिटाइटिस बी की दवाइयां भी शुरू कर दी गई हैं। सोनू अब मुस्कुरा रहा है तथा सामान्य रूप से बातचीत कर रहा है।

राजस्थान पत्रिका

अब चलने लगा सोनू

जयपुर. महात्मा गांधी अस्पताल में पहले लिवर प्रत्यारोपण वाले मरीज हिण्डौनसिटी निवासी सोनू जैन के स्वास्थ्य में सुधार है। प्रत्यारोपण करने वाले डॉ.गिरिराज बोरा ने बताया कि प्रत्यारोपण के 4 दिन बाद सोनू कुछ चलने लगा है। अस्पताल से जल्द छुट्टी दे दी जाएगी।

नेशनल दुनिया

लीवर ट्रांसप्लांट | महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ प्रत्यारोपण रहा सफल, रोगी स्वस्थ

खाने-पीने लगा सोनू, सहारा लेकर चला भी

नेशनल दुनिया

जयपुर। लिवर प्रत्यारोपण वाले सोनू के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो रहा है। अब वह खाने-पीने लगा है। बुधवार को सहारा लेकर वह चला भी। सोनू की सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में 28 नवम्बर को लिवर ट्रांसप्लांट सर्जरी की गई थी।

चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि रोगी तेजी से रिकवर कर रहा है। उसने खाना-पीना शुरू कर दिया है। सहारा देकर उसे घुमाया भी जा रहा है।

उसका ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल, पीटी-आईएनआर, लैक्टेट, एबीजी आदि सभी पैरामीटर्स सामान्य हो गये हैं। डॉ. बोरा ने बताया कि रोगी को दोबारा लिवर की खराबी से बचाने के लिए हेपेटाइटिस बी की दवाइयां भी शुरू कर दी गई हैं। सोनू अब मुस्कुरा रहा है तथा सामान्य रूप से बातचीत कर रहा है। पूरी तरह स्वस्थ होने पर उसे घर भेज दिया जायेगा।

लिवर ट्रांसप्लांट के बाद सोनू के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार

चौथे दिन ही मरीज की सभी जांचें सामान्य, जल्द मिल सकती है छुट्टी

जयपुर (मोन्यू)। हाल ही शहर के महात्मा गांधी अस्पताल में हुए राज्य के पहले कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट कराने वाले सोनू जैन अब स्वस्थ है और तेजी से रिकवरी कर रहा है।

विशेषज्ञ चिकित्सकों का कहना है कि जिस गति से रिकवरी हो रही है उससे सोनू को जल्दी ही उसे छुट्टी दी जा सकेगी।

अस्पताल में ट्रांसप्लांट टीम को लीड करने वाले डॉ.गिरिराज बोरा ने बताया कि ऑपरेशन के चौथे ही दिन मरीज का ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल, लेक्टेट, एबीजी सहित अन्य सब नॉर्मल पाया गया। उन्होंने बताया कि मरीज गति से रिकवर की ओर है।

गौरतलब है कि अस्पताल में सरकार की अनुमति पर पहले केडेवर लिवर ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया गया था जिसमें डोनर से मिले अंगों से तीन ट्रांसप्लांट एक साथ हुए थे। जिससे तीन नई जिंदगियां दी गई थीं। साथ ही चिकित्सा मंत्री ने भी खुशी जाहिर करते हुए ट्रांसप्लांट वाले मरीजों का इलाज फ्री करने की घोष की थी।

ले रहा ओरल फूड

डॉ. बोरा ने बताया कि सोनू ओरल फूड ले रहा है और नर्सिंग स्टॉफ बीच बातचीत में भी सामान्य हैपेटाइटिस बी डिजीज से बचाव के पहले ही मेडिसिन शुरू कर दी गई उन्होंने इस सफलता का श्रेय मेहरानगढ़ डोनर मनपाल और चिकित्सक विशे की टीम और राजस्थानवासियों दुआओं को दिया।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAILY NEWS , PAGE NO. 2 DATE 03.12.2015

लिवर ट्रांसप्लांट के बाद चलने लगा सोनू

जयपुर। सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में 28 नवंबर को लिवर ट्रांसप्लांट करा चुके रोगी सोनू जैन ऑपरेशन के पांचवें दिन बुधवार को सहारा लेकर चलने लगा है। चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि रोगी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। उसने खाना-पीना शुरू कर दिया है। सोनू अब मुस्कुरा रहा है तथा सामान्य रूप से बातचीत कर रहा है। उसे सहारा देकर घुमाया भी जा रहा है। उसका ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल सभी सामान्य है। डॉ. बोरा ने बताया कि रोगी को दोबारा लिवर की खराबी से बचाने के लिए दवाएं शुरू कर दी गई है।

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

दैनिक नवज्योति

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल का जागरुकता कार्यक्रम

हार्ट के बाद अब जल्द होगा लीवर ट्रांसप्लांट

राजू के परिजनों को मिलेगा जीवनभर मुफ्त इलाज, पढ़ाई में भी मदद

ब्यूरो/-नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल में किडनी एवं हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद अब जल्द ही लीवर प्रत्यारोपण भी किया जाएगा। इसके लिए लीवर प्रत्यारोपण से पूर्व संसाधनों एवं अन्य सुविधाओं का विदेश एवं अन्य संस्थानों में चिकित्सकों की टीम भेजकर अध्ययन कराया जा रहा है। विश्व अंगदान दिवस से एक दिन पूर्व अस्पताल की ओर से आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने यह जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर भारत में निजी क्षेत्र में महात्मा गांधी अस्पताल हृदय प्रत्यारोपण करने वाला पहला अस्पताल बन गया है और राजस्थान देश का छठा राज्य बन गया है।

इस कार्यक्रम में अंगदान करने वाले और अंग प्रत्यारोपण कराने वालों के परिजन भी मौजूद थे। अंगदान करने वाले राजू के माता-पिता का इस अवसर पर सम्मान भी किया गया। अस्पताल में अब तक 130 से अधिक किडनी प्रत्यारोपण की जा चुकी है जिनमें तीन कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण की गई है। शेष परिजनों एवं अन्य द्वारा दान दी हुई किडनी प्रत्यारोपण की गई है।

किडनी देने वालों में सर्वाधिक 98 महिलाएं तथा 32 पुरुष शामिल है। कार्यक्रम में डॉ. टी. सदासुखी, डॉ. एम.ए. चिश्ती, डॉ. सूरज गोदारा आदि भी मौजूद थे।

सरकार से मिली आर्थिक मदद

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू के अंगदान के लिए परिजनों को चिकित्सा मंत्री की ओर से 51 हजार रुपए की आर्थिक मदद दी गई है और दो पट्टे भी अलॉट किए गए हैं। वहीं अस्पताल की ओर से राजू के परिजनों का मुफ्त इलाज करने और उसके भाई बहनों की पढ़ाई के लिए हर मदद की जाएगी।

प्रथम तीन ट्रांसप्लांट होंगे निःशुल्क

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल में प्रथम तीन हार्ट एवं किडनी का प्रत्यारोपण निशुल्क किया जाएगा और इसके बाद अंग प्रत्यारोपण पर ली जाने वाली राशि अन्य संस्थानों की तुलना में कम से कम ली जाएगी। डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि राजू का दिल यहां अस्पताल में सूरजभान को लगाया गया जो अब स्वस्थ है। उन्होंने बताया कि अभी तक एमजीएच अस्पताल को किडनी, दिल, लीवर और टिश्यू प्रत्यारोपण की अनुमति मिली है और यहां लीवर का प्रत्यारोपण भी शीघ्र किया जाएगा। इसके अलावा अस्पताल की ओर से 10-12 अन्य अंगों के प्रत्यारोपण की भी अनुमति मांगी गई है जो शीघ्र मिलने की संभावना है।

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट उपचारित से मिले मंत्री

जयपुर,(कासं): चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने शनिवार को महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचकर राज्य के प्रथम कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लान्ट से उपचारित रोगी सूरजभान से मुलाकात की। उन्होंने सूरजभान के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की और हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाली टीम को बधाई दी।

राठौड़ ने इस अवसर पर कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल ने कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लांट के राज्य सरकार के सपने को पूरा किया है।

पहले हार्ट ट्रांसप्लांट उपचारित सूरजभान से मिलते चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़। (छायाः पंजाब केसरी)

कहा कि देश में कैडेवरिक हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाले चुनिंदा अस्पतालों में अब महात्मा गांधी भी शामिल हो गया है।

उन्होंने भरोसा जताया कि अब कैडेवरिक लीवर ट्रांसप्लांट भी जल्द ही हो सकेगा। इस मौके पर अस्पताल के चेयरमैन प्रोफेसर डॉ.एमएल स्वर्णकार, मैनेजिंग ट्रस्टी आर.आर. सोनी, वाइस चांसलर डॉ.डीपी पूनिया, प्रो.प्रेसीडेन्ट डॉ. सुधीर सचदेवा तथा प्राचार्य डॉ.जीएन सक्सेना भी उपस्थित रहे।

ब्रेन डेड के अंगदान से बचाई जा सकती हैं जान

विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल ने किया जागरुकता कार्यक्रम का आगाज

जयपुर,(कासं)। विश्व अंगदान दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर की ओर से बुधवार को अंगदान जागरुकता कार्यक्र म आयोजित किया गया। इसमें राज्य में पहले किडनी तथा फिर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट करने वाले विशेषज्ञों ने अंगदान के महत्व को समझाया।

कार्यक्रम में अंग प्राप्तकर्ता रोगियों ने अंगदाताओं का आभार व सम्मान भी किया। राज्य में कै डेवर ट्रांसप्लाण्ट की शुरूआत करने वाले महात्मा गाँधी अस्पताल, जयपुर के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने कहा कि प्रदेश में ऑर्गन डोनेशन के लिए जागरुकता समय की आवश्यकता है।यदि आर्गन डोनेशन का वातावरण बनेगा तो ट्रांसप्लाण्ट केलिए प्रतीक्षारत लोगों को नया जीवन मिल सकता है। डॉ. स्वर्णकार ने कहा हर साल सैंकडों जाने चली जाती है। वहीं दूसरी ओर हार्ट, किडनी, आंख व लिवर आदि केप्रत्यारोपण की प्रतीक्षा सूची लम्बी होती जा रही है। ऐसे में अंगदान करने से हर साल सैंकडों जानें बचाई जा सकती है।

महात्मा गांधी अस्पताल की अभूतपूर्व पहल पर एक कैडेवर देह से हाल ही में 4 जानें बचाई जा सकीं। महात्मा गांधी अस्पताल में हार्ट, किडनी तथा कॉर्निया प्रत्यारोपण किए जा रहे हैं तथा लिवर प्रत्यारोपण भी शीघ्र किया जाएगा।

अंगदान में महिलाएं आगे : राज्य में पहला कै डेवरिक ऑर्गन तथा किडनी ट्रांसप्लाण्ट करने का श्रेय हासिल करने वाले डॉ. टी.सी. सदासुखी ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल ने प्रदेश में पहला कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया। दो साल में एक सौ तीस किडनी ट्रांसप्लाण्ट कर लोगों को जीवनदान दिया गया है। उन्होंने बताया कि इनमें आठ मामले स्वैप प्रत्यारोपण के हैं। डोनर्स में 98 महिलाएं हैं तथा 32 पुरुष हैं। उन्होंने बताया कि अस्पताल में किए गए किडनी प्रत्यारोपण में अब तक सबसे अधिक अंगदान माताओं ने किया। अस्पताल में प्रत्यारोपित किडनी केएक सौ तीस मामलों में चालीस रोगियों को उनकी माताओं ने किडनी दान कर जीवनदान दिया है।

इकत्तीस मामलों में पत्नियों ने, अठारह मामलों में पिता ने, नौ मामलों में बहनों ने, छह मामलों में भाइयों ने, पांच पतियों ने पत्नियों के लिए अगदान किया। यहां तक कि चार मामलों में सास ने भी अंगदान किया तथा अन्य नजदीकी रिश्तेदारों ने अंगदान किए हैं। राज्य में कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट का सपना पूरा करने वाले महात्मा गांधी अस्पताल के मुख्य हार्ट सर्जन डॉ. एम.ए. चिश्ती ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल में कैडेवर हार्ट ट्रांसप्लाण्ट जीवन में यह सबसे बड़ा सुखद अनुभव था कि जिस समय मैने एक ब्रेनडैथ मरीज राजू का दिल निकालकर सूरजभान केलिए दिल में प्रत्यारोपित किया। जीवनदान सबसे बड़ा उपहार है।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : NATIONAL DUNIYA , FRONT PAGE DATE 29.11.2015

राज्य का पहला सफल लिवर ट्रांसप्लांट, वो भी नि:शुल्क

महात्मा गांधी अस्पताल ने किडनी और हार्ट कैडेवर ट्रांसप्लांट के बाद फिर रचा इतिहास, लिवर ट्रांसप्लांट करने वाला आठवां राज्य बना राजस्थान

नेशनल दुनिया

जयपुर। राज्य का पहला लिवर ट्रांसप्लांट ऑपरेशन सफलतापूर्ण करने के साथ ही महात्मा गांधी अस्पताल ने किडनी, हार्ट के बाद ऑर्गन ट्रांसप्लांट के क्षेत्र में इतिहास रच दिया है। इसी के साथ राजस्थान देश का आठवां लिवर ट्रांसप्लांट करने वाला राज्य बन गया। खास बात यह है कि अस्पताल प्रशासन ने यह ट्रांसप्लांट ऑपरेशन नि:शुल्क किया है। अब जल्द ही अस्पताल में लंग्स, यूट्रस, पेनक्रियाज ट्रांसप्लांट भी होने लगेंगे।

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में एक ब्रेन डेड मरीज ने तीन मरीजों को अपने अंग दान कर नई जिंदगी दे दी। इनमें एक को लिवर और दो मरीजों को किडनी ट्रांसप्लांट की गई। अस्पताल में शुक्रवार रात 11 बजे ऑर्गन निकाले गए और देर रात 2 बजे ऑपरेशन शुरू हुआ जो शनिवार सुबह 11 बजे सफलतापूर्ण संपन्न हुआ।

प्रदेश के पहले लिवर ट्रांसप्लांट ऑपरेशन की जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन एमएल स्वर्णकार। नेशनल दुनिया

पहले तीन लिवर और हार्ट ट्रांसप्लांट नि:शुल्क होंगे

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने शनिवार को मीडिया को बताया कि लिवर ट्रांसप्लांट के लिए हमने 15 लाख रुपए का खर्चा निर्धारित किया है। मगर पहला ऑपरेशन पूरी तरह मुफ्त किया गया। उन्होंने बताया कि अस्पताल में पहले तीन लिवर और हार्ट के ट्रांसप्लांट मुफ्त किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि पिछले एक साल से लिवर प्रत्यारोपण की तैयारियां चल रही थी जिसे अब कामयाबी मिली।

- हादसे में गंभीर घायल होने पर अस्पताल में भर्ती हुआ था हरियाणा का युवक
- 27 नवंबर को डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित किया
- परिजनों ने दी अंगदान की सहमति
- हिंडौनसिटी निवासी सोनू जैन को लगाया गया लिवर
- जरूरतमंद मरीज के लिए सुरक्षित रखे गए वॉल्व
- एक किडनी महात्मा गांधी अस्पताल के मरीज को और दूसरी एसएमएस अस्पताल के एक मरीज को प्रत्यारोपित

यूं मिला अंगदान करने वाला

हरियाणा के नारनौल का 34 वर्षीय धनराज (परिवर्तित नाम) पिछले दिनों सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल होने पर महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती हुआ था। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने 27 नवंबर को ब्रेन डेड घोषित किया। उसके परिजनों को समझाने पर उन्होंने अंगदान की सहमति दे दी। इसके बाद 27 नवंबर आधी रात बाद ऑपरेशन की तैयारी करके शनिवार सुबह तक धनराज का लिवर हिंडौनसिटी निवासी लिवर सिरोसिस से पीड़ित 25 साल के सोनू जैन के ट्रांसप्लांट कर दिया गया। ऑपरेशन के बाद सोनू ठीक है। धनराज की दो किडनियों में से एक महात्मा गांधी अस्पताल में और एक एसएमएस अस्पताल के मरीज में प्रत्यारोपित कर दी गई। वहीं हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए मरीज नहीं मिलने पर उसके वाल्व किसी जरूरतमंद मरीज को लगाने के लिए सुरक्षित रख लिए गए हैं। मीडिया से बातचीत के दौरान मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रो-प्रेजीडेंट डॉ. सुधीर सचदेव, सलाहकार डॉ. हरि गौतम, प्राचार्य डॉ. जी.एन. सक्सैना भी मौजूद थे।

देशी-विदेशी विशेषज्ञों की टीम जुटी रही

लिवर ट्रांसप्लांट के लिए महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा के नेतृत्व में विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम शनिवार सुबह तक ऑपरेशन में जुटी रही। इनमें अमेरिका के ट्रांसप्लांट एक्सपर्ट डॉ. क्रिस्टोफर बैरी, डॉ. मनोज मालू, डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. दुर्गा जेठवा, डॉ. विपिन गोयल शामिल थे।

अस्पताल में सभी तरह के ट्रांसप्लांट सस्ती दरों पर हों, हम इसके लिए प्रयासरत हैं। हमने 12-13 तरह के ट्रांसप्लांट की परमीशन सरकार से मांगी है, अभी चार की मंजूरी मिली है। जल्द ही लंग्स, यूट्रस व पेनक्रियाज के ट्रांसप्लांट भी किए जाएंगे। जनता को सस्ती दरों पर अत्याधुनिक तकनीक से इलाज देना हमारा उद्देश्य है।

डॉ. एम.एल. स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : TIMES OF INDIA , PAGE NO. 2 , DATE 19.12.2015

First liver transplant patient discharged

Thanks Donor Family For Saving Life

Intishab.Ali@timesgroup.com

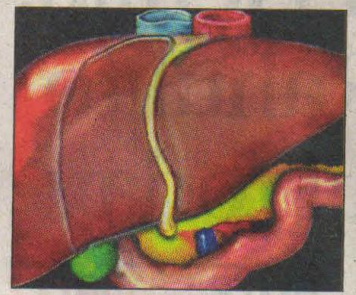

Jaipur: For Sonu Jain, the first cadaver liver transplant patient in the state, it was a new dawn on Friday. He was discharged from the hospital after 20 days of treatment, and couldn't control his emotions as he profusely thanked the donor's family for saving his life.

Sonu was suffering from hepatitis B, which had damaged his liver badly. The doctors had advised liver transplant as any delay could prove fatal for him. "I had severe stomach ache and could not bear the pain. I frequently fell unconscious before liver transplant. Now, I want to thank the family that donated the organ of their family member which helped me recovering from the disease," said 25-year-old Sonu, is a resident of Hindaun city, Karauli.

Sonu, who has a shop of disposable items in Hindaun said, "I will now take care of my shop and help my family." On November 27, family members of a 36-year-old brain dead patient gave their consent to harvest organs like heart, kidneys and liver. These were then transplanted in patients who needed the vital parts, one of the recipients was Sonu.

"The patient is now physically fit and all his test parameters are normal including bilirubin, PT-INR, SGOT/SGPT, BP and blood sugar," said Dr Giriraj Bora, chief liver transplant surgeon, Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH).

He said that now Sonu can lead a normal life. "When he came to us he could not even walk. He had water retention due to liver cirrhosis. But post-transplant he can lead a normal life. Within a year, the medicines he is taking for hepatitis B will not be needed. He will have to take one medicine in the morning and one in the evening. But, he will have to take precautions to ward off any risk of infection," said Dr Bora.

Dr ML Swarnkar, chairman of MGMCH said that that they initially started with cadaver kidney transplant. Later they also performed heart transplant and now liver transplant has also been conducted successfully. "Our effort is to provide such facilities in the state so that no one has to go to another state for high-end procedures," said Dr Swarnkar.

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : RAJASTHAN PATRIKA (BEAWAR), AJMER

PAGE NO. 1 , DATE 18.12.2015

सवा तीन सौ रोगी लाभान्वित

निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा व परामर्श शिविर, पांच असहाय हृदय रोगियों की ट्रस्ट की ओर से कराई जाएगी बाईपास सर्जरी

मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर के दौरान जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के विशेषज्ञ चिकित्सक। पत्रिका

ब्यावर. महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर के सहयोग तथा विकास मंडल ट्रस्ट ब्यावर के तत्वावधान में छावनी मार्ग स्थित अश्विनी हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेंटर में गुरुवार को निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा व परामर्श शिविर में रोगियों की भीड़ उमड़ी। शिविर में लगभग 325 मरीजों को लाभान्वित किया गया। महात्मा गांधी अस्पताल के मार्केटिंग निदेशक वीरेन्द्र पारीक व विकास मंडल ट्रस्ट के अध्यक्ष महावीर लोढ़ा ने बताया कि शिविर में हृदय शल्य चिकित्सक डॉ. अजय मीणा, न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. गौरव गोयल, यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. एच.एल. गुप्ता व एंडोक्रोनोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. राजीव कासलीवाल ने सेवाएं दी। शिविर में रोगियों की ईसीजी, ब्लड शूगर, ब्लड प्रेशर की जांच निःशुल्क की गई। ट्रस्ट की ओर से पांच असहाय हृदय रोगियों का बाईपास सर्जरी के लिए चयन किया गया। शिविर में श्रीकृष्ण भारद्वाज, कुशलचंद मेड़तवाल, नौरतमल माहेश्वरी, जबरचंद कोठारी, मुरलीधर शर्मा आदि ने सहयोग प्रदान किया।

महंगा नहीं हैल्दी खाएं

शिविर के दौरान स्वास्थ्य को लेकर बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में बताते हुए चिकित्सकों ने कहा कि मंहगा नहीं हैल्दी खाए। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की बीमारी के प्रारम्भिक जानकारी के साथ ही चिकित्सक से सलाह ले लें। डॉ. राजीव कासलीवाल ने कहा कि भारत में शुगर के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले दस सालों में ग्रामीण क्षेत्र में भी इस बीमारी से ग्रस्त लोगों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। महावीर लोढ़ा ने सभी का आभार जताया।

Medical milestone: Raj conducts its 1st liver transplant

40 Doctors Take 10 Hours To Conduct Op

Intishab.Ali @timesgroup.com

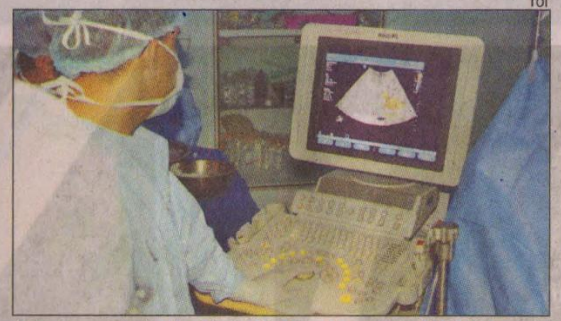

TOI

A doctor conducts a test during the liver transplant at Mahatma Gandhi Hospital in the city on Saturday

Jaipur: The first liver transplant in the state gave a new lease of life to 25-year-old Suresh (name changed) who was suffering from liver cirrhosis. The surgery was performed consuming only three units of blood. Some surgeries exhaust 25-30 units of blood. Post-surgery, the doctors of Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) looked happy on Saturday. They claimed that the condition of the recipient of first cadaver liver transplant was satisfactory.

The cadaver liver transplant is always a challenging job for the doctors. "It took more than 10 hours for the doctors to complete the liver transplant," said Dr ML Swarankar, chairman, MGMCH.

Suresh was at the third spot on the waiting list. But he was lucky as the first person on the waiting list refused for the surgery. The cross-matching of HLA and other test reports didn't favour surgery for the second person on the waiting list. When doctors contacted Suresh for cadaver liver transplant, he gave his nod and luckily various tests results showed that the operation could be done.

Earlier, after conducting certain tests necessary for transplant, the doctors started harvesting the organs from the donor at around 11.30 pm on Friday. The doctors started the liver transplant at 3 am on Saturday. The operation continued till 11.30 am on Saturday.

Since, such an operation was happening for the first time, the hospital authorities took all the precautions.

"A team of 40 doctors conducted the surgery which took more than 10 hours," Dr Swarankar said.

"We followed all the guidelines of Organ Transplant Act during the operation," he said. The doctors completed the surgery at 11 am on Saturday. "The blood pressure of the patient is normal. Also, his urine output is normal. We are satisfied with the progress so far," said Dr Giririj Bora who spearheaded the first liver transplant of the state. Dr Bora said that the next 5 to 10 days are important for the patient. "The patient had enlarged blood vessels due to cirrhosis. Also, blood clotting was not normal. There was fluid retention (edema) in abdomen and chest area. He was having difficulty in walking. He required liver transplant as his condition was quite bad," Dr Bora said.

After the surgery, the doctors shifted the patient to a three-bedded ICU meant for postoperative care of liver transplant patients. The recipient belongs to Hindaun City. Dr Bora said that the patient was fighting a battle for life. The ultimate treatment available for him was liver transplant. The number of such patients is quite high in the country. He said that the patient might have contracted viral infection during infancy which damaged his liver. Dr Giriraj Bora has an experience of conducting more than 1,400 liver transplants in Delhi. Most of the liver transplants he conducted were live liver transplants in which an alive donor gives a portion of liver to the recipient.

Efforts to find recipient for cadaver heart go in vain

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: The massive search launched to find a recipient for the heart harvested from the brain dead person went in vain as the private hospital could not find any. The hospital found no "taker" for the harvested heart.

The family of the 36-year-old brain dead person had donated organs — liver, heart and kidneys on Friday evening. The private hospital — Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) - found recipients for liver and kidneys.

"We checked with heart patients, but no one expressed consent for the heart transplant," said Dr ML Swarankar, chairman, MGMCH.

Now, the hospital has harvested two valves of the harvested heart to utilise them. "The two valves can be used in patients who need them after the green signal of microbiologists," said Dr MA Chisti who had conducted the first heart transplant in the state in August this year.

He said that a heart should be transplanted to a patient within four hours of being harvested from a brain dead donor. The hospital claimed that they had informed the government through mails about the unavailability of recipient of heart and also if government could find any in other states.

Also, the hospitals also tried to find the recipient in Delhi, Mumbai, Chennai etc but all efforts went in vain.

In August, the doctors of the same hospital had transplanted the first heart harvested from a brain dead person. The heart was transplanted in a patient whose heart was functioning only 10% of the capacity. The patient is doing well now. He is fine.

42-year-old Alwar woman, on dialysis for 10 mths, gets new life

Jaipur: The organs of a 36-year-old brain dead person have not only helped the doctors to conduct the first cadaver liver transplant of the state, but also gave a new lease of life to a 42-year-old woman who was on dialysis for the past 10 months. Her surgery was conducted at Sawai Man Singh Hospital where she was undergoing dialysis on a regular basis. The organs were harvested from the brain dead person at Mahatma Gandhi Hospital.

As per norms, the private hospital sent one kidney to the government hospital for transplant. The 42-year-old woman, who is a resident of Alwar district, was lucky as her human leukocyte antigen (HLA) matched with the donor's.

"The surgery was successful, and now she is recovering and taking post-operative treatment at the hospital," said Dr Ajit Singh, additional superintendent, SMS Hospital. "The woman has no donor in her family. She was given preference on the basis of waiting-list of recipients. The patient is fine now. She belongs to the BPL category. So far at SMS Hospital, seven kidney transplants have been conducted, including today's surgery," said Dr Vinay Tomar, head, transplant programme.

Nephrologists say that in case of kidney failure, the doctors put the patient on a dialysis but kidney transplant is the only best possible treatment available for such patients. Health minister Rajendra Rathore expressed solidarity with the family of brain-dead person. Besides, the minister announced free treatment of the first 11 cases of cadaver transplants. TNN

Docs to perform live brain surgery

Ajay Parmar | TNN

Jodhpur: Jodhpur will soon have the facility of endoscopic brain surgery. As a dress rehearsal, the neurosurgery department here is going to organise a live brain surgery through endoscopy, currently available only in SMS Hospital, which too is in a nascent stage, on a couple of patients with skull base tumour and slip disk on Monday.

Terming it to be a major achievement in neurosurgery, principal of S N Medical College Amilal Bhat said that as a part of the ongoing golden jubilee celebrations, the department of neurosurgery is going to hold a live surgery workshop followed by a CME 'Endoscopic Pituitary Surgery' on Monday, which will be performed by eminent neurosurgeon B S Sharma (HOD, neurosurgery, AIIMS, New Delhi), who is also the president of the Neurological Society of India.

Bhat further said that soon after this, endoscopic surgeries would begin in Jodhpur. "We already have a budget sanction of Rs 3 crore for arranging the required equipment, which would be available here soon and now we would send the doctors for training," he said.

HOD (neurosurgery) Sunil Garg said that through endoscopic surgeries of brain, not only time of surgery but recovery time would also be reduced significantly. Besides, the risk to brain would also come down.

In a normal surgery, doctors take 3 to 4 hours followed by 10-11 days of recovery time for patients, but with the endoscopic procedure, the surgery time will reduce to about 1 hour and recovery period would be around 2-3 days.

Garg said, "earlier, we had to open the skull in order to enter the brain, but with this procedure, we will just put the endoscope through the nostrils and reach the operative part without having any need to touch the brain".

Currently, only 5-7 surgeries are conducted by the department here, with many patients making their way to Ahmedabad or other big cities for surgery.

"With this technique becoming available here in a few months, we look forward not only to a spurt in the number of surgeries but also arrest in the trend of going to big towns, which costs the patients a fortune," said associate professor Sharad Thanvi.

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : HINDUSTAN TIMES , PAGE NO. 3 DATE 29.11.2015

A first: Cadaver liver transplanted in state

MEDICAL LANDMARK A 25-year-old cirrhosis patient from Hindaun received the liver of an accident victim from Haryana

HT Correspondent
htraj@hindustantimes.com

A doctor shares details of the successful cadaver liver transplant surgery to the media in Jaipur on Saturday. HT PHOTO

JAIPUR: A private hospital in Jaipur conducted the first ever cadaver liver transplant surgery in Rajasthan on Saturday.

Dr Giriraj Bora, chief liver transplant surgeon at the Mahatma Gandhi Medical College and Hospital, said 25-year-old Sonu Jain of Hindaun, who was suffering from liver cirrhosis and was admitted at the hospital, required immediate liver transplant.

Two days ago, a man named Manpal (34), a resident of Mahendragarh in Haryana, met with a road accident and was admitted to the same hospital here.

On Friday, Manpal was declared brain dead and his family members agreed to donate his organs after they were counselled at the hospital, said Dr Bora.

He said the surgery, which started at 11.30pm on Friday, involved retrieving liver from the brain-dead patient and a subsequent transplantation procedure, which started at 2.30 am and was completed by 10.30 am on Saturday.

Dr Bora, who has an experience of conducting 1,400 liver transplants, said a 40-member team of doctors made the complex surgery successful. Generally, in liver cirrhosis, the blood vessels get enlarged and the blood does not clot. The surgery requires at least 30 units of blood.

However, due to the expertise of the team, the transplant was completed by using only three units of blood, he added.

Dr Bora said the post-care surgery is very important and the hospital boasts of facilities which are at par with international standards.

"At present, the patient is in a separate ICU and will be shifted to general ward after 4-5 days. His blood pressure and other body functions are normal," he added.

Dr ML Swarnkar, chairman of the hospital, said, "Apart from the liver, we had also retrieved kidneys from the brain-dead patient. While one was used for a transplant at the hospital, the other was sent to the Sawai Man Singh hospital. As there were no takers for the heart, we retrieved the two valves and kept them in nitrogen solution for future use."

> At present, the patient is recuperating in a separate intensive care unit (ICU) room and will be shifted to general ward after four-five days. His blood pressure and other body functions are normal...
>
> DR GIRIRAJ BORA, transplant specialist

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAINIK BHASKAR , PAGE NO. 2 DATE 29.11.2015

हार्ट लेने वाला मरीज नहीं मिलने से हार्ट ट्रांसप्लांट टला, दोनों वाल्व सुरक्षित रखे गए हैं...स्पेशलिस्ट टीम का दावा- ट्रांसप्लांट सफल रहा है

10 सर्जन, 12 घंटे और कर दिया पहला लिवर ट्रांसप्लांट

जयपुर. 12 घंटे, 10 सर्जन और 20 ज़नों की मेडिकल टीम ने राजस्थान को शुक्रवार-शनिवार की रात पहले लिवर ट्रांसप्लांट की सौगात दी। महात्मा गांधी हॉस्पिटल में ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया 1400 लिवर ट्रांसप्लांट कर चुके ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने। हिंडौनसिटी के सोनू जैन को लिवर लगाया गया। अगले सात दिन में लिवर ट्रांसप्लांट की सफलता तय होगी। सर्जरी टीम का दावा है कि ट्रांसप्लांट सुरक्षित रहा है। मरीज को लगाया गया लिवर बेहतर तरीके से काम करेगा। लिवर डोनेट करने वाले हरियाणा के महेंद्रगढ़ में मुलोददी गांव के मनपाल की एक किडनी एसएमएस अस्पताल में ऊषा शर्मा को लगाई गई। एक अन्य किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में ही राजेश के ट्रांसप्लांट की गई।

हार्ट के लिए रिसिपिएंट नहीं मिला · हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया- हार्ट के लिए रिसिपिएंट (हार्ट लेने वाला मरीज) नहीं मिला। एक मरीज को हार्ट लगाए जाने की जरूरत थी लेकिन परिजनों ने सर्जरी से मना कर दिया। वे दवाओं पर निर्भर रहना चाहते थे। हार्ट के दोनों वाल्व को सुरक्षित रखे गए हैं। जैसे ही हार्ट पेशेंट (जिसे हार्ट वाल्व की जरूरत हो) मिलेंगे, उन्हें मनपाल के हार्ट वाल्व उसे लगाएं जाएंगे।

हर माह 10 हजार तक का खर्चा स्पेशलिस्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि लिवर ट्रांसप्लांट के बाद मरीज को हर माह करीब आठ-दस हजार रुपए दवाइयों पर खर्च करने पड़ते हैं। प्रत्यारोपित लिवर बेहतर काम करे और इंफेक्शन नहीं हो, इसके लिए दवाएं उम्र भर ही लेनी पड़ती हैं। रातभर चले ऑपरेशन के बाद मरीज की स्थिति ठीक है। उसे मॉनीटर कर रहे हैं। ट्रांसप्लांट सफल रहा है। सात दिन बाद ट्रांसप्लांट की सफलता का पक्का पता चल जाएगा।

फ्री करेंगे शुरू के सभी तीन ट्रांसप्लांट

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल शुरू के सभी तीन ट्रांसप्लांट फ्री करेगा। किडनी के भी तीन फ्री किए गए। अब हार्ट और लिवर के दो-दो ट्रांसप्लांट निशुल्क किए जाएंगे। इसके बाद भी किए जाने वाले ट्रांसप्लांट की कीमत अन्य अस्पतालों की तुलना में आधी से भी कम होगी।

टीम के सदस्य
डॉ. मनोज मालू, डॉ. सुभाष नेपालिया, लोकेश जैन, डॉ. क्रिस्टोफर बेरी, डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. विपिन गोयल, डॉ. दुर्गा जेठवा व अन्य।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI , PAG. NO. 2 DATE 29.11.2015

जिंदा व्यक्ति से लिवर लेकर ट्रांसप्लांट ज्यादा मुश्किल : डॉ

■ पोस्ट केयर यूनिट को बताया ट्रांसप्लांट के बाद सबसे अहम ■ अब तक कर चुके हुए 1400 से ज्यादा लिवर ट्रांसप्लांट

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

लीवर ट्रांसप्लांट की सर्जरी सबसे जटिल सर्जरी में से एक है। इस सर्जरी में सबसे ज्यादा रक्तस्त्राव होता है इसलिए यह सर्जरी एक चुनौती है। यह कहना है प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट करने वाले और चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा का। डॉ. बोरा ने दैनिक नवज्योति को दिए अपने विशेष साक्षात्कार में अपने अनुभव साझा किए और ट्रांसप्लांट से जुड़ी चुनौतियों और जरूरतों पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. बोरा अब तक 1400 से ज्यादा लीवर ट्रांसप्लांट चुके हैं।

डॉ. गिरिराज बोरा

■ ट्रांसप्लांट की आवश्यकता कब होती है ?

■ जब किसी मरीज का लिवर डेमेज हो जाता है और वह दवाइयों से ठीक नहीं हो सकता हो तब उसे ट्रांसप्लांट की आवश्यकता पड़ती है। डॉक्टरों की सलाह पर सही समय पर उसे ट्रांसप्लांट के लिए तैयार कर लिया जाए तो मरीज का ट्रांसप्लांट सफल हो सकता है। डोनर से लिवर लेकर उसे कम से कम समय में ट्रांसप्लांट करना जरूरी है वहीं अधिकतम छह से सात घंटे में लीवर को लगा देना चाहिए।

■ कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट करने में सबसे जरूरी चीज क्या है ?

■ कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट में सबसे जरूरी चीज तो ब्रेन डेड डोनर का होना है। इसके बाद विशेषज्ञ टीम का होना है। इसके बाद अस्पताल में लीवर ट्रांसप्लांट के लिए जरूरी सभी तरह की सुविधाएं होना भी जरूरी है। बिना विशेषज्ञ टीम और सुविधाओं के ट्रांसप्लांट संभव नहीं है। लिवर सबसे अधिक सहनशील अंग माना जाता है। इसलिए इस अंग को लगाने में केवल ब्लड ग्रुप जांच ही करानी पड़ती है। टिश्यू मैच जांच की इसमें कोई जरूरत नहीं पड़ती।

■ सुविधाएं क्या क्या होनी जरूरी है ?

■ ट्रांसप्लांट के बाद सबसे ज्यादा जरूरी है इंफेक्शन से मरीज को बचाने के लिए पोस्ट केयर यूनिट का होना। इस यूनिट में सेपरेट लिवर ट्रांसप्लांट आईसीयू बेहद अहम है। जिसमें ट्रांसप्लांट के तुरंत बाद मरीज को रखा जाता है।

■ पोस्ट केयर यूनिट कितना महत्वपूण है और मरीज को इसमें कितना समय तक रखा जाता है ?

■ ट्रांसप्लांट के बाद मरीज को इंफेक्शन से बचाने के लिए पोस्ट केयर यूनिट में रखा जाता है। यहां मरीज को उसकी रिकवरी के हिसाब से पांच से सात दिन तक गहन निगरानी में रखा जाता है।

■ क्या ट्रांसप्लांट के बाद सामान्य जीवन जी सकता है ?

■ हां, ट्रांसप्लांट के बाद मरीज सामान्य व्यक्ति की तरह ही जीवन जी सकता है।

■ अमेरिका जैसे देशों और भारत में अभी सुविधाओं में कितना फर्क है ?

■ हालांकि अभी भारत में सुविधाएं अमेरिका जैसे देशों के मुकाबले कम हैं लेकिन अब यहां सुविधाओं का धीरे धीरे विस्तार हो रहा है। महात्मा गांधी अस्पताल में अमेरिका स्टैण्डर्ड की सुविधाओं के चलते ही ट्रांसप्लांट संभव हो सका है।

■ इस सर्जरी में सबसे ज्यादा रक्तस्त्राव होता है। अमूमन कितने ब्लड की जरूरत

■ इस सज होता है सबसे ज इस सज ब्लड क जो सर्ज कुशलत 3 यूनि

■ इस स

■ यहां के की गई लिया ग सर्जरी से 30

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : SAMACHAR JAGAT , PAGE NO. 1 DATE 29.11.2015

चिकित्सा इतिहास में नई सफलता

शुक्रवार रात 2 बजे शुरू हुआ ऑपरेशन शनिवार सुबह 10 बजे तक चला

जयपुर में हुआ प्रदेश का पहला लीवर ट्रांसप्लांट

जयपुर, न.सं.। प्रदेश के चिकित्सा इतिहास में शनिवार का दिन उपलब्धियों भरा रहा। लंबे इंतजार के बाद आखिरकार राज्य का पहला लीवर प्रत्यारोपण जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में सफलता पूर्वक हो गया है। महात्मा गांधी अस्पताल ने इससे पहले हार्ट ट्रांसप्लांट का सफल ऑपरेशन भी किया जा चुका है। रात 2 बजे शुरू हुआ ऑपरेशन आज सुबह 10 बजे तक चला। करीब आठ घंटे चली सर्जरी के बाद लीवर ट्रांसप्लान्ट सर्जन्स ने एक 26 वर्षीय लीवर फेल्योर युवक के शरीर में लीवर प्रत्यारोपित कर उसे नया जीवन प्रदान किया। दुर्घटना में घायल महेन्द्रगढ़ हरियाणा निवासी मनपाल के ब्रेन डेथ के बाद दिए गए चार अंगों में से एक लीवर का ट्रांसप्लान्ट महात्मा गांधी अस्पताल में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। करीब आठ घंटे तक चली सर्जरी के बाद लीवर ट्रांसप्लान्ट विशेषज्ञो के दल ने करौली जिले के हिण्डौन निवासी 26 साल के युवक सोनू जैन के शेष पृष्ठ 4 पर

डा. गिरिराज बोहरा चीफ लीवर ट्रान्सप्लान्ट सर्जन

महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ लीवर ट्रान्सप्लान्ट सर्जन डा. गिरिराज बोहरा ने बताया कि प्रदेश में लीवर की गम्भीर बीमारी से प्रभावित लोगों की संख्या बहुत अधिक है। सड़क दुर्घटनाओं में ब्रेनडेड रोगियों द्वारा अंगदान किए जाने से काफी जानें बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन की सफलता महात्मा गांधी अस्पताल में उपलब्ध दुनिया की आधुनिक तकनीक, अनुभवी विशेषज्ञों की टीम, प्रशिक्षित नर्सिंग कर्मियों तथा तकनीशियनों की टीम होने पर रही। उन्होंने कहा कि दुनिया में सर्वश्रेष्ठ लीवर, पेन्क्रियाज व बाइल डक्ट सम्बन्धित बीमारियों की सेवाएं महात्मा गांधी अस्पताल में सबसे कम दरों पर हो रहा है।

इनका कहना है

चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने अंगदान करने वाले परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए इसे आर्गन ट्रान्सप्लान्ट के इतिहास में एक नया अध्याय बताते हुए परिवारजनों की प्रशंसा की तथा ट्रान्सप्लान्ट करने वाले चिकित्सक दल को बधाई दी। उन्होंने प्रथम 11 कैडेवरिक ट्रान्सप्लान्ट होने वाले मरीजों के निःशुल्क इलाज की घोषणा की है।

राजेन्द्र राठौड़
चिकित्सा मंत्री, राजस्थान सरकार

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAILY NEWS , PAGE NO. 2 DATE 29.11.2015

प्रदेश में पहला लिवर ट्रांसप्लांट

शहर के निजी अस्पताल में निशुल्क हुआ ट्रांसप्लांट, मरीज के वाइरल ऑर्गन की रिपोर्ट सामान्य

40 सदस्यीय टीम, साढ़े दस घंटे में ट्रांसप्लांट

दो हार्ट व दो लिवर प्रत्यारोपण और होंगे फ्री

अगला लक्ष्य हैंड व यूटरस ट्रांसप्लांट

सिटी रिपोर्टर

जयपुर ▷ 28 नवंबर

डॉक्टरों व नर्सेज सहित 40 सदस्यों की टीम के अथक प्रयास और साढ़े दस घंटे की मेहनत के बाद आखिरकार प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट हो गया। ट्रांसप्लांट सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में निशुल्क किया गया। अस्पताल में अभी हार्ट व लीवर के दो-दो ट्रांसप्लांट और निशुल्क होंगे। ब्रेन डेथ कैडेवर अंगदाता से मिले अंगों से तीन मरीजों को नया जीवन मिला है। उधर, चिकित्सा मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने पहले 11 कैडेवरिक ट्रांसप्लांट होने वाले मरीजों के निशुल्क इलाज की घोषणा की है। लिवर ट्रांसप्लांट के बाद हिंडौन सिटी के सोनू के वाइटल ऑर्गन की रिपोर्ट सामान्य है।

अंगदाता के लीवर व दोनों किडनी भी ट्रांसप्लांट की जा

लीवर ट्रांसप्लांट करते चिकित्सक।

टीम में ये शामिल

चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा, ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ. क्रिस्टोफर बैरी और डॉ. मनोज मालू, गेस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ. सुरेश भार्गव, एनेस्थिसिया विशेषज्ञ डॉ. दुर्गा जेठवा व डॉ. विपिन गोयल।

रिस्पांड का पता 4-5 दिन में

प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट करने वाले डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि सोनू लीवर सिरोसिस से पीड़ित था। अब उसे पोस्ट ऑपरेटिव केयर यूनिट और संक्रमण मुक्त एनवायर्नमेंट में रखा गया है। उसका ब्लड प्रेशर भी सामान्य है। उसे इम्यूनोसप्रेसेंट दवाएं दी जा रही है, ताकि उसका शरीर लिवर को रिजेक्ट न करे। सोनू का शरीर लिवर को लेकर कैसा रिस्पांड कर रहा है, उसका पूरा पता चार-पांच दिन में चलेगा। इस सर्जरी में सबसे अधिक रक्तस्राव होने से रक्त की ज्यादा आवश्यकता पड़ती है, लेकिन इसमें तीन यूनिट रक्त की आवश्यकता पड़ी।

हार्ट के लिए संपर्क

ये सर्जरी भी जल्द

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अब अस्पताल का ट्रांसप्लांट के क्षेत्र में अगला लक्ष्य हैंड व यूटरस ट्रांसप्लांट है। जल्द ही इन दोनों की सर्जरी की जाएगी।

ऐसे हुई सर्जरी

डॉ. बोरा ने बताया कि शुक्रवार रात 11:30 बजे लिवर को निकालने की प्रक्रिया शुरू की गई। लिवर दो बजे तक निकाला जा सका। उसके बाद करीब तीन बजे लिवर हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया शुरू की गई, जो शनिवार सुबह 10 से 11 बजे के बीच तक चली।

थोड़ा प्रेशर तो था ही : डॉ. बोरा

जयपुर। अभी तक 1400 लिवर ट्रांसप्लांट कर चुका हूं। एक वर्ष के बच्चे तक का लिवर ट्रांसप्लांट किया है। हर सर्जरी में जटिलताएं होती है, क्योंकि यह सबसे अधिक जटिल सर्जरी मानी जाती है। यह प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट था, इसलिए थोड़ा प्रेशर तो था ही, लेकिन अनुभव व टीम वर्क ने साथ दिया। यह कहना है प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट करने वाले डॉ. गिरिराज बोरा का। जयपुर से ताल्लुक रखने वाले डॉ. बोरा ने जेएलएन मेडिकल कॉलेज से पढ़ाई की है।

उन्होंने बताया कि अस्पताल में लिवर ट्रांसप्लांट के लिए बनाई गई पोस्ट ऑपरेटिव केयर यूनिट अमेरिकन स्टैंडर्ड के हिसाब से है। ऑपरेशन थियेटर से जुड़ा तीन बेड का लिवर ट्रांसप्लांट आईसीयू, व इसके अलावा लिवर, पैनक्रियाज व बाइल डक्ट आईसीयू बनाया गया है।

20 देशों के मरीज आते हैं

डॉ. बोरा ने कहा कि भारत में 18 वर्ष पहले दिल्ली में लिवर ट्रांसप्लांट किया गया था। लिविंग लिवर ट्रांसप्लांट यानी जिंदा व्यक्ति से लिवर का हिस्सा लेकर मरीज में लगाने की प्रक्रिया कैडेवरिक लिवर ट्रांसप्लांट से अधिक जटिल होती है। 20 देशों के मरीज भारत में लिविंग लिवर ट्रांसप्लांट के लिए आते है। लिवर

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : RASTRADOOT , PAGE NO. 3 DATE 29.11.2015

जयपुर में हुआ पहला सफल लीवर प्रत्यारोपण

- हिण्डौन निवासी सोनू जैन के किया लीवर प्रत्यारोपित
- दो अन्य मरीजों के किड़नी भी लगाई

जयपुर,(कासं)। प्रदेश का पहला लीवर प्रत्यारोपण शनिवार को जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ। करीब आठ घंटे चली सर्जरी के बाद लीवर ट्रांस्प्लान्ट सर्जन्स ने एक 26 वर्षीय लीवर फेल्योर युवक के शरीर में लीवर प्रत्यारोपित कर उसे नया जीवन प्रदान किया।

हरियाणा के रहने वाले 24 वर्षीय मनपाल सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। उसे यहां भर्ती कराया गया था। उसकी ब्रेन डेथ होने के बाद परिजनों ने उसके अंगों का दान कर दिया।

इससे पहले अस्पताल में पिछले एक साल से लीवर ट्रांसप्लाट की तैयारियां चल रही थी। ब्रेन डैड कैडेवर डोनर मिलने पर इसे अंजाम दिया गया।

डॉ. गिरिराज बोहरा ने बताया कि करीब दस घंटे तक चली सर्जरी के बाद लीवर ट्रांसप्लान्ट विशेषज्ञो के दल ने करौली जिले के हिण्डौन निवासी 26 साल के युवक सोनू जैन के लीवर प्रत्यारोपित कर दिया। इस युवक को काफी समय से लीवर फेल्योर के चलते लीवर प्रत्यारोपण की दरकार थी। लीवर ट्रांसप्लान्ट में अमेरिका के डॉक्टर क्रिस्टोफर बैरी, डॉ मनोज मालू, डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. दुर्गा व डॉ. विपिन और स्थानीय लीवर ट्रांसप्लान्ट सर्जन डॉ गिरिराज बोहरा शामिल रहे।

कैडेवर डोनर की दो किडनियों में से एक अस्पताल में कैडेवर रेसीपिएंट्स की वरीयता के आधार पर सांगानेर निवासी राजेश (30) को लगाई गई।

वहीं दूसरी किडनी एसएमएस अस्पताल में नेफ्रोलॉजी विभाग में भर्ती 45 वर्षीय उषा को सफलता पूर्वक लगाई गई।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : PUNJAB KESARI , PAGE NO. 4 DATE 29.11.2015

मनपाल के लीवर ने बचाई सोनू की जान

राज्य का पहला कैडेवरिक लीवर ट्रांसप्लांट सफल

कैडेवर लीवर का ट्रांसप्लांट करते चिकित्सक।

जयपुर,(कासं): महात्मा गांधी अस्पताल ने चिकित्सा के क्षेत्र में एक बार फिर इतिहास रच दिया है। यहां पहले कैडेवर किडनी और हार्ट ट्रांसप्लांट के बाद अब पहला कैडेवर लीवर ट्रांसप्लांट भी सफलता पूर्वक किया गया है। ऑपरेशन शुक्रवार देर रात शुरू होकर शनिवार सुबह 10 बजे तक चला। लीवर के साथ ही कैडेवर डोनेशन से दो किडनियां भी प्राप्त हुई है, जो दो मरीजों को लगा दी गई। कैडेवर से प्राप्त अंगों से तीन लोगों को नया जीवन मिल सका है। इसके साथ ही प्रदेश में अब लीवर ट्रांसप्लांट की राह खुल गई है।

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल में पिछले एक वर्ष से लीवर प्रत्यारोपण की तैयारियां चल रही थी, जिसे अब कामयाबी मिली। उन्होंने बताया कि ब्रेन डैड कैडेवर डोनर मनपाल से मिला, लीवर हिण्डौनसिटी के रहने वाले 25 साल के सोनू जैन को प्रत्यारोपित किया गया। मनपाल सड़क दुर्घटना में घायल हुआ था, जिसने उपचार के दौरान यहां अस्पताल में दम तोड़ दिया। अस्पताल के चीफ लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि लीवर सिरोसिस से प्रभावित रोगी सोनू पिछले कई दिनों से जिन्दगी और मौत से जूझ रहा था। उसका अंतिम उपचार लीवर प्रत्यारोपण ही था। जिसे ब्रेन डैड कैडेवर डोनर मनपाल का लीवर लगा कर दिया गया। उन्होंने बताया कि ऑर्गन डोनेशन की सहमति के बाद एचएलए टाइपिंग जैसी जांचों की क्रॉस मैचिंग सैम्पल दिल्ली भेजे गए। रिपोर्ट्स आने के बाद देर रात करीब 3:30 बजे ऑपरेशन शुरू किया गया, जो दस घण्टे चला। ऑपरेशन में डॉ. क्रिस्टोफर बैरी, डॉ. मनोज मालू, गैस्ट्रोएन्ट्रालोजिस्ट डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ. सुरेश भार्गव, एनेस्थेटिस्ट डॉ. दुर्गा जेठवा व डॉ. विपिन गोयल का सहयोग मिला।

दोनों किडनियां भी प्रत्यारोपित

मृतक मनपाल से प्राप्त दो किडनियां भी दो अलग-अलग मरीजों को प्रत्यारोपित की गई। एक किडनी एसएमएस में भर्ती उषा (42) को लगाई गई, जहां डॉ. विनय तोमर के नेतृत्व में डॉ. एस एस यादव, डॉ. नीरज अग्रवाल, डॉ. नचिकेत, डॉ. वर्षा, डॉ. निशा का सहयोग रहा। वहीं दूसरी किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती प्रताप नगर सांगानेर निवासी राजेश (30) को लगाई गई।

शराब का सेवन लीवर खराबी का कारण

विशेषज्ञों के मुताबिक प्रदेश में लीवर की गंभीर बीमारी से प्रभावित रोगियों की संख्या बहुत अधिक है। सड़क दुर्घटनाओं में ब्रेन डैड रोगियों की ओर से अंगदान किए जाने पर इनकी जान बचाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि हैपेटाइटिस बीमारी व शराब के अधिक सेवन से लीवर के खराब होने की संभावना अधिक होती है। यदि समय पर उपचार शुरू कर दिया जाए, तो इसे बचाया जा सकता है।

एसएमएस में तैयारियां ही पूरी नहीं हो पा रहीं

एसएमएस अस्पताल में लीवर ट्रांसप्लांट से जुड़ी तैयारियां पिछले करीब एक साल से जारी हैं, लेकिन यह अमलीजामा नहीं पहन पा रही। इधर महात्मा गांधी एक के बाद एक इतिहास रचता चला जा रहा है। चिकित्सा मंत्री ने बहुत पहले एसएमएस में जल्द ही लीवर ट्रांसप्लांट होने का दावा किया था, जो फैल साबित हुआ।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : RAJASTHAN PATRIKA , PAGE NO. 2 DATE 29.11.2015

10 घंटे में रचा इतिहास } महात्मा गांधी अस्पताल में प्रदेश का पहला लिवर प्रत्यारोपण सफल

रात 2 बजे लिवर निकाला, 12 बजे दूसरे को लगा दिया

अंगदान प्रत्यारोपण के क्षेत्र में तेजी से कदम बढ़ा रहे जयपुर शहर ने शुक्रवार देर रात 2 बजे से शनिवार दोपहर 12 बजे के बीच एक बार फिर इतिहास रच दिया। कुछ महीने पहले हुए हृदय प्रत्यारोपण के बाद इस बार पहला लिवर प्रत्यारोपण भी सफल रहा। इस बार भी केन्द्र था सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल।

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

जैसे ही नई दिल्ली से दानदाता मनपाल और जरूरतमंदों के क्रॉस मैचिंग नमूनों की रिपोर्ट मिली, लिवर प्रत्यारोपण विशेषज्ञों की टीम प्रत्यारोपण के लिए सक्रिय हो गई। ठीक 2 बजे पहला प्रत्यारोपण शुरू कर दिया गया। मनपाल की एक किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में तो दूसरी सवाई मानसिंह अस्पताल में प्रत्यारोपित की गई। लिवर सिरोसिस से पीड़ित हिंडौनसिटी निवासी सोनू को लिवर प्रत्यारोपित किया गया।

प्रत्यारोपण के हीरो...

मुख्य लिवर सर्जन **डॉ.गिरीश बोरा**

अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ **डॉ.क्रिस्टोफर बैरी**

एक साथ 3 ऑपरेशन थियेटर में 3 मरीजों को मिली जिंदगी

ऑपरेशन थियेटर में प्रत्यारोपण करते डॉक्टर्स

4 चरणों में मिली सफलता

1. शुक्रवार दोपहर 12 बजे परिजनों ने दी सहमति
2. रात 11.30 बजे क्रॉस मैचिंग नमूनों की रिपोर्ट मिली
3. शुक्रवार रात 2 बजे पहला लिवर प्रत्यारोपण शुरू
4. शनिवार दोपहर 12 बजे प्रत्यारोपण पूरा हुआ

इन्हें लगाई किडनियां

महात्मा गांधी अस्पताल के यूरोलोजी विशेषज्ञ डॉ. टी.सी. सदासुखी, नेफ्रोलोजिस्ट डॉ.सूरज गोदारा और डॉ.मनीष शर्मा ने अस्पताल में भर्ती राजेश (25) को किडनी प्रत्यारोपित की।

दूसरी किडनी एसएमएस अस्पताल के नेफ्रोलोजी विभाग में भर्ती बीपीएल मरीज उषा (45) को प्रत्यारोपित की गई। यहां प्रत्यारोपण डॉ.विनय तोमर, डॉ.एस.एस.यादव, डॉ.नीरज अग्रवाल, डॉ.नचिकेत, डॉ.वर्षा ने किया।

... और सरकार नहीं भेज पाई दिल

प्रदेश को पहले लिवर प्रत्यारोपण की सौगात तो मिली, लेकिन दानदाता मिलने के बावजूद हृदय का प्रत्यारोपण नहीं हो सका। मनपाल के परिजनों ने सहमति दी थी। लेकिन अस्पताल के पास कोई मरीज नहीं था। राज्य सरकार को देश के दूसरे अस्पताल में हृदय भेजने की सूचना दी थी। लेकिन कहीं भी हृदय नहीं भेजा जा सका।

डेढ़ दर्जन को फोन, कोई नहीं पहुंचा

हृदय प्रत्यारोपण के लिए पंजीकृत डेढ़ दर्जन मरीजों को फोन किया गया, लेकिन कोई नहीं पहुंचा। सहमति मिलने और प्रत्यारोपण के बीच चंद घंटों का ही फासला होता है, ऐसे में इसमें तत्काल मरीज उपलब्ध नहीं हो तो कुछ नहीं किया जा सकता। एक मरीज शनिवार को प्रत्यारोपण के लिए आया। तब तक सारी प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी।

तीन को नया जीवन देकर कमाया पुण्य

हमने क्रॉस मैच के लिए नमूने दिल्ली भेजे थे। करीब 12 बजे ऑपरेशन की तैयारी शुरू की गई। ऑपरेशन शनिवार दोपहर तक चला।

डॉ.एम.एल.स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल समूह

मनपाल के परिजनों का यह दान तीन मरीजों को नया जीवन देकर गया है, जो सबसे बड़ा पुण्य है। पहले 11 कैडेवरिक प्रत्यारोपण वाले मरीजों का निःशुल्क इलाज किया जाएगा।

राजेन्द्र राठौड़, चिकित्सा मंत्री

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

19 Dec. 2015 THE TIMES OF INDIA

First liver transplant patient discharged

Thanks Donor Family For Saving Life

Intishab.Ali@timesgroup.com

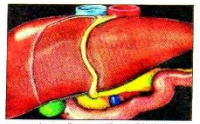

Jaipur: For Sonu Jain, the first cadaver liver transplant patient in the state, it was a new dawn on Friday. He was discharged from the hospital after 20 days of treatment, and couldn't control his emotions as he profusely thanked the donor's family for saving his life.

Sonu was suffering from hepatitis B, which had damaged his liver badly. The doctors had advised liver transplant as any delay could prove fatal for him. "I had severe stomach ache and could not bear the pain. I frequently fell unconscious before liver transplant. Now, I want to thank the family that donated the organ of their family member which helped me recovering from the disease," said 25-year-old Sonu, is a resident of Hindaun city, Karauli.

Sonu, who has a shop of disposable items in Hindaun said, "I will now take care of my shop and help my family."

On November 27, family members of a 36-year-old brain dead patient gave their consent to harvest organs like heart, kidneys and liver. These were then transplanted in patients who needed the vital parts, one of the recipients was Sonu.

"The patient is now physically fit and all his test parameters are normal including bilirubin, PT-INR, SGOT/SGPT, BP and blood sugar," said Dr Giriraj Bora, chief liver transplant surgeon, Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH).

He said that now Sonu can lead a normal life. "When he came to us he could not even walk. He had water retention due to liver cirrhosis. But post-transplant he can lead a normal life. Within a year, the medicines he is taking for hepatitis B will not be needed. He will have to take one medicine in the morning and one in the evening. But, he will have to take precautions to ward off any risk of infection," said Dr Bora.

Dr ML Swarnkar, chairman of MGMCH said that they initially started with cadaver kidney transplant. Later they also performed heart transplant and now liver transplant has also been conducted successfully. "Our effort is to provide such facilities in the state so that no one has to go to another state for high-end procedures," said Dr Swarnkar.

---

19 Dec. 2015 राजस्थान पत्रिका

प्रदेश का पहला लिवर प्रत्यारोपण ◆ महात्मा गांधी अस्पताल से शुक्रवार को डिस्चार्ज कर भेजा घर

आज से होगी सोनू की जिंदगी की नई शुरुआत

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

बीस दिन पहले प्रदेश के पहले लिवर प्रत्यारोपण वाले मरीज हिंडौन सिटी निवासी सोनू जैन को नई जिंदगी मिल गई है। उसे शुक्रवार को महात्मा गांधी अस्पताल से डिस्चार्ज कर घर भेज दिया गया है।

इससे पहले सोनू ने गार्डन में टहलते हुए पत्रिका संवाददाता को बताया कि अब वह स्वस्थ है। घर जाकर अपने पारिवारिक व्यवसाय में हाथ बंटाना चाहता है। अस्पताल के चेयरमेन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि सोनू का ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा। उसे प्रत्यारोपण के बाद गहन चिकित्सा में रखा था। सोनू को महेन्द्रगढ़ हरियाणा निवासी मनपाल से कैडेवर दान के जरिये लिवर मिला था। इसके बाद महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टरों ने उसका पहला कैडेवर लिवर प्रत्यारोपण किया था।

पत्रिका में प्रकाशित समाचार

35 यूनिट की जगह 3 यूनिट रक्त काम आया

प्रत्यारोपण की खास बात यह थी कि ऑपरेशन के लिए मात्र तीन यूनिट रक्त काम में लिया गया, जबकि ऐसे ऑपरेशन के समय 30-35 यूनिट रक्त भी काम आ सकता है। डॉ.बोरा ने बताया कि यह भी प्रयास किए जा रहे है कि उसे भविष्य में हिपेटाइटिस बी की दवा नहीं लेनी पड़े। उसे विशेष प्रकार के टीके लगाए जाएंगे। सोनू का ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, ऑक्सीजन सैचुरेशन, बिलिरूबीन जो पहले 4 यूनिट से अधिक था, अब एक यूनिट के आस पास है जो सामान्य स्तर पर है। साथ ही अन्य महत्वपूर्ण जांच रिपोर्ट भी सामान्य आई हैं।

हिपेटाइटिस-बी था

प्रत्यारोपण सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ.गिरिराज बोरा ने बताया कि सोनू कई सालों से हिपेटाइटिस बी से प्रभावित था। इस कारण उसका लिवर खराब हो गया था। डॉ.बोरा ने बताया कि हिपेटाइटिस बी से प्रभावित मरीजों को ऑपरेशन की सफलता के दौरान इम्यूनोग्लोबिन इंजेक्शन सात दिन तक लगाए जाते हैं, लेकिन बेहतर पेशेंट मैनेजमेंट के जरिये उसे 3 से 5 लाख रुपए तक के अतिरिक्त खर्च से बचा लिया गया।

---

19 Dec. 2015 दैनिक भास्कर

पहला लिवर ट्रांसप्लांट सफल, मरीज को छुट्टी

लिवर पूरी तरह से काम करने के साथ अन्य आर्गन भी बेहतर तरीके से काम कर रहे हैं मरीज के

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

सोनू जैन

प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट पूरी तरह सफल रहा है। शुक्रवार को ट्रांसप्लांट किए गए मरीज को अस्पताल से छुटटी दे दी गई। महात्मा गांधी अस्पताल में 27 नवम्बर को पहला लिवर ट्रांसप्लांट किया गया था।

अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने बताया कि हिंडौन निवासी सोनू जैन को लिवर लगाया था। इसके बाद उसे पोस्ट केयर यूनिट में रखा गया। लिवर पूरी तरह से काम करने और अन्य आर्गन भी बेहतर तरीके से काम कर रहे हैं। इसलिए सोनू को अस्पताल से छुट्टी दी जा रही है। लिवर ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि सोनू पूरी तरह से ठीक है और अब केवल दवाई लेनी पड़ेंगी। वह सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत कर सकता है। उसे हेपेटाइटिस बी था लेकिन अब वह भी पूरी तरह ठीक हो जाएगा।

डॉ. बोरा ने बताया कि पहले लिवर ट्रांसप्लांट वाले मरीज को इम्यूनोग्लोबिन इंजेक्शन लगाया जाता था, जिसकी कीमत तीन से पांच लाख रुपए तक होती थी। लेकिन रिसर्च के बाद सामने आया कि इस इंजेक्शन की जरूरत नहीं है। इसलिए सोनू को भी ये इंजेक्शन नहीं लगाया गया। वहीं सोनू और उसके परिवार ने डोनर हरियाणा निवासी मनपाल के परिजनों का आभार जताया। इस दौरान डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, डॉ. विपिन गोयल, डॉ. सुरेश भार्गव भी उपस्थित थे।

Sonu Jain

STATE'S 1ST LIVER TRANSPLANT A SUCCESS, PATIENT DISCHARGED

HT Correspondent

htraj@hindustantimes.com

JAIPUR: The 26-year-old patient who underwent the first cadaver liver transplant in Rajasthan was discharged on Friday, marking the successful completion of the complex medical procedure in a little over a fortnight period.

Sonu Jain, who had been suffering from liver cirrhosis, had undergone the operation at Mahatma Gandhi Medical College and Hospital on November 28. The Hindaun resident had received the liver of an accident victim whom doctor declared brain dead. "Thanks to family members of Manpal who agreed to donate liver to me. After the liver transplant, I am fine and will help my brother in the family business," Jain said.

Dr Giriraj Bora, chief liver transplant surgeon with the hospital, said Jain was affected with Hepatitis B and his liver was damaged. "His condition was really bad and he needed immediate liver transplant. Manpal, a resident of Mahendragarh in Haryana, had been admitted to the hospital after he met with a road accident. He was declared brain dead and his family members were counselled for organ donation and they agreed," Bora said. "The patient was in an intensive care unit post surgery and later shifted to a general ward. Jain has completely recovered and is being discharged today," he added.

Generally, immunoglobulin injection is administered to ensure success of liver transplants especially to those suffering from Hepatisis-B. "But in this case with better management, injections were not required," Bora said, adding that even medicines given for hepatitis B will be withdrawn after a year.

Hospital chairman Dr ML Swarnkar said another cadaver liver transplant was successfully done recently and the patient would be discharged next week.

घर लौटने से पहले सोनू ने कहा | महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ था प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट

मेरे लिए हमेशा जिंदा रहेगा डोनर 'मनपाल'

जयपुर (मोन्यू)। महात्मा गांधी अस्पताल में 27 नवंबर को हुआ प्रदेश का पहला लीवर प्रत्यारोपण ऑपरेशन कराने वाला 33 वर्षीय सोनू जैन को शुक्रवार को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। गहन चिकित्सा में करीब इक्कीस दिन रहकर सोनू अपने घर लौट गया। हिंडौन निवासी सोनू ने घर लौटने से पहले बताया कि वह अपने गांव में ही निजी दुकान चलाता है और अब वापस जाकर कुछ समय आराम करेगा और फिर से अपना काम संभालेगा। उसने फिर से मिली दूसरी जिंदगी पर खुशी जाहिर की और कहा कि जब तक मैं हूं तब तक लिवर डोनर मनपाल हमेशा उसके लिए जिंदा रहेगा।

सोनू को विदाई के अवसर पर चिकित्सकों ने बताया कि सोनू पिछले कई सालों से हेपेटाइटिस बी से ग्रसित था जिसके कारण उसका लिवर खराब हो गया था और पेट में पानी भी काफी था। जिसके बाद परिजनों को ट्रांसप्लांट के लिए तैयार किया गया। उसी समय मानो मन मांगी मुराद पूरी हुई और महेन्द्रगढ़, हरियाणा निवासी मनपाल की ब्रेन डेथ के चलते कैडेवर डोनर मिला। मनपाल से लिवर सहित किडनी व हार्ट जैसे अंग प्राप्त हुए और ऑर्गन मैच होने पर लिवर सोनू को लगाया गया और दो किडनी ट्रांसप्लांट कर एक साथ तीन जिंदगियां बचाई गई। सोनू के ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, ऑक्सीजन सैचूरेशन, बिलिरूबिन सभी जांचें सामान्य हैं।

"अस्पताल द्वारा शुरू से ही ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य की जनता को दुनिया की नई से नई तकनीकों के जरिये रियायती दरों पर उपचार सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। लीवर प्रत्यारोपण भी ऐसा ही प्रयास रहा है जिसमें राज्य सरकार और चिकित्सा मंत्री का सहयोग मिलने पर सफलता का अंजाम दिया। भामाशाह बीमा योजना से भी अब जुड़ चुके हैं।

- डॉ.एम.एल. स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल

20-25 साल जी सकेगा अपनी आम जिंदगी : महात्मा गांधी अस्पताल के लिवर प्रत्यारोपण सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ.गिरिराज बोरा ने बताया कि सोनू का लिवर ट्रांसप्लांट वर्ल्ड स्तर पर काफी जटिल था जिसमें सफलता बड़ी उपलब्धि है। जिंदगी और मौत के बीच चल रहे इस संघर्ष के दौरान किस्मत ने एक बार फिर उसका साथ दिया है। बोरा ने यहां जानकारी में बताया कि सोनू का लिवर सामान्य व्यक्ति की तरह काम कर रहा है और वह स्वस्थ रहते हुए करीब 20-25 साल अपनी आम जिंदगी जी सकता है।

हेपेटाइटिस बी के इंजेक्शन के बिना सर्जरी : डॉ. बोरा ने बताया कि हेपेटाइटिस-बी से प्रभावित रोगियों को ऑपरेशन के दौरान इम्यूनोग्लोबलिन इंजेक्शन सात दिन तक लगाये जाते हैं। लेकिन सोनू के केस में बेहतर पेशेंट मैनेजमेंट के जरिये चिकित्सकों ने उसके इस 3.5 लाख रुपए के अतिरिक्त खर्च से बचा लिया। उन्होंने कहा कि यह भी प्रयास किए जा रहे हैं कि भविष्य में उसे हेपेटाइटिस-बी की दवा भी बंद करा दी जाये। इसके लिए उसे विशेष प्रकार के टीके लगाए जाएंगे।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : UDYOG AAS-PASS, PAGE NO. 5 , DATE 19.12.2015

जयपुर स्थित लक्ष्मीविलास होटल में प्रथम लिवर ट्रांसप्लांट के बारे में जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल के निदेशक डॉ. एम.एल. स्वर्णकार।

...और सोनू चला अपने घर

महात्मा गांधी अस्पताल में किया था लिवर ट्रासंप्लांट

जयपुर। सीतापुरा, टोंक रोड स्थित महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर में किया गया प्रदेश का पहला लिवर प्रत्यारोपण ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा। गहन चिकित्सा में रहकर रोगी सोनू जैन पूरी तरह स्वस्थ होकर अपने घर लौट रहा है। उधर सोनू के परिजन ही नहीं हिण्डौन निवासी भी उससे एक साथ मिलने के लिए उतावले हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि सोनू का 27 नवम्बर को लिवर ट्रांसप्लाण्ट किया गया था। इसके लिए महेन्द्रगढ, हरियाणा निवासी मनपाल से कैडेवर डोनेशन के लिए लिवर प्राप्त हुआ था। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने कहा कि अस्पताल द्वारा शुरूसे ही ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं राज्य की जनता को दुनिया की नई से नई तकनीकों के जरिये रियायती दरों पर उपचार सेवाएं उपलब्ध कराई जा सके। लिवर प्रत्यारोपण भी ऐसा ही प्रयास रहा है जिसमें राज्य सरकार द्वारा अधिकृत किये जाने, कैडेवर डोनर मनपाल के परिजनों द्वारा अंगदान करने तथा लिवर प्रत्यारोपण के लिए प्रशिक्षित एवं अनुभवी टीम ने अंजाम दिया।

इस सफलता के लिए लिवर प्रत्यारोपण सर्जन टीम डॉ. गिरिराज बोर, डॉ. क्रिस्टोफर बैरीव डॉ. मनोज मालू, गैस्ट्रोएन्ट्रोलोजिस्ट डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, क्रिटिकल केयर विषेषज्ञों डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. विपिन गोयल की सतत् निगरानी एवं राज्य की जनता से मिला आशीर्वाद सोनू के काम आया।

महात्मा गाँधी अस्पताल में पहला लिवर प्रत्यारोपण रहा सफल

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DAILY NEWS , PAGE NO. 2 DATE 03.12.2015

लिवर ट्रांसप्लांट के बाद चलने लगा सोनू

जयपुर। सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में 28 नवंबर को लिवर ट्रांसप्लांट करा चुके रोगी सोनू जैन ऑपरेशन के पांचवे दिन बुधवार को सहारा लेकर चलने लगा है। चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि रोगी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। उसने खाना-पीना शुरू कर दिया है। सोनू अब मुस्कुरा रहा है तथा सामान्य रूप से बातचीत कर रहा है। उसे सहारा देकर घुमाया भी जा रहा है। उसका ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल सभी सामान्य है। डॉ. बोरा ने बताया कि रोगी को दोबारा लिवर की खराबी से बचाने के लिए दवाएं शुरू कर दी गई हैं।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DAINIK NAVJYOTI , PAGE NO. 3 DATE 03.12.2015

सोनू ने खाना पीना किया शुरू, फिलहाल पोस्ट केयर यूनिट में ही रखा जाएगा

लीवर प्रत्यारोपण के बाद स्वास्थ्य में अब सुधार

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

लिवर ट्रांसप्लांट के बाद सोनू का जीवन अब जल्द ही सामान्य होने लगेगा। वह अब सामान्य व्यक्ति की तरह ही चल फिर सकेगा और अपने जीवन को फिर से नए सिरे से जीने की कोशिश करेगा। महात्मा गांधी अस्पताल में गत 28 नवम्बर को लिवर ट्रांसप्लांट सर्जरी करा चुका रोगी सोनू जैन ऑपरेशन के चौथे दिन बुधवार को सहारा लेकर चलने लगा है। हांलाकि फिलहाल उसे इंफेक्शन से बचाने के लिए पोस्ट केयर यूनिट में ही डॉक्टरों की गहन निगरानी में रखा गया है। पूरी तरह से स्वस्थ होने पर उसे शीघ्र ही घर भेज दिया जाएगा।

पैरामीटर हो रहे सामान्य

चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि सोनू के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो रहा है। उसने खाना-पीना शुरू कर दिया है। सहारा देकर उसे घुमाया भी जा रहा है। उसका ब्लड प्रेशर, शुगर लैवल, पीटी-आईएनआर, लैक्टेट, एबीजी आदि सभी पैरामीटर्स सामान्य हो गए है। डॉ. बोरा ने बताया कि रोगी को दोबारा लिवर की खराबी से बचाने के लिए हिपेटाइटिस-बी की दवाइयां भी शुरू कर दी गई है। सोनू अब मुस्कुरा रहा है और सामान्य रूप से बातचीत कर रहा है। पूरी तरह स्वस्थ होने पर उसे शीघ्र ही घर भेज दिया जाएगा।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DNA , PAGE NO. 3 DATE 03.12.2015

Liver transplant patient recovering well: Docs

dna correspondent @jaipurdna

State's first liver transplant recipient, 26-year-old Hindaun City resident Sonu Jain, who was operated upon on November 28, is recovering at a good rate, doctors have said.

He was operated by a team of doctors from the Mahatma Gandhi Hospital, led by Dr Giriraj Bora, who has said that the patient is recovering well and that he would soon be sent home.

Dr Bora said, "On the fourth day post operation, the patient's blood pressure, sugar level, PT-INR, lactate, ABG and other vitals are found normal. He is attaining fast recovery."

DONOR'S KIDNEYS SAVED TWO LIVES

It was on the intervening night of November 27 that Manpal's liver, heart and both the kidneys were procured from his body. While Manpal's liver was given to Jain, his kidneys also saved two lives. The valves procured from his heart would also be used for saving someone's life in future. A team of 40 medics had performed the most critical surgery.

On the fourth day post surgery, the patient's BP, sugar level, PT-INR, lactate, ABG and other vitals are found normal. He is attaining fast recovery. A diet of light food and liquids has already been started.

GIRIRAJ BORA, *chief liver transplant surgeon, MG hospital*

Speaking about the food that is being given to him, Dr Bora said, "Oral food including very light food and liquids, has already been started. He is being mobilised with the help of nursing attendants.

Dr Bora informed that medication for Hepatitis B has also been started to be administered in order to protect Sonu from existing Hepatitis B disease.

He also appreciated the family members of the donor who have been constantly asking for Jain's health despite losing their own son in an accident.

"This miraculous success was only possible because of the family members of cadaver donor Manpal from Mahendragarh, Haryana. If it hadn't been for their large-heartedness, it wouldn't have been possible," Dr Bora added.

Manpal's kidneys also saved two lives while the valves procured from his heart would also be used for saving someone's life in future. A team of 40 medics had performed the most critical surgery.

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : DAILY NEWS, LAST PAGE, DATE 25.12.2015

'दिल बंद हो जाए तो रोगी को हार्ट पंपिंग व मुंह से दें सांस'

इसकॉन-2015 में बोले हार्ट विशेषज्ञ

सिटी रिपोर्टर

जयपुर ▷. 24 दिसंबर

दिल के अचानक बंद हो जाने की स्थिति में कॉर्डियोपल्मोनरी रिसेसिटेशन (सीपीआर) के जरिए रोगी को मौत के मुंह से निकाला जा सकता है। ऐसी स्थिति में तीन मिनट के अंदर हार्ट पम्पिंग व मुंह से दी गई सांस रोगी के अंदर जान डाल सकती है। सीतापुरा स्थित एक निजी मेडिकल कॉलेज में गुरुवार को इंडियन सोसाइटी ऑफ एनेस्थिशियोलॉजिस्ट के 63वें राष्ट्रीय अधिवेशन इस्कॉन-2015 में जीवीके हैदराबाद से आए डॉ. राजा नरसिंह राव ने यह कहा। सम्मेलन में एडवांस कार्डियक लाइफ सपोर्ट (एसीएलएस) व बेसिक लाइफ सपोर्ट बीएलएस की व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में निश्चेतना विशेषज्ञ डॉ. दुर्गा जेठवा ने बताया कि हार्ट ब्लॉक की स्थिति में रोगी को सख्त सतह पर लिटाकर रोगी के सीने के

इसकॉन 2015 में डमी पर उपचार की जनकारी देते हार्ट विशेषज्ञ।

बीचों-बीच हथेली रखकर कंधे के जोर से इतना दबाव डाला जाना चाहिए, जिससे रोगी का शरीर दो इंच तक नीचे हो सके। ऐसा एक मिनट में सौ बार की गति से किया जाना चाहिए। पहले 30 बार सीने पर दबाव डालकर एक बार रोगी के मुंह में मुंह डालकर सास फूंकनी चाहिए। ऐसा तब तक किया जाना चाहिए, जब तक रोगी की चेतना न लौटे। इसके बाद तुरंत ही रोगी को किसी अस्पताल में पहुंचाया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि कार्डियक अरेस्ट के बाद प्रत्येक मिनट में रोगी की जान को खतरा सात प्रतिशत बढ़ जाता है। समय पर दिए गए उपचार से रोगी की जान बचाने की संभावना 70 से 80 प्रतिशत तक होती है।

10 सालों में चिकित्सा विज्ञान ने किया सुधार

इसकॉन आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. एसपी शर्मा ने बताया कि दस सालों में जहां सर्जिकल मामलों में चिकित्सा विज्ञान ने तेजी से सुधार किया है। बड़े से बड़े हार्ट, लिवर व किडनी प्रत्यारोपण जैसे ऑपरेशन आसानी से किए जाने लगे हैं, इसमें एनेस्थिशिया का विशेष योगदान है। उन्होंने बताया कि चाहे पेन मैनेजमेंट का मामला हो या आईसीयू में क्रिटिकल केयर एनेस्थेटिस्ट अथवा सीटी स्कैन, एमआरआई आदि जांचों के समय भी दिया जाने वाली बेहोशी की दवा एनेस्थिशिया विशेषज्ञ की देखरेख में दी जाती है।

NEWS. : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : MORNING NEWS, PAGE NO. 3 , DATE 28.12.2015

दूसरा लिवर ट्रांसप्लांट भी रहा सफल

22 वर्षीय नवीन स्वस्थ होकर लौटा अपने घर

जयपुर (मोन्यू)। टोंक रोड स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में किया गया दूसरा लिवर प्रत्यारोपण भी पूरी तरह सफल रहा। बीस दिन बाद 22 वर्षीय नवीन जैन स्वस्थ होकर रविवार को अपने माता-पिता के साथ अपने घर लौट गया। नवीन का ऑपरेशन गत पांच दिसम्बर को लिवर प्रत्यारोपण विभागाध्यक्ष डॉ. गिरिराज बोरा तथा डॉ. क्रिस्टोफर बैरी की टीम ने किया था। डॉ. बोरा ने बताया कि नवीन को काफी समय से पीलिया तथा खून की कमी की शिकायत थी तथा उसका उपचार चल रहा था। उसका हीमोग्लोबीन तीन तक भी पहुंच गया था। हर रोज जीवन पर मंडराते संकट से निपटने के लिए घर वालों ने उसका लिवर प्रत्यारोपण कराना उचित समझा।

उन्होंने बताया कि ऑपरेशन काफी जटिल था लिवर के अतिरिक्त शरीर के निचले हिस्से से उपर की ओर रक्त संचार करने वाली रक्त वाहिनियां भी बंद थी, लेकिन ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा। अब उसका लिवर तथा किडनी फंकशन टैस्ट पूरी तरह सामान्य है। वह सामान्य खान-पान कर रहा है। नवीन अब वापस अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई में जुटना चाहता है।

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

ब्रेन डेथ अंगदाता ने तीन मरीजों को दी नई जिंदगी, दो किडनी भी ट्रांसप्लांट

नौ दिन में प्रदेश में दूसरा लिवर ट्रांसप्लांट

सिटी रिपोर्टर

जयपुर ▷ 6 दिसंबर

प्रदेश में नौ दिन मे दूसरा लिवर ट्रांसप्लांट शहर के एक निजी अस्पताल में हुआ। शहर के एक अंगदाता ने तीन मरीजों को अंगो का दान कर उन्हें नई जिंदगी दी है। अंगदाता के परिजनों ने उसका लिवर और दो किडनी दान की। उसे दिल की बीमारी होने से हृदय नहीं लिया जा सका। प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट 28 नवंबर को हुआ था।

जानकारी के मुताबिक खातीपुरा निवासी ओमप्रकाश को 3 दिसंबर को ब्रेन हेमरेज के चलते सीतापुर स्थित महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज

में भर्ती कराया गया था। उसे 5 दिसंबर को ब्रेन डेथ घोषित कर दिया गया। उसके परिजनों ने अंगदान के लिए सहमति दे दी। शनिवार रात डॉक्टरों ने रिपोर्ट आने के बाद ऑर्गन ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया शुरू की। उसका लिवर व एक किडनी वहीं ट्रांसप्लांट की गई, जबकि एक किडनी एसएमएस अस्पताल को दान कर दी गई। वहां किडनी अन्य मरीज को लगाई गई है।

जयपुर के ही मरीज के लगाया लिवर

लिवर जयपुर के ही सुरेश (बदला हुआ नाम) को लगाया गया है। शनिवार रात ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया शुरू हुई और रविवार दोपहर ट्रांसप्लांट कर दिया गया। ट्रांसप्लांट टीम मे डॉ. गिरिराज बोरा, डॉ. क्रिस्टोफर बैरी, डॉ. विपिन गोयल और डॉ. सुरेश भार्गव थे। लिवर ट्रांसप्लांट करीब 14 घंटे तक चला।

हार्ट नहीं लिया जा सका

बताया जा रहा है कि जिस मरीज को हार्ट की आवश्यकता थी, उसकी उम्र ब्रेन डेथ व्यक्ति से काफी कम थी और वजन में भी अंतर था। इसके अलावा ब्रेन डेथ ओमप्रकाश को हार्ट इश्चेमिक डिजीज थी। इस वजह से उसका हार्ट नहीं लिया जा सका।

मंजू को मिला नया जीवन

ग्वोपुर निवासी मंजू जांगिड़ को किडनी ट्रांसप्लांट की गई। वह काफी समय से डायलिसिस पर थी। महात्मा गांधी अस्पताल में यह ट्रांसप्लांट किया गया।

सोनू को छुट्टी जल्द

वहीं प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट कराने वाले सोनू को एक-दो दिन में अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। उसके सभी हेल्थ पैरामीटर सामान्य बताए जा रहे हैं। उसने भोजन लेना भी शुरू कर दिया है।

12 घंटे चला ऑपरेशन, प्रदेश का दूसरा लीवर प्रत्यारोपण सफल

रोशन हुई तीन जिंदगियां, महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ ऑपरेशन

नेशनल दुनिया

जयपुर। प्रदेश का दूसरा लीवर कैडेवर ट्रांसप्लांट रविवार को सफलतापूर्वक किया गया। इस ऑपरेशन के दौरान एक ब्रेनडेड मरीज के दान किए अंगों से तीन जिंदगियों रोशन हुईं। महात्मा गांधी अस्पताल में करीब 12 घंटे चले ऑपरेशन के बाद यह ट्रांसप्लांट किया गया।

अस्पताल से मिली जानकारी के अनुसार 3 दिसंबर को ओमप्रकाश दाधीच को ब्रेन हेमरेज होने पर अस्पताल में भर्ती करया गया था। उसे 5 दिसंबर को डॉक्टरों ने ब्रेनडेड घोषित कर दिया। इसके बाद चिकित्सकों की टीम ने उसके परिजनों से काउंसलिंग कर अंगदान के लिए राजी किया।

ओमप्रकाश के परिजनों ने उसके शरीर से तीन जिंदगियों को रोशन कर दिया। जयपुर निवासी एक पीड़ित का लीवर खराब था। उसे ओमप्रकाश का लीवर प्रत्यारोपीत किया गया। यह ऑपरेशन शनिवार रात 2 बजे शुरू हुआ और रविवार दोपहर दोपहर 1 बजे सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ। डॉ. गिरिराज बोरा, डॉ. क्रिस्टोफर बैरी, डॉ. विपिन गोयल, डॉ. दुर्गा जेडव व डॉ. सुरेश भार्गव की टीम ने सफलतापूर्ण ऑपरेशन किया। ओमप्रकाश की किडनी खातीपुरा निवासी मंजू जांगिड को प्रत्यारोपित की गई, जो एक साल से डायलिसिस पर थी। दूसरी किडनी एसएमएस अस्पताल में दी गई है। किडनी ट्रांसप्लांट ऑपरेशन डॉ. टी.सी. सदासुखी, डॉ. एच.एल. गुप्ता, डॉ. मनीश शर्मा, डॉ. गोविंद शर्मा व डॉ. सूरज गोदारा की टीम ने सफलतापूर्वक किया। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने बताया कि राज्य को सर्वश्रेष्ठ तकनीक व चिकित्सा सेवा न्यूनतम दरों पर उपलब्ध कराना ही हमारा लक्ष्य है।

प्रत्यारोपण ब्रेन डैड ओमप्रकाश ने दिया तीन लोगों को जीवनदान

महात्मा गांधी अस्पताल में आठ दिन बाद दूसरा सफल लीवर ट्रान्सप्लान्ट हुआ

लीवर व दो किडनी का किया प्रत्यारोपण

एक किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती महिला मन्जू जांगिड़ व दूसरी सवाई मानसिंह अस्पताल में भर्ती अनूप चन्द्र को हुई प्रत्यारोपित

जयपुर (कासं)। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल ने ठीक आठ दिन में लगातार दूसरा लीवर ट्रान्सप्लान्ट कर राजस्थान में बेहतर चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने का दावा पेश किया है। महात्मा गांधी अस्पताल के मुख्य ट्रस्टी डॉ. एम एल स्वर्णकार ने बताया कि हमने मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के राज्य में बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के संकल्प को पूरा किया है। आज जयपुर के खातीपुरा निवासी 55 वर्षीय ओमप्रकाश जिनको की ब्रेन हेमरेज होने पर पांच दिसम्बर को ब्रेन डैड घोषित कर दिया था। उनके परिजनों ने अंगदान किए जाने पर सहमति दी। इसके बाद केडेबर आर्गन ट्रान्सप्लान्ट की प्रक्रिया पूरी की गई। ओमप्रकाश के केडेबर आर्गन ट्रान्सप्लान्ट से तीन लोगों को जीवन दान मिला। उसका लीवर बदला हुआ नाम सुरेश उम्र 23 वर्ष व किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती मन्जू उम्र 41 वर्ष व दूसरी किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल में भर्ती को प्रत्यारोपित की गई। हार्ट में खराबी होने के कारण प्रत्यारोपित नहीं किया जा सका। महात्मा गांधी अस्पताल के लीवर ट्रान्सप्लान्ट विशेषज्ञ डॉ. गिरिराज

शेष पृष्ठ 4 पर

काउंसलिंग के बाद डोनर के घरवाले डोनेशन को राजी हुए

दूसरा कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट भी महात्मा गांधी अस्पताल में

नवज्योति, जयपुर

पहले लिवर ट्रांसप्लांट की सफलता के बाद राज्य का दूसरा कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट रविवार को जयपुर के सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में पूरा हुआ। यह ट्रांसप्लांट 40 डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ की टीम की मौजूदगी में शनिवार रात 2 बजे शुरू हुआ और अगले दिन रविवार दोपहर 1 बजे तक चली सर्जरी में जयपुर निवासी सुरेश 22 (बदला हुआ नाम) के लिवर प्रत्यारोपित किया गया। अस्पताल के चिकित्सक विशेषज्ञों ने शनिवार रात 10 बजे डोनर से लिवर निकालने की प्रक्रिया शुरू की।

लिवर डोनर ओमप्रकाश

हर केस अपने आप में चैलेंजिंग

सुरेश का लिवर खराब था। उसे लिवर प्रदाता की जरूरत थी। ट्रांसप्लांट के बारे में चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ.गिरिराज बोरा ने बताया कि हर केस अपने आप में चैलेंजिंग होता है। यह केस भी पहले लिवर ट्रांसप्लांट से कुछ मायने में बेहद अलग था। इस केस में पेशेन्ट के लिवर की इंजिंग जरसे बिल्कुल ब्लॉक थी। पेशेन्ट के लिवर का ब्लड ओर लोअर बॉडी ब्लड मिक्स हो रहा है, जिसकी वजह से कॉम्प्लीकेशन्स ज्यादा थी। लेकिन हमने लिवर ट्रांसप्लांट के साथ-साथ किडनी के पीछे नई नस तैयार की जिससे खून को मिक्स होने से रोका। इसकी वजह से ट्रांसप्लांट सक्सेसफुल रहा।

इनसे मिला जीवनदान

जयपुर के खातीपुरा निवासी ओमप्राकाश 55 को ब्रेन हैमरेज के बाद परिजन 3 नवम्बर को महात्मा गांधी अस्पताल लेकर आए। डॉक्टरों ने 5 तारीख को उसे ब्रेन डैड घोषित कर दिया। ओमप्रकाश के घरवाले पहले तो लिवर डोनेट करने के लिए राजी नहीं हुए परन्तु बाद में अस्पताल के डॉक्टरों ने काउंसलिंग में ओमप्रकाश के परिजनों को समझाया, उसके बाद वो डोनेशन के लिए तैयार हुए। तब जाकर रविवार को ओमप्रकाश के शरीर से लिवर निकालकर डॉक्टरों ने सुरेश के प्रत्यारोपित किया। ओमप्रकाश शहर के बैंक एटीएम पर गार्ड की नौकरी करते थे।

विशेषज्ञों की टीम में ये रहे

चीफ लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ.गिरिराज बोरा, ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ.क्रिस्टोफर बैरी, एनेस्थीसिया से डॉ.विपिन गोयल, डॉ.दुर्गा जेठवा, क्रिटिकल केयर से डॉ.सुरेश भार्गव व टीम।

ब्रेन डैड अंगदाता से तीन को नया जीवन

ब्रेन डैड केडेवर अंगदाता से एक नहीं बल्कि तीन लोगों को नया जीवन मिला है। लिवर के साथ-साथ उनकी दोनों में से किडनियों ने से पहली किडनी श्योपुर प्रताप नगर निवासी मंजू जांगिड़ के लगी है। ये एक साल से डायलिसिस पर थी। रविवार को सुबह 4 बजे सर्जरी शुरू कर महिला के किडनी प्रत्यारोपित की गई। सर्जरी 7.30 बजे तक चली और दूसरी किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल को दी गई है।

28 तारीख को हुआ था पहला ट्रांसप्लांट

गौरतलब है कि राज्य का पहला कैडेवर लिवर ट्रांसप्लांट भी 28 नवम्बर 2015 को महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ था। इसमें डैमेज लिवर से पीड़ित करौली निवासी सोनू जैन (26) के हरियाणा तिसासी मनपाल 34 का लिवर प्रत्यारोपित किया गया था। मनपाल को सड़क दुर्घटना में चोटल होने के बाद डॉक्टरों ने ब्रेन डैड घोषित कर दिया था। उसके बाद अब यह दूसरा ट्रांसप्लांट है।

राजस्थान में महात्मा गांधी अस्पताल मरीजों को बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रयासरत है। जैसा कि पहले मैंने कहा है कि अस्पताल में होने वाले तीन शुरुआती लिवर ट्रांसप्लांट विशुल्क किए जाएंगे। अभी हमने दूसरा लिवर ट्रांसप्लांट किया है। राज्य को सर्वश्रेष्ठ तकनीक तथा चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य है।

- डॉ. एम एल स्वर्णकार
चेयरमैन, महात्मा गांधी हॉस्पिटल

THE TIMES OF INDIA

Boost for Rajasthan as another liver transplant performed

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: In a major boost to Rajasthan's endeavour to join other states which are leading in cadaver organ transplant in the country, the doctors have conducted another liver transplant in the city within performing the first one eight days ago.

According to Mahatma Gandhi Medical College and Hospital sources, "A 55-year-old man, a resident of Jaipur, was admitted to Mahatma Gandhi Hospital after suffering from brain haemorrhage.

The doctors put him on life support system. However, on Saturday, he was declared brain-dead. A counsellor provided counselling to the patient's relatives to donate organs to give a new lease of life to patients who require the organs.

The relatives gave their

After getting consent from the kin of brain-dead person, three cadaver organs (two kidneys and a liver) were transplanted to three persons. The liver was transplanted to a 23-year-old boy. His liver was completely damaged due to a disease

consent last night (Saturday night)," the hospital authorities claimed.

After the consent, three cadaver organs (two kidneys and a liver) were transplanted to three persons.

The retrieval of the organs from the donor started at around 10 pm on Saturday. A team of cadaver liver transplant under chief liver transplant surgeon Dr Giriraj Bora started operation at around 2 am. The operation was completed at around 2 pm.

The liver was transplanted to a 23-year-old boy. His liver was completely damaged due to a disease. After the surgery, the patient is admitted to cadaver liver ICU where he is undergoing treatment.

"It was a bit difficult surgery. The vitals of the patients show that he is fine after the surgery.

The recipient is a resident of Jaipur," Dr M L Swarnkar, chairman of Mahatma Gandhi Medical College and Hospital said.

One kidney, which was harvested from the donor, was transplanted to a 41-year-old woman. She was on dialysis for the past one year. A team of surgeons headed by Dr TS Sadasukhi conducted the kidney transplant. The woman was suffering from chronic kidney disease due to which she suffered kidney failure.

The kidney transplant started at around 4 am and it continued till 7 am.

However, the first recipient of cadaver liver transplant, which was conducted last Saturday is recovering. The hospital officials said that he would be discharged from the hospital within few days.

2nd surgery more complex: Doc

Intishab.Ali@timesgroup.com

Jaipur: The second cadaver liver transplant was more challenging than the first one which was conducted on November 28 as the second recipient of liver was suffering from Budd Chiari syndrome.

"Our second transplant was more technically demanding than the first because the second patient suffered from Budd Chiari syndrome in which the veins draining the liver are clotted off. This makes removing the old liver more challenging and implantation," Christopher Taylor Barry, Adjunct professor and transplant surgery consultant, Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Technology. Barry was part of the first cadaver liver transplant team of the state. Also, he played a key role in second cadaver liver transplant of the state.

The second patient was 23-year-old and belonged to Jaipur. Now, the patient requires better post-operative care. "Of the new liver requires techniques that are more physiologically demanding to the patient. Also, post-operative care is more complicated because anticoagulation is necessary," Dr Barry said.

The recipient was suffering from Budd Chiari syndrome in which the veins draining the liver are clotted off. This made the removal of the old liver more challenging. Similarly, the implantation of new organ was also a difficult task

CHRISTOPHER TAYLOR BARRY
Transplant surgery consultant, Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Technology

However, the doctors are happy that the donor's liver was quite excellent. They harvested the liver from the cadaver organ donor, who was 55-year-old. He was declared brain dead on Friday evening. He was brought to the hospital on December 3 as he was suffering from brain haemorrhage.

"Fortunately, the donor liver was of excellent quality and it began functioning immediately. As with the previous case, a large multidisciplinary team of surgeons, anaesthetists, intensivists and nurses all came together to successfully perform this very difficult operation. The patient is very stable in the ICU postoperatively with the evidence of excellent liver function," Dr Barry said.

Besides, the hospital had tried to perform first lung transplant and second heart transplant of the state. "We got special permission from the government for lung transplant. But, it could not become possible," Dr ML Swarankar, chairman Mahatma Gandhi Medical College and hospital (MGMCH) said. "We were ready with the recipient for lung and heart transplant. There is a 20-year-old boy, who require lung and heart transplant. I had another patient who requires heart and kidney transplant. We conducted some tests of donor's lung and heart. We found that they were not good enough to be transplanted. His heart was not up to the mark. So, we decided not to transplant them," Dr MA Chisti, chief consultant cardiac surgeon, who conducted first heart transplant of the state in August.

He said that as far as lungs are concerned, it was not found fit for transplant. The patient (donor) was on ventilator for three days, which affected the quality of lungs.

Moreover, there was a big gap of potential recipient and donor's age along with difference in weight, which was complete mismatch. "The donor was 55-year-old weighing 65 kgs and the potential recipient was 20-year-old weighing 48 kgs. It was mismatch," Dr Chisti said, adding that at present there are only three patients in his list which may require heart transplant. More patients, who are eligible for heart transplant (patients with heart failure) as recipient should come forward, so that the doctors can keep them ready for heart transplant whenever there is a cadaver organ donation. It will help reducing the chances of donated valuable heart goes waste, Dr Chisti said.

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

राज्य का पहला लिवर प्रत्यारोपण ऑपरेशन

दैनिक भास्कर

हार्ट लेने वाला मरीज नहीं मिलने से हार्ट ट्रांसप्लांट टला, दोनों वाल्व सुरक्षित रखे गए हैं...स्पेशलिस्ट टीम का दावा- ट्रांसप्लांट सफल रहा है

10 सर्जन, 12 घंटे और कर दिया पहला लिवर ट्रांसप्लांट

जयपुर. 12 घंटे, 10 सर्जन और 20 जनों की मेडिकल टीम ने राजस्थान को शुक्रवार-शनिवार की रात पहले लिवर ट्रांसप्लांट की सौगात दी। महात्मा गांधी हॉस्पिटल में ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया 1400 लिवर ट्रांसप्लांट कर चुके ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने। हिंडौनसिटी के सोनू जैन को लिवर लगाया गया। अगले सात दिन में लिवर ट्रांसप्लांट की सफलता तय होगी। सर्जरी टीम का दावा है कि ट्रांसप्लांट सुरक्षित रहा है। मरीज को लगाया गया लिवर बेहतर तरीके से काम करेगा। लिवर डोनेट करने वाले हरियाणा के महेंद्रगढ़ में मुलोददी गांव के मनपाल की एक किडनी एसएमएस अस्पताल में ऊषा शर्मा को लगाई गई। एक अन्य किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में ही राजेश के ट्रांसप्लांट की गई।

हार्ट के लिए रिसिपिएंट नहीं मिला · हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया- हार्ट के लिए रिसिपिएंट (हार्ट लेने वाला मरीज) नहीं मिला। एक मरीज को हार्ट लगाए जाने की जरूरत थी लेकिन परिजनों ने सर्जरी से मना कर दिया। वे दवाओं पर निर्भर रहना चाहते थे। हार्ट के दोनों वाल्व को सुरक्षित रखे गए हैं। जैसे ही हार्ट पेशेंट (जिसे हार्ट वाल्व की जरूरत हो) मिलेंगे, उन्हें मनपाल के हार्ट वाल्व उसे लगाए जाएंगे।

हर माह 10 हजार तक का खर्चा स्पेशलिस्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा ने बताया कि लिवर ट्रांसप्लांट के बाद मरीज को हर माह करीब आठ-दस हजार रुपए दवाइयों पर खर्च करने पड़ते हैं। प्रत्यारोपित लिवर बेहतर काम करे और इंफेक्शन नहीं हो, इसके लिए दवाएं उम्र भर ही लेनी पड़ती हैं। रातभर चले ऑपरेशन के बाद मरीज की स्थिति ठीक है। उसे मॉनीटर कर रहे हैं। ट्रांसप्लांट सफल रहा है। सात दिन बाद ट्रांसप्लांट की सफलता का पक्का पता चल जाएगा।

फ्री करेंगे शुरू के सभी तीन ट्रांसप्लांट

डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल शुरू के सभी तीन ट्रांसप्लांट फ्री करेगा। किडनी के भी तीन फ्री किए गए। अब हार्ट और लिवर के दो-दो ट्रांसप्लांट निशुल्क किए जाएंगे। इसके बाद भी किए जाने वाले ट्रांसप्लांट की कीमत अन्य अस्पतालों की तुलना में आधी से भी कम होगी।

टीम के सदस्य

डॉ. मनोज मालू, डॉ. सुभाष नेपालिया, लोकेश जैन, डॉ. क्रिस्टोफर बेरी, डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. विपिन गोयल, डॉ. दुर्गा जेठवा व अन्य।

राजस्थान पत्रिका

10 घंटे में रचा इतिहास } महात्मा गांधी अस्पताल में प्रदेश का पहला लिवर प्रत्यारोपण सफल

रात 2 बजे लिवर निकाला, 12 बजे दूसरे को लगा दिया

अंगदान प्रत्यारोपण के क्षेत्र में तेजी से कदम बढ़ा रहे जयपुर शहर ने शुक्रवार देर रात 2 बजे से शनिवार दोपहर 12 बजे के बीच एक बार फिर इतिहास रच दिया। कुछ महीने पहले हुए हृदय प्रत्यारोपण के बाद इस बार पहला लिवर प्रत्यारोपण भी सफल रहा। इस बार भी केन्द्र था सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल।

जयपुर @ पत्रिका
patrika.com/city

जैसे ही नई दिल्ली से दानदाता मनपाल और जरूरतमंदों के क्रॉस मैचिंग नमूनों की रिपोर्ट मिली, लिवर प्रत्यारोपण विशेषज्ञों की टीम प्रत्यारोपण के लिए सक्रिय हो गई। ठीक 2 बजे पहला प्रत्यारोपण शुरू कर दिया गया। मनपाल की एक किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में तो दूसरी सवाई मानसिंह अस्पताल में प्रत्यारोपित की गई। लिवर सिरोसिस से पीड़ित हिंडौनसिटी निवासी सोनू को लिवर प्रत्यारोपित किया गया।

प्रत्यारोपण के हीरो...

मुख्य लिवर सर्जन **डॉ.गिरीश बोरा**

अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ **डॉ.क्रिस्टोफर बैरी**

एक साथ 3 ऑपरेशन थियेटर में 3 मरीजों को मिली जिंदगी

ऑपरेशन थिएटर में प्रत्यारोपण करते डॉक्टर्स

4 चरणों में मिली सफलता

1. **शुक्रवार दोपहर 12 बजे** परिजनों ने दी सहमति
2. **रात 11.30 बजे** क्रॉस मैचिंग नमूनों की रिपोर्ट मिली
3. **शुक्रवार रात 2 बजे** पहला लिवर प्रत्यारोपण शुरू
4. **शनिवार दोपहर 12 बजे** प्रत्यारोपण पूरा हुआ

इन्हें लगाई किडनियां

महात्मा गांधी अस्पताल के यूरोलोजी विशेषज्ञ डॉ. टी.सी. सदासुखी, नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ.सूरज गोदारा और डॉ.मनीष शर्मा ने अस्पताल में भर्ती राजेश (25) को किडनी प्रत्यारोपित की।

दूसरी किडनी एसएमएस अस्पताल के नेफ्रोलोजी विभाग में भर्ती बीपीएल मरीज उषा (45) को प्रत्यारोपित की गई। यहां प्रत्यारोपण डॉ.विनय तोमर, डॉ.एस.एस.यादव, डॉ.नीरज अग्रवाल, डॉ.नचिकेत, डॉ.वर्मा ने किया।

... और सरकार नहीं भेज पाई दिल

प्रदेश को पहले लिवर प्रत्यारोपण की सौगात तो मिली, लेकिन दानदाता मिलने के बावजूद हृदय का प्रत्यारोपण नहीं हो सका। मनपाल के परिजनों ने सहमति दी थी। लेकिन अस्पताल के पास कोई मरीज नहीं था। राज्य सरकार को देश के दूसरे अस्पताल में हृदय भेजने की सूचना दी थी। लेकिन कहीं भी हृदय नहीं भेजा जा सका।

डेढ़ दर्जन को फोन, कोई नहीं पहुंचा

हृदय प्रत्यारोपण के लिए पंजीकृत डेढ़ दर्जन मरीजों को फोन किया गया, लेकिन कोई नहीं पहुंचा। सहमति मिलने और प्रत्यारोपण के बीच चंद घंटों का ही फासला होता है, ऐसे में इसमे तत्काल मरीज उपलब्ध नहीं हो तो कुछ नहीं किया जा सकता। एक मरीज शनिवार को प्रत्यारोपण के लिए आया। तब तक सारी प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी।

तीन को नया जीवन देकर कमाया पुण्य

हमने क्रॉस मैच के लिए नमूने दिल्ली भेजे थे। करीब 12 बजे ऑपरेशन की तैयारी शुरू की गई। ऑपरेशन शनिवार दोपहर तक चला।
डॉ.एम.एल.स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल समूह

मनपाल के परिजनों का यह दान तीन मरीजों को नया जीवन देकर गया है, जो सबसे बड़ा पुण्य है। पहले 11 कैडेवरिक प्रत्यारोपण वाले मरीजों का निःशुल्क इलाज किया जाएगा।
राजेन्द्र राठौड़, चिकित्सा मंत्री

राज्य का पहला सफल लिवर ट्रांसप्लांट, वो भी निःशुल्क

महात्मा गांधी अस्पताल ने किडनी और हार्ट कैडेवर ट्रांसप्लांट के बाद फिर रचा इतिहास, लिवर ट्रांसप्लांट करने वाला आठवां राज्य बना राजस्थान

नेशनल दुनिया

जयपुर। राज्य का पहला लिवर ट्रांसप्लांट ऑपरेशन सफलतापूर्ण करने के साथ ही महात्मा गांधी अस्पताल ने किडनी, हार्ट के बाद ऑर्गन ट्रांसप्लांट के क्षेत्र में इतिहास रच दिया है। इसी के साथ राजस्थान देश का आठवां लिवर ट्रांसप्लांट करने वाला राज्य बन गया। खास बात यह है कि अस्पताल प्रशासन ने यह ट्रांसप्लांट ऑपरेशन निःशुल्क किया है। अब जल्द ही अस्पताल में लंग्स, यूट्रस, पेनक्रियाज ट्रांसप्लांट भी होने लगेंगे।

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में एक ब्रेन डेड मरीज ने तीन मरीजों को अपने अंग दान कर नई जिंदगी दे दी। इनमें एक को लिवर और दो मरीजों को किडनी ट्रांसप्लांट की गई। अस्पताल में शुक्रवार रात 11 बजे ऑर्गन निकाले गए और देर रात 2 बजे ऑपरेशन शुरू हुआ जो शनिवार सुबह 11 बजे सफलतापूर्ण संपन्न हुआ।

प्रदेश के पहले लिवर ट्रांसप्लांट ऑपरेशन की जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन एमएल स्वर्णकार। नेशनल दुनिया

पहले तीन लिवर और हार्ट ट्रांसप्लांट निःशुल्क होंगे

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने शनिवार को मीडिया को बताया कि लिवर ट्रांसप्लांट के लिए हमने 15 लाख रुपए का खर्चा निर्धारित किया है। मगर पहला ऑपरेशन पूरी तरह मुफ्त किया गया। उन्होंने बताया कि अस्पताल में पहले तीन लिवर और हार्ट के ट्रांसप्लांट मुफ्त किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि पिछले एक साल से लिवर प्रत्यारोपण की तैयारियां चल रही थी जिसे अब कामयाबी मिली।

- हादसे में गंभीर घायल होने पर अस्पताल में भर्ती हुआ था हरियाणा का युवक
- 27 नवंबर को डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित किया
- परिजनों ने दी अंगदान की सहमति
- हिंडौनसिटी निवासी सोनू जैन को लगाया गया लिवर
- जरूरतमंद मरीज के लिए सुरक्षित रखे गए वॉल्व
- एक किडनी महात्मा गांधी अस्पताल के मरीज को और दूसरी एसएमएस अस्पताल के एक मरीज को प्रत्यारोपित

यूं मिला अंगदान करने वाला

हरियाणा के नारनौल का 34 वर्षीय धनराज (परिवर्तित नाम) पिछले दिनों सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल होने पर महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती हुआ था। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने 27 नवंबर को ब्रेन डेड घोषित किया। उसके परिजनों को समझाने पर उन्होंने अंगदान की सहमति दे दी। इसके बाद 27 नवंबर आधी रात बाद ऑपरेशन की तैयारी करके शनिवार सुबह तक धनराज का लिवर हिंडौनसिटी निवासी लिवर सिरोसिस से पीड़ित 25 साल के सोनू जैन के ट्रांसप्लांट कर दिया गया। ऑपरेशन के बाद सोनू ठीक है। धनराज की दो किडनियों में से एक महात्मा गांधी अस्पताल में और एक एसएमएस अस्पताल के मरीज में प्रत्यारोपित कर दी गई। वहीं हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए मरीज नहीं मिलने पर उसके वाल्व किसी जरूरतमंद मरीज को लगाने के लिए सुरक्षित रख लिए गए हैं। मीडिया से बातचीत के दौरान मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रो-प्रेजीडेंट डॉ. सुधीर सचदेव, सलाहकार डॉ. हरि गौतम, प्राचार्य डॉ. जी.एन. सक्सैना भी मौजूद थे।

देशी-विदेशी विशेषज्ञों की टीम जुटी रही

लिवर ट्रांसप्लांट के लिए महात्मा गांधी अस्पताल के चीफ लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. गिरिराज बोरा के नेतृत्व में विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम शनिवार सुबह तक ऑपरेशन में जुटी रही। इनमें अमेरिका के ट्रांसप्लांट एक्सपर्ट डॉ. क्रिस्टोफर बैरी, डॉ. मनोज मालू, डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. लोकेश जैन, डॉ. सुरेश भार्गव, डॉ. दुर्गा जेठवा, डॉ. विपिन गोयल शामिल थे।

अस्पताल में सभी तरह के ट्रांसप्लांट सस्ती दरों पर हों, हम इसके लिए प्रयासरत हैं। हमने 12-13 तरह के ट्रांसप्लांट की परमीशन सरकार से मांगी है, अभी चार की मंजूरी मिली है। जल्द ही लंग्स, यूट्रस व पेनक्रियाज के ट्रांसप्लांट भी किए जाएंगे। जनता को सस्ती दरों पर अत्याधुनिक तकनीक से इलाज देना हमारा उद्देश्य है।
डॉ. एम.एल. स्वर्णकार, चेयरमैन, महात्मा गांधी अस्पताल

---

2 TIMES CITY SUNDAY TIMES OF INDIA, JAIPUR NOVEMBER 29, 2015

Medical milestone: Raj conducts its 1st liver transplant

40 Doctors Take 10 Hours To Conduct Op

Intishab.Ali @timesgroup.com

Jaipur: The first liver transplant in the state gave a new lease of life to 25-year-old Suresh (name changed) who was suffering from liver cirrhosis. The surgery was performed consuming only three units of blood. Some surgeries exhaust 25-30 units of blood. Post-surgery, the doctors of Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) looked happy on Saturday. They claimed that the condition of the recipient of first cadaver liver transplant was satisfactory.

The cadaver liver transplant is always a challenging job for the doctors. "It took more than 10 hours for the doctors to complete the liver transplant," said Dr ML Swarankar, chairman, MGMCH.

Suresh was at the third spot on the waiting list. But he was lucky as the first person on the waiting list refused for the surgery. The cross-matching of HLA and other test reports didn't favour surgery for the second person on the waiting list. When doctors contacted Suresh for cadaver liver transplant, he gave his nod and luckily various tests results showed that the operation could be done.

Earlier, after conducting certain tests necessary for transplant, the doctors started harvesting the organs from the donor at around 11.30 pm on Friday. The doctors started the liver transplant at 3 am on Saturday. The operation continued till 11.30 am on Saturday.

Since, such an operation was happening for the first time, the hospital authorities took all the precautions.

"A team of 40 doctors conducted the surgery which took more than 10 hours," Dr Swarankar said.

"We followed all the guidelines of Organ Transplant Act during the operation," he said. The doctors completed the surgery at 11 am on Saturday. "The blood pressure of the patient is normal. Also, his urine output is normal. We are satisfied with the progress so far," said Dr Giririj Bora who spearheaded the first liver transplant of the state. Dr Bora said that the next 5 to 10 days are important for the patient. "The patient had enlarged blood vessels due to cirrhosis. Also, blood clotting was not normal. There was fluid retention (edema) in abdomen and chest area. He was having difficulty in walking. He required liver transplant as his condition was quite bad," Dr Bora said.

After the surgery, the doctors shifted the patient to a three-bedded ICU meant for postoperative care of liver transplant patients. The recipient belongs to Hindaun City. Dr Bora said that the patient was fighting a battle for life. The ultimate treatment available for him was liver transplant. The number of such patients is quite high in the country. He said that the patient might have contracted viral infection during infancy which damaged his liver. Dr Giriraj Bora has an experience of conducting more than 1,400 liver transplants in Delhi. Most of the liver transplants he conducted were live liver transplants in which an alive donor gives a portion of liver to the recipient.

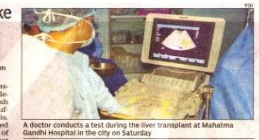

A doctor conducts a test during the liver transplant at Mahatma Gandhi Hospital in the city on Saturday

Efforts to find recipient for cadaver heart go in vain

Times News Network

Jaipur: The massive search launched to find a recipient for the heart harvested from the brain dead person went in vain as the private hospital could not find any. The hospital found no "taker" for the harvested heart.

The family of the 36-year-old brain dead person had donated organs — liver, heart and kidneys on Friday evening. The private hospital — Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) - found recipients for liver and kidneys.

"We checked with heart patients, but no one expressed consent for the heart transplant," said Dr ML Swarankar, chairman, MGMCH.

Now, the hospital has harvested two valves of the harvested heart to utilise them. "The two valves can be used in patients who need them after the green signal of microbiologists," said Dr MA Chisti who had conducted the first heart transplant in the state in August this year.

He said that a heart should be transplanted to a patient within four hours of being harvested from a brain dead donor. The hospital claimed that they had informed the government through mails about the unavailability of recipient of heart and also if government could find any in other states.

Also, the hospitals also tried to find the recipient in Delhi, Mumbai, Chennai etc but all efforts went in vain.

In August, the doctors of the same hospital had transplanted the first heart harvested from a brain dead person. The heart was transplanted in a patient whose heart was functioning only 10% of the capacity. The patient is doing well now. He is fine.

42-year-old Alwar woman, on dialysis for 10 mths, gets new life

Jaipur: The organs of a 36-year-old brain dead person have not only helped the doctors to conduct the first cadaver liver transplant of the state, but also gave a new lease of life to a 42-year-old woman who was on dialysis for the past 10 months. Her surgery was conducted at Sawai Man Singh Hospital where she was undergoing dialysis on a regular basis. The organs were harvested from the brain dead person at Mahatma Gandhi Hospital.

As per norms, the private hospital sent one kidney to the government hospital for transplant. The 42-year-old woman, who is a resident of Alwar district, was lucky as her human leukocyte antigen (HLA) matched with the donor's.

"The surgery was successful, and now she is recovering and taking post-operative treatment at the hospital," said Dr Ajit Singh, additional superintendent, SMS Hospital. "The woman has no donor in her family. She was given preference on the basis of waiting-list of recipients. The patient is fine now. She belongs to the BPL category. So far at SMS Hospital, seven kidney transplants have been conducted, including today's surgery," said Dr Vinay Tomar, head, transplant programme.

Nephrologists say that in case of kidney failure, the doctors put the patient on a dialysis but kidney transplant is the only best possible treatment available for such patients. Health minister Rajendra Rathore expressed solidarity with the family of brain-dead person. Besides, the minister announced free treatment of the first 11 cases of cadaver transplants. TNN

Docs to perform live brain surgery

Ajay Parmar | TNN

Jodhpur: Jodhpur will soon have the facility of endoscopic brain surgery. As a dress rehearsal, the neurosurgery department here is going to organise a live brain surgery through endoscopy, currently available only in SMS Hospital, which too is in a nascent stage, on a couple of patients with skull base tumour and slip disk on Monday.

Terming it to be a major achievement in neurosurgery, principal of S N Medical College Amilal Bhat said that as a part of the ongoing golden jubilee celebrations, the department of neurosurgery is going to hold a live surgery workshop followed by a CME 'Endoscopic Pituitary Surgery' on Monday, which will be performed by eminent neurosurgeon B S Sharma (HOD, neurosurgery, AIIMS, New Delhi), who is also the president of the Neurological Society of India.

Bhat further said that soon after this, endoscopic surgeries would begin in Jodhpur. "We already have a budget sanction of Rs 3 crore for arranging the required equipment, which would be available here soon and now we would send the doctors for training," he said.

HOD (neurosurgery) Sunil Garg said that through endoscopic surgeries of brain, not only time of surgery but recovery time would also be reduced significantly. Besides, the risk to brain would also come down.

In a normal surgery, doctors take 3 to 4 hours followed by 10-11 days of recovery time for patients, but with the endoscopic procedure, the surgery time will reduce to about 1 hour and recovery period would be around 2-3 days.

Garg said, "earlier, we had to open the skull in order to enter the brain, but with this procedure, we will just put the endoscope through the nostrils and reach the operative part without having any need to touch the brain".

Currently, only 5-7 surgeries are conducted by the department here, with many patients making their way to Ahmedabad or other big cities for surgery.

"With this technique becoming available here in a few months, we look forward not only to a spurt in the number of surgeries but also arrest in the trend of going to big towns, which costs the patients a fortune," said associate professor Sharad Thanvi.

Living Donor Liver Transplantation at MGH, Jaipur

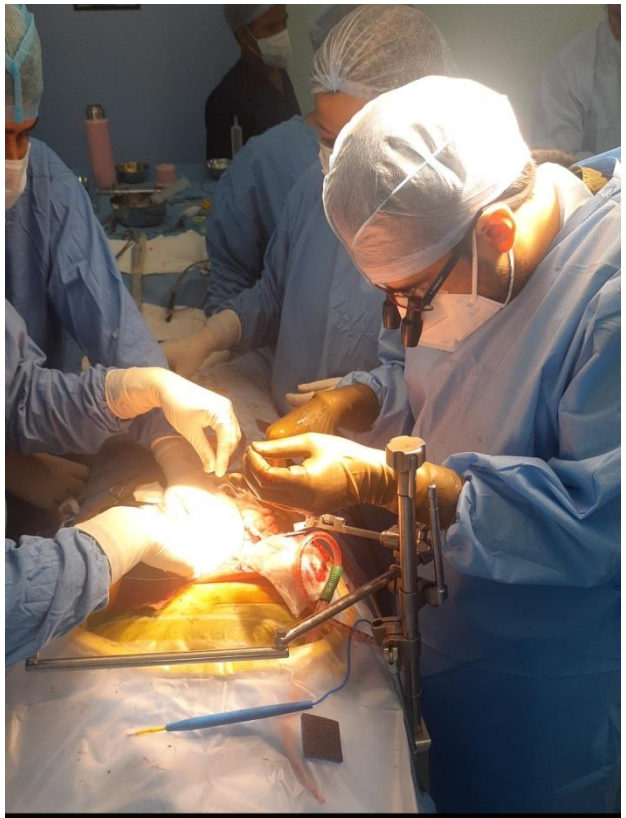

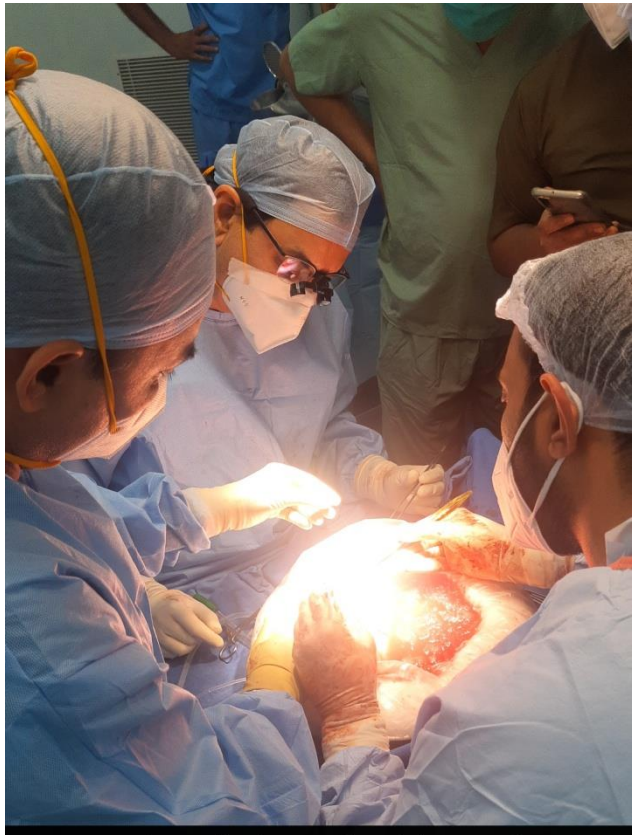

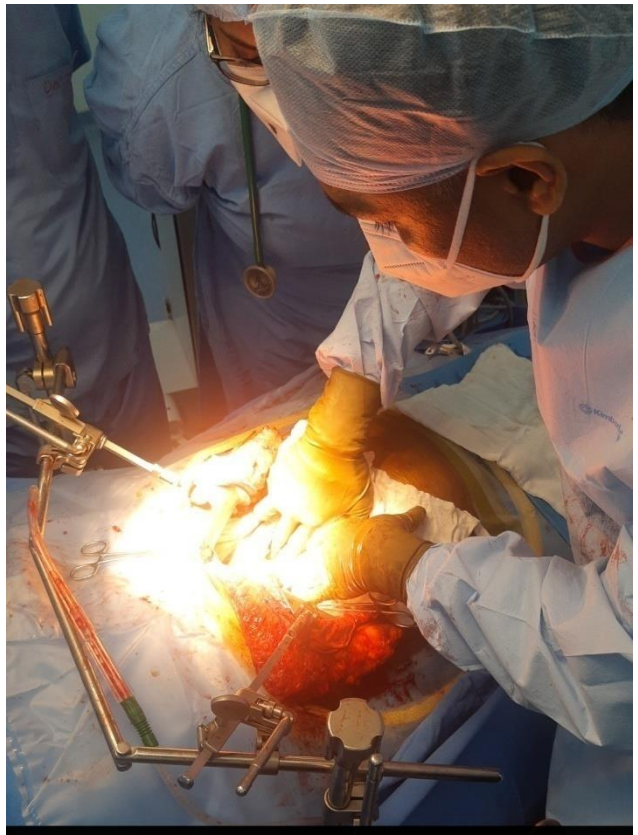

Kidney Transplant

प्रदेश में पहली बार किडनी का एबीओ इनकॉम्पिटेबल प्रत्यारोपण

अब ग्रुप मैचिंग नहीं रही बाधा

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

किडनी प्रत्यारोपण के लिए अब मरीजों को क्रॉस मैचिंग की परेशानी से नहीं गुजरना पड़ेगा। राजस्थान में भी अब एबीओ इनकॉम्पिटेबल प्रत्यारोपण संभव हो गया है। इससे क्रॉस मैचिंग की जटिल प्रक्रिया के बिना ही कुछ दवाओं के सहारे मरीज के शरीर को डोनर की किडनी

दोनों किडनियां थीं खराब

जोधपुर के रानू कुमार की दोनों किडनियां खराब थीं। जिसके बाद उसे एक साल डायलिसिस पर रखा गया। इसके बाद उसे महात्मा गांधी अस्पताल लाया गया, जहां पर उसका सफल ट्रांसप्लांट संभव हो सका।

स्वीकार करने योग्य बना दिया जाता है। महात्मा गांधी अस्पताल ने इसका सफलतापूर्वक केस पूरा करने का दावा किया है।

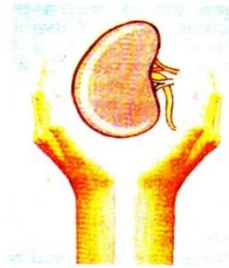

कैसे हुआ किडनी ट्रांसप्लांट

अस्पताल के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ सूरज गोदारा ने बताया कि रानू का ब्लड ग्रुप ओ पॉजिटिव था और डोनर उसके पिता ही थे, जिनका ब्लड ग्रुप बी पॉजिटिव था। ऐसे में किडनी प्रत्यारोपण संभव नहीं था। लेकिन एबीओ इनकॉम्पिटेबल प्रत्यारोपण की मदद से यह सफलतापूर्वक हो सका। गोदारा ने बताया कि सूरज को 19 फरवरी को भर्ती किया गया और 11 मार्च को उसका सफल ऑपरेशन कर दिया गया। इस दौरान उसके शरीर से एंटी बॉडीज को भी विशेष तकनीक से निकाला गया। साथ ही नए एंटी बॉडीज बनाने के लिए उसे विशेष दवाएं दी गई और प्लाज्मा फिल्टर किए गए।

25 साल बाद आई तकनीक

जापान में यह तकनीक 1989 में शुरू हुई। इसके बाद भारत में कुछ साल बाद इसे मुंबई के एक अस्पताल में अपनाया गया। अभी देश के करीब आधा दर्जन केन्द्रों पर यह उपलब्ध है। सामान्य प्रत्यारोपण की तुलना में इसका खर्चा डेढ़ से दो लाख अधिक है। किडनी प्रत्यारोपण दल के प्रमुख डॉ.टीसी सदासुखी ने बताया कि देश में हर साल एक लाख लोगों को किडनी की जरूरत होती है। इनमें से 6 से 7 हजार का ही प्रत्यारोपण हो पाता है। अस्पताल के चेयरमेन डॉ.एम.एल स्वर्णकार ने बताया कि इस तरह के प्रत्यारोपण देश के दूसरे शहरों की तुलना में यहां सस्ते है।

इन्फैक्शन का खतरा | **किडनी** ट्रांसप्लांट के दौरान मरीज और डॉक्टर के सामने सबसे बड़ी समस्या होती है किडनी रिजेक्शन की। ऐसे में मरीज को इन्फैक्शन और तेज बुखार जैसी समस्याएं हो जाती हैं। कुछ मामलों में यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

किडनी प्रत्यारोपण में ब्लड ग्रुप मैचिंग अब बाधा नहीं

महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ राज्य का पहला 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल' किडनी प्रत्यारोपण

जयपुर (कासं)। किडनी प्रत्यारोपण की नई तकनीक 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल प्रत्यारोपण' तकनीक रोगियों के लिए खुश खबर बन कर आई है। यह तकनीक उन रोगियों में जीवन का नया संचार करेगी जिन्हें किडनी प्रत्यारोपण की आवश्यकता है, अंगदाता भी है किन्तु ब्लड ग्रुप मैचिंग नहीं हो पाने से निराश हो चुकेहैं। महात्मा गांधी अस्पताल के किडनी प्रत्यारोपण विशेषज्ञों की टीम ने इस तकनीक के जरिए किडनी प्रत्यारोपित कर राज्य में एक नया इतिहास रचा है। यह राज्य में अपनी तरह का पहला मामला है। देश के चुनिंदा केन्द्रों पर ही होता है इस तकनीक का प्रयोग

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने मंगलवार को मीडिया को यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश के ब्लड ग्रुप मैचिंग नहीं करने वाले किडनी के मरीजों को ट्रांसप्लांट के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। जोधपुर निवासी 21 वर्षीय रानू कुमार का जयपुर के सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में राज्य का पहला एबीओ किडनी ट्रांसप्लांट करके नई जिन्दगी दी है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार की तकनीक का प्रयोग देश के चुनिंदा केन्द्रों पर ही होता है। डॉक्टरों के अनुसार पिछले साल

शेष पृष्ठ 4 पर

किडनी प्रत्यारोपण ...

ही रानू कुमार को पता लगा था कि उसकी दोनों किडनी खराब हो चुकी है तथा एक साल से डायलिसिस पर उपचार ले रहा है। ब्लड ग्रुप ओ पॉजिटिव होने के कारण परिवार में किसी से मैचिंग नहीं हुई, लेकिन फिर टीम ने एबीओ तकनीक का इस्तेमाल कर किडनी ट्रांसप्लांट किया गया। मरीज का ब्लड ग्रुप मैच नहीं करने की वजह से ट्रांसप्लांट असंभव सा लग रहा था। टीम के सदस्यों के अथक प्रयास से 11 मार्च को ट्रांसप्लांट किया। ऑपरेशन के दौरान मरीज के शरीर से 'एंटी बॉडी तत्वों को निकाला गया, जिससे प्रत्यारोपित किडनी को शरीर अस्वीकार न कर दे। उन्होंने बताया कि इस तरह केकिडनी प्रत्यारोपण जापान तथा कोरिया में काफी किए जा रहे हैं।

तीस फीसदी रोगी नॉन मैचिंग के कारण प्रत्यारोपण नहीं करा पाते : टीम के नेतृत्वकर्ता सदस्य डॉ. टी सी सदासुखी ने बताया कि जिन रोगियों में किडनी प्रत्यारोपण की आवश्यकता होती है उनमें से तीस फीसदी रोगी महज नॉन मैचिंग की वजह से प्रत्यारोपण नहीं करा पाते हैं। 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल प्रत्यारोपण तकनीक ऐसे रोगियों के लिए जीवनदायिनी साबित हो रही है। उन्होंने बताया कि देश में हर साल लगभग एक लाख लोगों को किडनी ट्रांसप्लांट की आवश्यकता होती है। इनमें से छह से सात हजार का इसी प्रकार के ट्रांसप्लांट से ही उपचार संभव है। ऐसे भी मरीज हैं, जो पैसे, समय पर उपचार एवं डोनर के नहीं मिलने की वजह से ट्रांसप्लांट नहीं करा पाते हैं। ऑपरेशन में डॉ.टी.सी.सदासुखी के अलावा डॉ.सूरज गोदारा, डॉ.गोविंद शर्मा, डॉ.एम.ए.चिश्ती, डॉ.अनुज विपिन राजवंशी, डॉ.दुर्गा जेठवा, डॉ.सुरेश भार्गव तथा ब्लड बैंक प्रभारी डॉ.हरीश रक्सेना का सहयोग रहा।

किडनी ट्रांसप्लांट में अब ब्लड ग्रुप समान होना जरूरी नहीं'

जयपुर, (कासं)। किडनी रोगियों को अब किडनी प्रत्यारोपण की नई तकनीक 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल' की मदद से अब अलग ब्लड ग्रुप के अंगदाताओं की किडनी भी लगाई जा सकेगी। महात्मा गांधी अस्पताल ने इस तरह का एक ट्रांसप्लांट भी कर लिया है।

यह जानकारी महात्मा गांधी अस्पताल के अस्पताल के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने मंगलवार को एक प्रेस वार्ता के दौरान दी। उन्होंने बताया कि इस तकनीक की मदद से इसे उन मरीजों का उपचार मिल पायेगा, जिनके पास अंगदाता तो है लेकिन ब्लड ग्रुप अलग होने की वजह से किडनी ट्रांसप्लांट नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा कि अब किडनी प्रत्यारोपण में ब्लड ग्रुप समान होना जरूरी नहीं है।

वरिष्ठ गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. सूरज गोदारा ने बताया कि जोधपुर निवासी बीस वर्षीय रानू कुमार की दोनो किडनियां खराब थी। जो पिछले एक साल से डायलिसिस उपचार ले रहा था। इसका ब्लड ग्रुप 'ओ' पॉजिटिव है। रानू को किडनी देने के लिए तैयार उसके पिता कैलाश सिंह का ब्लड ग्रुप 'बी' पॉजीटिव होने की वजह से किडनी ट्रांसप्लांट नहीं हो रहा था।

किडनी प्रत्यारोपण दल के प्रमुख डॉ. टी सी सदासुखी ने बताया कि रानू कुमार के शरीर से 'एंटी बॉडी' तत्वों को निकाला गया। जिससे कि अलग ब्लड ग्रुप की किडनी को शरीर अस्वीकार न करें। इसके बाद उसके पिता कैलाशसिंह की किडनी रानू को लगाई गई। और अभी मरीज रानू और उसके पिता कैलाश पूर्णतया स्वस्थ है। डॉ. सदासुखी ने बताया कि इस तकनीक में सामान्य ट्रांसप्लांट की एवज में करीब चार से पांच लाख रूपये का खर्चा आता है।

ब्लड ग्रुप मैचिंग अब बाधा नहीं

'एबीओ इनकॉम्पेटिबल' से हुआ पहला किडनी ट्रांसप्लांट

महात्मा गांधी अस्पताल में विशेषज्ञों की टीम ने पाई सफलता

जयपुर (मोन्यू)। किडनी प्रत्यारोपण की नई तकनीक 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल' प्रत्यारोपण तकनीक रोगियों के लिए खुश खबर बनकर आई है। यह तकनीक उन रोगियों के में जीवन का नया संचार करेगी जिन्हें किडनी प्रत्यारोपण की आवश्यकता है, अंगदाता भी है, किन्तु ब्लड ग्रुप मैचिंग नहीं हो पाने से निराशा हाथ लग रही है। महात्मा गांधी अस्पताल के किडनी प्रत्यारोपण विशेषज्ञों की टीम ने इस तकनीक के जरिए किडनी प्रत्यारोपित कर राज्य में एक नया इतिहास रचा है। अस्पताल चिकित्सक विशेषज्ञों का दावा है कि यह राज्य में अपनी तरह का पहला मामला है।

वरिष्ठ गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. सूरज गोदारा ने बताया कि जोधपुर निवासी बीस वर्षीय रानू कुमार, उम्र बीस वर्ष को पिछले साल ही पता लगा कि उसकी दोनों किडनियां अज्ञात कारणों से खराब हो चुकी हैं। महात्मा गांधी अस्पताल में जांच करने पर मरीज का ब्लड ग्रुप 'ओ' पॉजीटिव पाया गया। जबकि अंगदान को तैयार उसके पिता कैलाश सिंह का ब्लड ग्रुप 'बी' पॉजीटिव था। इस मामले में पहली बार 'एबीओ इनकॉम्पिटेबल' प्रत्यारोपण तकनीक का प्रयोग रानू कुमार तीन हफ्ते पहले भर्ती कर उसका किडनी प्रत्यारोपण 11 मार्च को किया गया। इस दौरान उसके शरीर से 'एंटी बॉडी' तत्वों को निकाला गया। अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम एल स्वर्णकार ने इसे राज्य की बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा है कि इस तकनीक ने राज्य की नहीं आसपास के राज्यों के किडनी प्रभावित रोगियों में जीवन की आस जगाई है।

किडनी प्रत्यारोपण दल के प्रमुख डॉ. टी सी सदासुखी ने बताया कि देश में हर साल लगभग एक लाख लोगों को किडनी प्रत्यारोपण की आवश्यकता होती है। इनमें से छह से सात हजार ही प्रत्यारोपण द्वारा उपचारित होते हैं। शेष रोगी पैसे, समय पर उपचार, अंगदाता के न होने की वजह से प्रत्यारोपण नहीं करा पाते हैं।

State's first 'incompatible' kidney transplant performed on 21-yr-old

HT Correspondent

The patient, Ranu Kumar (second from right), with his donor father (third from right) and doctors of Mahatma Gandhi hospital in Jaipur on Tuesday. PRABHAKAR SHARMA/HT PHOTO

JAIPUR: In a first for the state, a Jaipur hospital has successfully performed an ABO incompatible kidney transplant on a 21-year-old youth.

Doctors at Mahatma Gandhi Medical College and Hospital transplanted a kidney of 50-year-old Kailash Singh (B+ donor) to his son Ranu Kumar (O+ acceptor), hospital authorities said.

ABO incompatible transplant is a method by which an organ can be transplanted to a patient even if his blood group does not match with the donor. It is the best option for a patient who has no compatible donors in the family and the cadaver waiting list is long.

Addressing a press conference on Tuesday, Dr Suraj Godara, senior consultant nephrologist at the hospital, said Ranu's both kidneys had failed and he was on dialysis for the last one year.

Doctors in Jodhpur, the patient's hometown, suggested kidney transplant for him, but there was no compatible donor in the family, Godara said.

After visiting many hospitals, the family took Ranu to Mahatma Gandhi hospital. It's for the first time in Rajasthan that ABO incompatible kidney transplant technique was used, Godara said.

Countries like Japan and South Korea conduct such non-matching kidney transplant regularly, but doctors in India have been shying away from this "cumbersome" procedure. Only a few hospitals in India have conducted a handful of ABO incompatible transplants.

He said that generally, a patient is admitted two days before kidney transplant, but Kumar was admitted a week in advance and his transplant was performed on March 11.

Describing the procedure, he said antibodies were removed from the patient's body so that it did not reject the transplanted kidney. Kumar will be discharged in a day or two, he added.

Dr TC Sadasukhi, who headed the doctors' team for the transplant, said every year 1 lakh people require kidney transplant, but only 6,000-7,000 get it. The remaining fail to get transplant done for want of money, timely treatment, or lack of donors, he said.

He said more than 70% renal failure patients who undergo normal transplant survive for 10 years and beyond, and about 40% live for 20 years and more. The new method could be as good as that of normal transplant, he said.

Hospital chairman Dr ML Swarnkar said the cost of ABO incompatible transplant is ₹5 lakh compared to ₹3 lakh for normal procedure.

PROCEDURE

- Antibody (ABO) incompatible transplant is a method by which an organ can be transplanted to a patient even if his blood group does not match with the donor's
- It's the best option for a patient who has no compatible donors in the family and the cadaver waiting list is long
- This procedure involves removal of antibodies so that the body doesn't reject transplanted kidney

गुर्दा प्रत्यारोपण में अब समान ब्लड ग्रुप का होना आवश्यक नहीं

पहले केडेवर ट्रांसप्लांट मरीज से चिकित्सा मंत्री की मुलाकात

नेशनल दुनिया

जयपुर। राज्य के पहले केडेवर ट्रांसप्लांट से लाभान्वित मरीज से मिलने स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र राठौड़ गुरुवार को सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचे।

अस्पताल में गत छह फरवरी को एक ब्रेन डेड बच्चे की दोनों किडनी एक 50 वर्षीय व्यक्ति के ट्रांसप्लांट की गई थी। यह राज्य में निजी व सरकारी क्षेत्र में पहला केडेवर ट्रांसप्लांट था। इसी बच्चे की लीवर दिल्ली में एक अन्य मरीज के ट्रांसप्लांट किया गया था। स्वास्थ्य मंत्री ने अस्पताल में किडनी ट्रांसप्लांट वाले मरीज से मुलाकात कर कुशलक्षेम पूछी। इस दौरान

मरीज की कुशलक्षेम पूछते चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र राठौड़। नेशनल दुनिया

अस्पताल के चेयरमेन डॉ. एमएल स्वर्णकार, ट्रांसप्लांट टीम के हैड डा. टीसी सदासुखी सहित वरिष्ठ चिकित्सक मौजूद थे।

महात्मा गांधी अस्पताल में राज्य का पहला कैडेवर ट्रांसप्लांट हुआ (सफेद कुर्ते में मरीज व पास खड़े चिकित्सा मंत्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ तथा साथ में चिकित्सक) ।

स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ गुरुवार को महात्मा गांधी अस्पताल में किडनी ट्रांसप्लांट मरीज से मिलने गए। मरीज का पिछले दिनों किडनी ट्रांसप्लांट किया गया था। इस दौरान उन्होंने मरीज की कुशलक्षेम पूछकर जल्द स्वस्थ्य होने की कामना की।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :DAILY NEWS , PAGE- 5, DATE 15.2.2015

मिसाल | वैलेंटाइन डे पर निजी अस्पताल में हुआ स्वैप किडनी ट्रांसप्लांट

...और बचा लिया एक-दूसरे का सिंदूर

दो महिलाओं का गुर्दा दान

सिटी रिपोर्टर, जयपुर ▷ 14 फरवरी

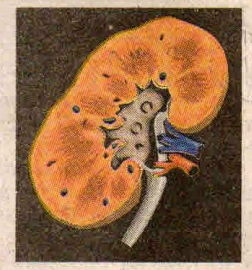

वैलेंटाइन डे पर पति की जान बचाने के लिए दो महिलाओं ने एक-दूसरे के पति को किडनी दान कर अनोखा उदाहरण पेश किया है। सीतापुरा स्थित एक निजी अस्पताल में स्वैप किडनी ट्रांसप्लांट के जरिए दो परिवारों को न सिर्फ खुशी मिली बल्कि मरीजों को नया जीवनदान भी मिला।

अस्पताल के गुर्दा प्रत्यारोपण विभागाध्यक्ष डॉ. टीसी सदासुखी ने बताया कि अस्पताल में भर्ती किडनी के गंभीर रोगी जगदीश (47) को ए पॉजीटिव ब्लड ग्रुप की किडनी चाहिए थी। उनकी पत्नी राजवती देवी का ब्लड ग्रुप बी पॉजीटिव था। मैच नहीं मिलने की वजह से ट्रांसप्लांट नहीं हो पा रहा था, वहीं अस्पताल में दूसरे किडनी रोगी श्रवण कुमार (61) का ब्लड ग्रुप बी पॉजीटिव था जबकि पत्नी शारदा देवी का ब्लड ग्रुप ए पॉजीटिव था। ये भी अपने पति को मिस मैचिंग की वजह से किडनी डोनेट नहीं कर पा रही थी। चिकित्सकों ने दोनों परिजनों को एक-दूसरे से मिलवाकर आपसी सहमति का सुझाव दिया। दोनों महिलाओं ने अपने पति की जीवनरक्षा के लिए अपनी किडनी दूसरे किडनी रोगी को डोनेट की। इस तरह से त्याग तथा संवेदनाओं ने दो व्यक्तियों को नई जिंदगी दी।

अस्पताल के गुर्दा रोग विषेषज्ञ डॉ. सूरज गोदारा ने बताया कि दोनों ही रोगी पिछले काफी समय से डायलिसिस पर चल रहे थे। उनका यूरीन आउटपुट कम था तथा क्रिएटिनिन लेवल काफी बढ़ा हुआ था। जीवन पर बन आने की स्थिति में दोनों परिवारों की समझाइश की गई। दोनों रोगियों का टिशू मैचिंग सफल रहा। शनिवार को उनका ऑपरेशन कर दिया गया। किडनी डोनर महिलाएं तथा अंग प्राप्तकर्ता रोगी अब ठीक है।

डॉ. एच. एल. गुप्ता, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. बज, डॉ. गोविन्द शर्मा, डॉ. दुर्गा जेठवा तथा डॉ. विपिन गोयल भी ऑपरेशन टीम में शामिल थे।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :DAINIK NAVJYOTI - PAGE- 2, DATE 15.2.2015

दो महिलाओं ने एक-दूसरे के पति को दी किडनी

न्यूज/नवज्योति,जयपुर

अपने वैलेंटाइन के लिए आसमां के तारे तोड़ लाना तो संभव नहीं पर अपनी किडनी डोनेट कर उसकी जान जरूर बचाई जा सकती है। राजधानी के महात्मा गांधी अस्पताल में शनिवार को एक स्वैप किडनी ट्रांसप्लांट के जरिए दो महिलाओं ने एक दूसरे के पति को किडनी डोनेट कर त्याग का ऐसा ही एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अस्पताल के गुर्दा प्रत्यारोपण विभागाध्यक्ष डॉ. टीसी सदासुखी ने बताया कि राज्य में अब किडनी डोनेशन के मामलों में जागरूकता बढ़ी है। उन्होंने बताया कि अस्पताल में भर्ती किडनी के गंभीर रोगी जगदीश उम्र 47 वर्ष को ए पॉजीटिव ब्लड ग्रुप की किडनी चाहिए थी। उनकी पत्नी राजवती देवी का ब्लड ग्रुप बी पॉजिटिव था। चाहने पर भी उनका किडनी ट्रांसप्लांट मैचिंग के अभाव में नहीं हो पा रहा था। वहीं अस्पताल में दूसरे किडनी रोगी श्रवण कुमार 61 वर्ष का ब्लड ग्रुप बी पॉजिटिव था, जबकि उनकी पत्नी शारदा देवी का ब्लड ग्रुप ए पॉजिटिव था। ये भी अपने पति को मिस मैचिंग की वजह से किडनी डोनेट नहीं कर पा रही थी। चिकित्सकों ने दोनों परिजनों को एक दूसरे से मिलवाकर आपसी सहमति का सुझाव दिया।

दोनों महिलाओं ने अपने पति की जीवनरक्षा के लिए अपनी किडनी दूसरे किडनी रोगी को डोनेट की। इस तरह से त्याग तथा संवेदनाओं ने दो व्यक्तियों को जीवन की राह दिखाई। महात्मा गांधी अस्पताल के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. सूरज गोदारा ने बताया कि दोनों ही रोगी पिछले काफी समय से डायलिसिस पर चल रहे थे। ऑपरेशन टीम में डॉ एचएल गुप्ता, डॉ मनीष गुप्ता, डॉ बज, डॉ. गोविंद शर्मा, डॉ. दुर्गा जेठवा तथा डॉ. विपिन गोयल भी थे।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :NATIONAL DUNIYA FRONT PAGE, DATE 15.2.2015

वैलेन्टाइन' को तोहफे में दी किडनी

नेशनल दुनिया

जयपुर। मोहब्बत चीज ही ऐसी है, ये एक आग का दरिया है और डूब के जाना है। अपने महबूब के लिए क्या-क्या न वादे किए जाते हैं। कोई चांद तारे तोड़ कर लाने की बात करता है, तो कोई सारे जहां का प्यार कुर्बान करने का दम भरता है। मगर कुछ शख्स ऐसे भी हैं, जो बिना कुछ कहे ऐसा कर जाते हैं, जो प्रेम की अमर मिसाल बन जाती है। जयपुर में वैलेन्टाइन-डे पर ऐसा ही वाकया पेश आया है। जिसमें चांद-तारे तो नहीं, अपने हमराह की सलामती के लिए किडनी दान करके मोहब्बत की इंतेहा पेश की है।

यह हो पाया स्वैप किडनी डोनेशन प्रक्रिया से। इसमें दो महिलाओं ने किडनी खराब होने के चलते जिंदगी-मौत से जूझ रहे अपने पतियों के लिए किडनी एक्सचेंज करके प्यार के पर्व वैलेन्टाइन को यादगार बना दिया। दोनों के पतियों का किडनी ट्रांसप्लांट शनिवार को यहां सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में किया गया। अस्पताल के गुर्दा प्रत्यारोपण विभागाध्यक्ष डॉ. टी.सी. सदासुखी ने बताया कि अस्पताल में भर्ती रायसिंहनगर गंगानगर निवासी किडनी के गंभीर रोगी जगदीश 47 वर्ष को 'ए पॉजीटिव' ब्लड ग्रुप की किडनी चाहिए थी। मगर उनकी पत्नी राजवती देवी का ब्लड ग्रुप 'बी पॉजीटिव' था। चाहने पर भी उनका किडनी ट्रांसप्लाण्ट मैचिंग के अभाव में नहीं हो पा रहा था। इसी अस्पताल में भर्ती दूसरे किडनी रोगी जयपुर के दुर्गापुरा निवासी श्रवण कुमार 61 वर्ष का ब्लड ग्रुप 'बी पॉजीटिव' था, जबकि उनकी पत्नी शारदा देवी का ब्लड ग्रुप 'ए पॉजीटिव' था। ये भी अपने पति को मिस मैचिंग की वजह से किडनी डोनेट नहीं कर पा रही थी।

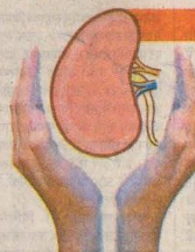

ऐसे बनी बात

अस्पताल के चिकित्सकों ने दोनों मरीजों के परिजनों को एक-दूसरे से मिलवाकर आपसी सहमति का सुझाव दिया। दोनों महिलाएं अपने पति की जीवनरक्षा के लिए अपनी किडनी, दूसरे किडनी रोगी को डोनेट करने के लिए तैयार हो गई। इस तरह से त्याग तथा संवेदनाओं ने दो व्यक्तियों को जीवन की राह दिखाई।

टीम में ये डॉक्टर

डॉ. एचएल गुप्ता, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. बज, डॉ. गोविंद शर्मा, डॉ. दुर्गा जेठवा तथा डॉ. विपिन गोयल भी ऑपरेशन में प्रमुख सहयोगी रहे।

कैडेवर ट्रांसप्लांट भी हुआ

महात्मा गांधी अस्पताल में पिछले दिनों एक ब्रेन डैड बच्चे के जरिए पहला कैडेवर ट्रांसप्लांट किया गया था। इस बच्चे की किडनी अस्पताल में एक मरीज को लगाई गई थी और उसका लीवर दिल्ली में दूसरे मरीज को ट्रांसप्लांट किया था।

डायलेसिस पर थे, अब स्वस्थ

अस्पताल के गुर्दा रोग विषेषज्ञ डॉ. सूरज गोदारा ने बताया कि दोनों ही रोगी पिछले काफी समय से डायलिसिस पर चल रहे थे। उनके स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट आ रही थी। जीवन पर बन आने की स्थिति में दोनों परिवारों की समझाइश की गई। दोनों रोगियों के टिश्यू मैचिंग भी पूरी तरह सफल रही। शनिवार को उनका सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर दिया गया। किडनी डोनर महिलाएं तथा अंग प्राप्तकर्ता रोगी अब ठीक हैं।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :SANDHYA JYOTI DARPAN PAGE NO: 3 DATE 12-.02.2015

सरकार लोगों को आधुनिक चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध : राजे

महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी में नई सेवाओं का उद्घाटन

जयपुर, 2 फरवरी। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा है कि सरकार प्रदेशवासियों को बेहतर एवं अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। यह खुशी की बात है कि इस दिशा में निजी क्षेत्र भी आगे आ रहा है। सरकार के साथ ही निजी क्षेत्र में कार्य कर रही नामी संस्थाओं द्वारा भी लोगों को सस्ता इलाज सुलभ कराने की पहल सुखद संकेत है।

राजे शनिवार को यहां सीतापुरा में महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साईंसेज एण्ड टेक्नोलॉजी में नई एवं उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं के शुभारम्भ तथा जगतपुरा में इंटर्नल हार्ट केयर सेन्टर हॉस्पिटल के उद्घाटन समारोहों को सम्बोधित कर रहा था। उन्होंने महात्मा गांधी हॉस्पिटल में राज्य के पहले मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेन्टर, टेलीमेडिसिन सेन्टर, आईसीयू ब्लॉक, नवजात एवं बाल गहन चिकित्सा इकाई, किडनी डायलेसिस इकाई तथा केमो के सब-स्टेशन का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के राजकीय चिकित्सालयों में कार्यरत चिकित्सक और रेजीडेन्ट्स कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ चुनौतीपूर्ण स्थितियों में लोगों की सेवा करते हैं। हम सरकारी चिकित्सालयों को भी अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करेंगे।

MGH ADVERTISEMENT Publication : DNA Pg.-4 Dt. 24.07.2015

Even after death, he gave a fresh lease of life to two

Doctors Sudhir Sachdev (right) and TC Sadasukhi addressing mediapersons on Thursday. —Sanotsh Sharma. dna

dna correspondent @jaipurdna

A resident of Vijaynagar, Ganganagar, 33-year-old Kishan Singh, was brought to Mahatma Gandhi Hospital on July 21 after he suffered a brain haemorrhage. To his bad luck, the doctors found him brain-dead on his arrival while his vital organs still functioning.

The doctors suggested Singh's family members for donation of his organs including kidneys and heart which could still be used in a patient. After giving much thought, the family members agreed and doctors surgically extracted the kidneys and the heart for donation.

This came as new lease of life for 41-year-old Seema Sharma, a resident of Jhunjhunu and 50-year-old Ajmer resident Champa Devi both of whom had been on dialysis for years and badly needed a donor whose kidneys could match theirs.

Luckily for the ladies, the kidneys matched and on Thursday, Champa Devi was transplanted the kidney at Mahatma Gandhi Hospital while Seema Sharma was transplanted the kidney by team of doctors lead by Dr Vinay Tomar at the Sawai Man Singh Hospital.

"We transplanted the kidney into Champa Devi which was generously donated by family members of Mr. Kishan Singh," said Dr TC Sadasukhi, HoD, Department of Kidney Transplant, MG Hospital, told the press.

Doctor Sudhir Sachdev, Pr VC, MG University, said that the valves of the extracted heart of Singh are also fine and is fit to be donated to patients.

MGH NEWS Publication : HINDUSTAN TIMES Pg.-2 Dt. 24.06.2015

On dialysis for 23 yrs, kidney transplant gives Ajmer woman new lease of life

HT Correspondent
htraj@hindustantimes.com

JAIPUR: On dialysis for last 23 years, Champa Devi, 50, a resident of Ajmer, got a fresh lease of life on Thursday after the doctors at Mahatma Gandhi Medical College and Hospital Jaipur, conducted a successful kidney transplant using the organ donated by a 33-year-old man who succumbed to brain haemorrhage on Tuesday.

A little farther, Seema Sharma, 41, resident of Jhunjhunu, who has been on dialysis for last one year too underwent a successful kidney transplant using the other kidney donated by the same man at Sawai Man Singh Medical College, Jaipur.

THIS WAS THIRD CADAVER KIDNEY TRANSPLANT AT SMS HOSPITAL, WHILE THE SECOND CADAVER KIDNEY TRANSPLANT AT MG HOSPITAL

This was third cadaver kidney transplant at SMS hospital, while the second cadaver kidney transplant at Mahatma Gandhi hospital.

Mahatma Gandhi Medical College and Hospital kidney transplant head Dr TC Sadasukhi said, "Kishan Singh, 33, a resident of Vijaynagar in Sriganganagar district, who was suffering from brain haemorrhage was admitted to the hospital on July 21. He was found brain dead during investigations and after persuasion the family members of Singh agreed to donate his organs."

His two kidneys were transplanted to Champa Devi and Seema Sharma.

MGMCH chief heart surgeon Dr MA Chisti told reporters that aortic and pulmonary valve of the heart of Kishan Singh had been taken out and preserved so that it could be transplanted to a needy person. His heart was not found suitable for transplant as he had suffered cardiac arrest, he added.

SMS hospital medical superintendent Dr Man Prakash Sharma said that the transplant has been successful and patient is recovering.

ahatma
lospital
Google
GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan 303905, India
Lat 26.77001°
Long 75.854481°
13/07/21 11:13 AM

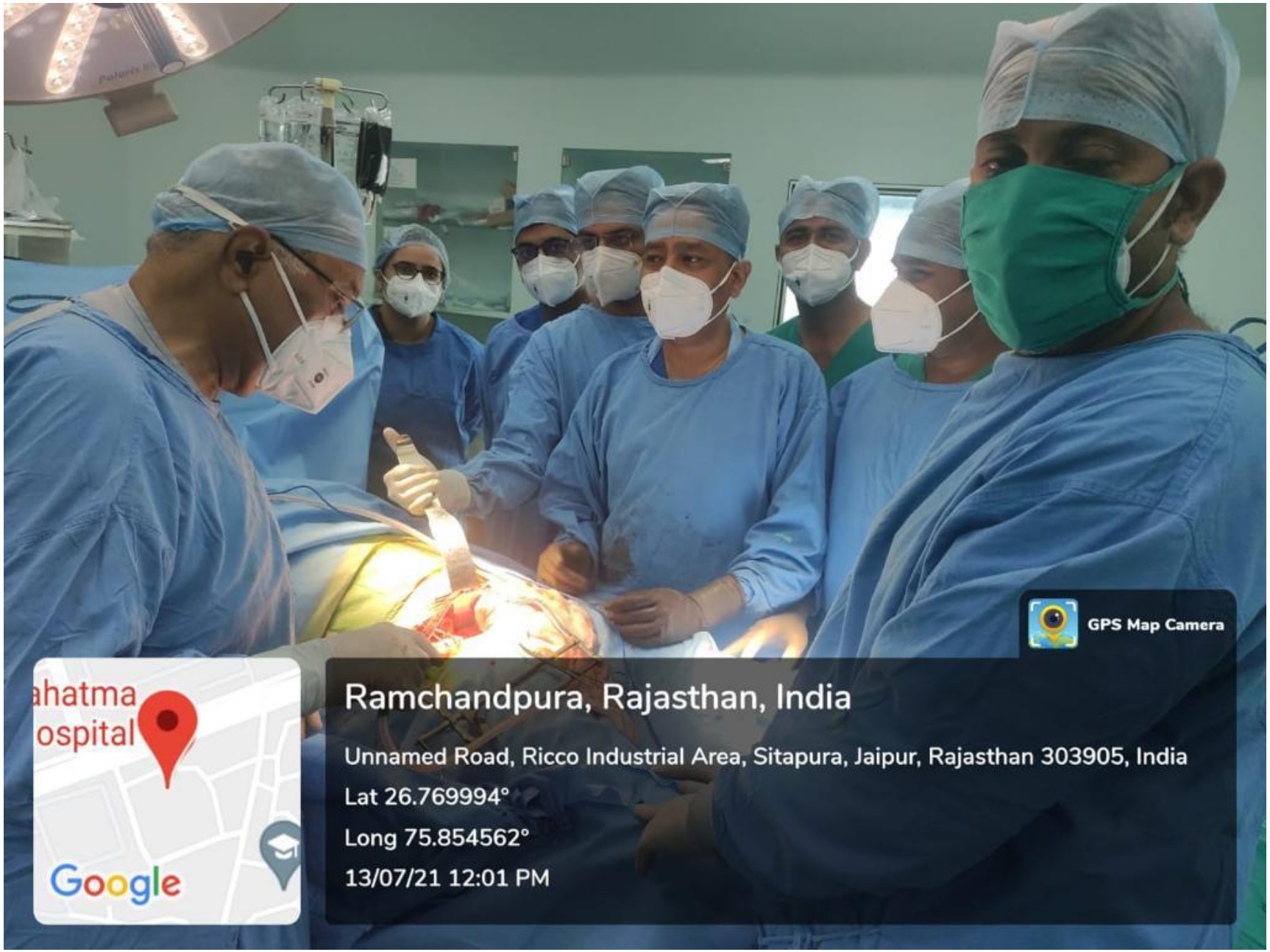
GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan 303905, India
Lat 26.769994°
Long 75.854562°
13/07/21 12:01 PM
Google

GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan
303905, India
Lat 26.77001°
Long 75.854479°
13/07/21 10:43 AM
Google

GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan 303905, India
Lat 26.770008°
Long 75.85448°
13/07/21 10:43 AM
Google

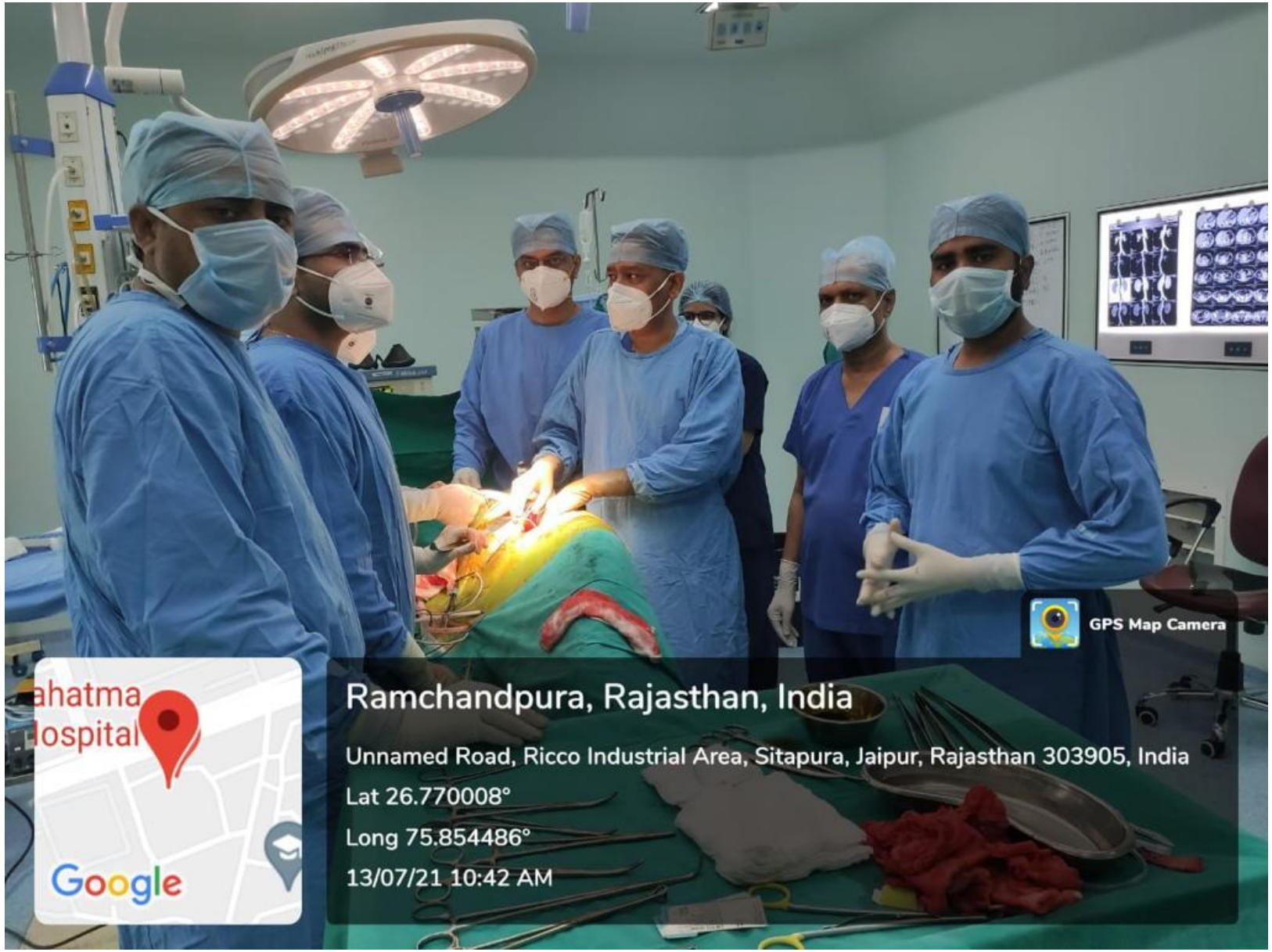
ahatma
Hospital
Google
GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan 303905, India
Lat 26.770008°
Long 75.854486°
13/07/21 10:42 AM

GPS Map Camera
Ramchandpura, Rajasthan, India
Unnamed Road, Ricco Industrial Area, Sitapura, Jaipur, Rajasthan
303905, India
Lat 26.770004°
Long 75.854488°
13/07/21 10:43 AM
Google

ब्रेन डेड युवक के अंग दान | किडनियां प्रत्यारोपित, दिल के दो वाल्व सुरक्षित रखे

जयपुर में दो को मिली जिंदगी

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

अंगदान के प्रति बढ़ती जागरुकता नव जीवन का सबब बन रही है। गुरुवार को महात्मा गांधी अस्पताल में ब्रेन डेड मरीज के कैडेवर दान से दो मरीजों में किडनी ट्रांसप्लांट हुआ। दिल के दो वाल्व सुरक्षित रखे हैं जो जल्द किसी मरीज में प्रत्यारोपित किए जाएंगे। सीतापुरा के महात्मा गांधी अस्पताल में श्रीगंगानगर के चक 3 एसटीबी विजयनगर के किशनसिंह (33) के ब्रेन डेड होने पर परिजनों ने कैडेवर दान की। ब्रेन हेमरेज मरीज को मंगलवार को अस्पताल में भर्ती कराया था। खास बात यह रही कि एक किडनी महात्मा गांधी में व दूसरी एसएमएस अस्पताल में मरीज को प्रत्यारोपित की। पढ़ें जयपुर @ पेज 9

किशनसिंह

इन्होंने किया प्रत्यारोपण

डॉ. टीसी सदासुखी, महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर

डॉ. विनय तोमर, सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर

इन अंगों का किया गया प्रत्यारोपण

एक किडनी महात्मा गांधी व दूसरी एसएमएस अस्पताल में मरीज को प्रत्यारोपित की गई।

हार्ट वाल्व

दूसरे मरीज को प्रत्यारोपित करने के लिए दिल के दो वाल्व सुरक्षित रखे गए हैं

किडनी

दो मरीजों में किडनी प्रत्यारोपित की गई।

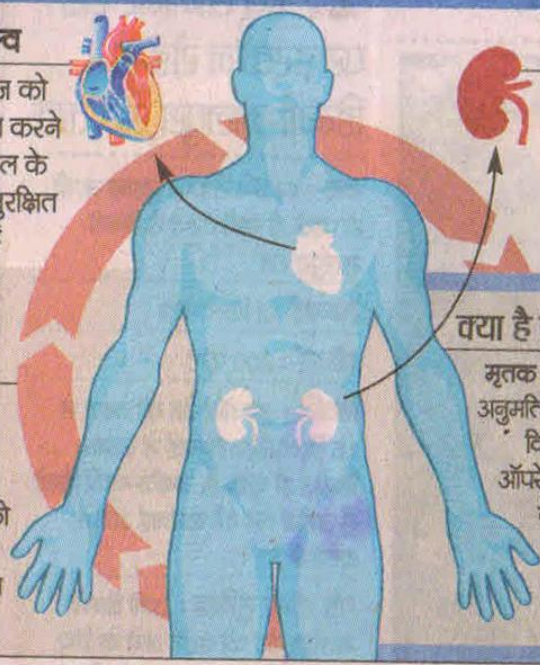

अब तक 6 का अंग प्रत्यारोपण...

- राज्य में फरवरी में पहला कैडेवरिक अंगदान महात्मा गांधी अस्पताल में हुआ। इसके बाद दो कैडेवर अंगदान एसएमएस अस्पताल में हुए। बुधवार को चौथा कैडवेरिक अंगदान था। इन चार अंगदान से छह मरीजों के किडनी तथा लीवर ट्रांसप्लांट किए गए हैं।

क्या है कैडेवर दान

मृतक के परिजनों की अनुमति मिलने के बाद विशेषज्ञों की टीम ऑपरेशन कर मरीज के अंग निकाल दूसरे मरीज में प्रत्यारोपित करती है

मृतक के परिजनों की काउंसलिंग में लगे 10 घंटे

डॉ. सदासुखी ने बताया, अस्पताल की ब्रेन डेड डिक्लियरेशन कमेटी ने मरीज को बुधवार दोपहर 3 बजे ब्रेन डेड घोषित किया था। तब से टीम ने अनौपारिक काउंसलिंग शुरू कर परिजनों को अंगदान का महत्व बताया। नियमानुसार फिर से जांच की गई। दूसरी बार रात 10 बजे ब्रेन डेड घोषित किया गया। इस दौरान परिजनो की काउंसलिंग जारी रही। देर रात उन्होंने कैडेवर दान की अनुमति दे दी। सुबह 4 बजे वे खुद अस्पताल पहुंचे और तुरंत ऑपरेशन की तैयारी शुरू कर दी।

MGH NEWS Publication : Dainik Navjyoti Pg.-Front Dt. 24.07.2015

एक दिन में हुए दो सफल कैडेबर किडनी ट्रांसप्लांट

महात्मा गांधी अस्पताल में ब्रेन डेड मरीज के परिजनों ने दान की दोनों किडनी

एक किडनी महात्मा गांधी में तो दूसरी एसएमएस में की गई प्रत्यारोपित

प्रदेश में पहली बार दान किए हार्ट को रखा जाएगा संरक्षित

किडनी ट्रांसप्लांट की जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल के डॉक्टर्स।

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

महात्मा गांधी अस्पताल में एक ब्रेन डेड रोगी के परिजनों द्वारा उसकी दोनों किडनी दान कर दी गई। इन किडनियों से दो गंभीर महिला रोगियों की जान बचाई जा सकी है। इनमें एक मरीज को महात्मा गांधी अस्पताल में तो दूसरे को एसएमएस अस्पताल में किडनी प्रत्यारोपित ■ शेष पेज-7

यूं हुआ ट्रांसप्लांट

महात्मा गांधी अस्पताल के किडनी ट्रांसप्लांट विभागाध्यक्ष डॉ. टी.सी. सदासुखी ने बताया कि गंगानगर निवासी किडनी डोनर 33 वर्षीय किशन सिंह ब्रेन हेमरेज के चलते 21 जुलाई को यहां भर्ती हुए थे। जांचों में पाया गया कि ■ शेष पेज-7

बिना ग्रीन कोरिडोर भेजी किडनी

महात्मा गांधी अस्पताल में ब्रेन डेड मरीज के परिजनों द्वार दान की गई दोनों किडनियों में से एक तो यहां लगा दी गई वहीं दूसरी किडनी को सवाईमानसिंह अस्पताल भेजा गया। सवाईमानसिंह ■ शेष पेज-7

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : HINDUSTAN TIMES , PAGE NO: 2 DATE 13.08.2015

WORLD ORGAN DONATION DAY

Happy that my son gave life to four persons: Donor's mom

Laxman Singh along with Kalyan Sahai Sharma (right) with the photo of the donor, Mohit, in Jaipur on Wednesday. HT PHOTO

HT Correspondent
htraj@hindustantimes.com

JAIPUR: "I am happy that my son gave life to four persons by donating his heart, liver and two kidneys. For me Raju is alive as his heart is beating in Suraj Bhan's body now," said Meera Devi, Raju's mother.

Raju, 18, had met with an accident on August 1 and was declared brain dead by doctors of Mahatma Gandhi hospital in Jaipur.

On August 2, Raju's heart was transplanted to Suraj Bhan, 32, a resident of Hanumangarh, in the hospital and he is doing fine now. This was the state's first cadaver heart transplant done by Dr Murtaza Ahmad Chisti, the chief consultant cardiac surgery.

On the eve of the World Organ Donation Day, the Mahatma Gandhi University of Medical Sciences and Technology organised a function on the WHO theme 'Give Thanks, Give Life' on Wednesday at a city hotel, where organ donors, recipients and their families appealed people to come forward to donate organs. Mukh Ram, brother of Suraj Bhan, said, "After the heart transplant my brother is healthy and we are grateful to the parents of Raju who agreed for organ donation and my brother got a new lease of life."

Similarly, Kalyan Sahai Sharma's 7-year-old son Mohit of Alwar district was declared brain dead after an accident. "Doctors told to donate the organs, and after discussing with my brother, I agreed. Mohit's two kidneys were transplanted to Laxman Singh (51), a driver, in January this year," Kalyan said. Singh thanked Kalyan on the occasion.

Dr ML Swarankar, chairman of Mahatma Gandhi hospital, said, "Rajasthan is the state of philanthropists and maximum soldiers guarding India are from this state. Only awareness has to be created towards organ donation and soon there would be a large number of people donating their organs, which will give life to many others."

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : RAJASTHAN PATRIKA, PAGE NO: 4 DATE 13.08.2015

अंगदान दिवस पर विशेष › राज्य में किडनी दान करने वालों में 75 फीसदी महिलाएं

सांसें सहेजने वाली 'मां' ही हैं...

जयपुर @ पत्रिका
patrika.com/city

जीवन देने वाली 'मां' ही सांसें सहेज रही है। राज्य में किडनी दान करने वालों में 75 फीसदी महिलाएं हैं। महात्मा गांधी अस्पताल के डॉ. टी. सी. सदासुखा ने बताया कि अब तक 98 महिलाएं अपने परिजनों के लिए किडनी दान कर चुकी है। इसके मुकाबले पुरुषों की संख्या केवल 32 है। करीब 40 मरीजों को उनकी माताओं ने किडनी दान कर जीवनदान दिया है। 31 में पत्नियों ने, 18 मामलों में पिता ने, 9 मामलों में बहनें, छह में भाई व 5 पतियों ने पत्नियों के लिए किडनी दान की है।

8 स्वैप प्रत्यारोपण भी किए

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमेन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि दो साल में 130 किडनी प्रत्यारोपण कर मरीजों को जीवनदान दिया है। इनमें से आठ मामले स्वैप प्रत्यारोपण के है। स्वैप प्रत्यारोपण उसे कहा जाता है, जिसमें परिवार के सदस्य अंगदान करने को तैयार हो, लेकिन उनका समूह (ग्रुप) मैच नहीं कर रहा हो। ऐसे में दूसरे मरीज के परिजनों का समूह एक दूसरे के मरीज को क्रॉस मैच करता हो तो परिजनों की आपस में काउंसलिंग कर स्वैप प्रत्यारोपण किया जाता है।

जनचेतना जरूरी

अंगदान करने वालों की संख्या कम और मरीजों की संख्या अधिक होने के कारण प्रतीक्षा सूची काफी लंबी है। अंगदान के प्रति जनचेतना जरूरी है, ताकि जिंदगी की आस छोड़ चुके लोगों को नया जीवन मिल सके।

राजेंद्र राठौड़, चिकित्सा मंत्री

महात्मा गांधी अस्पताल में अंगदान करने वाले मरीजों के परिजनों का सम्मान।

यही चाह, खुशियां बांटने वालों की तादाद बढ़े

अपनों के ही ब्रेन डेथ के बाद अंगदान कर दूसरों की जिंदगी बचाने का जुनून बहुत कम लोगों में होता है। उन्हें मिल जाता है हौसला इसके लिए, दूसरों के जीवन में खुशियां बिखेरने वालों की तादाद बढ़े, वे यह भी चाहते हैं। महात्मा गांधी अस्पताल की ओर से विश्व अंगदान दिवस की पूर्व संध्या पर बुधवार को एक होटल में अंगदान करने वालों के परिजनों के सम्मान पर यह सब दिखाई दिया। समारोह में राज्य के पहले कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण वाले मरीज राजगढ़ (अलवर) के लक्ष्मण सिंह और जयपुर निवासी मोहित के परिजनों की मुलाकात हुई। इस मामले में मोहित के ब्रेन डेड होने पर उनके पिता कल्याण सहाय ने कैडवर अंगदान की सहमति दी थी। इस अवसर पर लक्ष्मण सिंह ने कल्याण सिंह से कहा कि उम्र में वे भले ही उनसे बड़े हैं, लेकिन वास्तव में आप मेरे पिता के समान हो। इस अवसर पर प्रदेश के पहले हॉर्ट ट्रांसप्लांट के लिए अंगदान करने वाले राजू के परिजन भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि राजू के इस बड़े काम ने परिवार का बड़ा नाम कर दिया। राजू के परिवार को मुख्यमंत्री सहायता कोष से 50 हजार व 11 हजार रुपए की राशि ग्राम पंचायत की ओर से देने की घोषणा पहले ही की जा चुकी है। अस्पताल के चेयरमेन डॉ.स्वर्णकार ने राजू के परिवार को उम्र भर अस्पताल में उपलब्ध उपचार सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराने की घोषणा की।

लक्ष्मण सिंह में जिंदा है मोहित

प्रदेश के प्रथम कैडेवर अंगदानी मोहित की किडनी प्रत्यारोपित करवा चुके लक्ष्मण सिंह ने कहा कि मोहित आज लक्ष्मण सिंह में जिंदा है। अतिरिक्त मिशन निदेशक एनएचएम नीरज के पवन के कार्यालय में अलवर निवासी कल्याण सहाय अपने परिजन के साथ पहुंचे और जनचेतना जाग्रत करने में सहयोग का आश्वासन दिया। कल्याण सिंह के साथ आए मोहनलाल प्रजापत ने कहा कि मोहित के अंगदान से गांव का नाम भी रोशन हुआ है। उन्होंने बताया कि गांव वासी भविष्य में अंगदान के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

अंगदान बढ़े तो चले 'सफर'

हैलेन्द्र शर्मा .
जयपुर @ पत्रिका
patrika.com/city

अंगदान और प्रत्यारोपण के लिहाज से अपना देश काफी पीछे है। जागरूकता की कमी और सरकार के सक्रिय न होने से बहुत सी 'जिंदगी' का सफर थम रहा है। ब्रेन डेथ के बाद भी अंगदान को 'मुश्किलें' घेरे हुए है। आंकड़ों के अनुसार हर साल भारत के 21 लाख लोगों को गुर्दा प्रत्यारोपण की जरूरत होती है, लेकिन हो पाते हैं सिर्फ 3 से 4 हजार गुर्दा प्रत्यारोपण। हर साल 4 से 5 हजार मरीजों को हृदय प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ती है। इसके बावजूद अब तक 100 लोगों का ही हृदय प्रत्यारोपण हो सका है।

फैक्ट फाइल

वर्ष 1970 में भारत में गुर्दा प्रत्यारोपण शुरू हो गया था। **वर्ष 1994 में** सरकार ने मानव अंग प्रत्यारोपण (टीएचओ) अध्यादेश पारित किया।

वर्ष 2011 में सरकार ने मानव अंग प्रत्यारोपण से संबंधित संशोधन कानून लागू किया, जिसमें अंगदान की प्रक्रियाओं को सरल बनाने के प्रावधान मौजूद थे।

इसके तहत असंबद्ध प्रत्यारोपण को गैरकानूनी बना दिया और मस्तिष्क की मृत्यु (ब्रेन डेथ) की स्वीकृति के बाद मृतक के अंग दान को कानूनी करार दिया।

देश में हर साल 90 हजार लोगों को मिल सकता है नया जीवन, हादसों में हर साल डेढ़ लाख मौत, 65 फीसदी ब्रेन डेथ के मामले

यह कहती है रिपोर्ट

नेशनल प्रोग्राम ऑफ कंट्रोल ऑफ ब्लाइंडनेस (एनपीसीबी) की वर्ष 2012-13 की रिपोर्ट के मुताबिक

देश में 4,417 कॉर्निया उपलब्ध थे। जबकि हर साल 80,000 से एक लाख कॉर्निया की जरूरत होती है।

देश में इस समय 120 प्रत्यारोपण केंद्र हैं, जहां हर साल 3500 से 4000 गुर्दा प्रत्यारोपण होते हैं।

चार केंद्रों पर 150 से 200 यकृत (लिवर) प्रत्यारोपित होते हैं।

देश में इस समय 120 प्रत्यारोपण केंद्र हैं, जहां हर साल 3500 से 4000 गुर्दा प्रत्यारोपण होते हैं।

पेनक्रियाज भी होती है दान

कुछ केंद्रों पर कभी-कभी इक्का-दुक्का हृदय प्रत्यारोपण होते हैं। स्पेन में प्रति दस लाख लोगों पर अंगदान करने वाले 35, ब्रिटेन में 27, अमरीका में 11 और भारत में सिर्फ 0.16 हैं।

अड़चनें भी बहुत

ब्रेन डेड मरीजों और घायलों के परिजनों की उचित काउंसलिंग नहीं होने से हर साल सैकड़ों लोग अंग प्रत्यारोपण के इंतजार में ही मर जाते हैं। जागरूकता की कमी और अंगदान-प्रत्यारोपण के लिए पर्याप्त आधारभूत संरचना न होना भी इसकी वजह है। इसके साथ लोगों में कई तरह के मिथक भी हैं। काफी लोगों का मानना है कि अंगों को शरीर से अलग करना प्रकृति और धर्म के खिलाफ है।

हर साल 9 लाख मामले

भारत में अंगदान की भारी संभावना है। यहां हर साल सड़क हादसों में करीब डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के अध्ययन के मुताबिक करीब 65 फीसदी लोगों के मस्तिष्क में चोट लगी होती है। इसका मतलब लगभग 90 हजार मामले ब्रेन डेथ के हो सकते है। इनके अंगदान से हजारों का जीवन बचाया जा सकता है।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :NATIONAL \ PAGE NO: 02 DATE 01-.02.2015

किडनी के साथ अब हो सकेंगे लीवर और हार्ट ट्रांसप्लांट

सीएम ने महात्मा गांधी अस्पताल में किया मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर का उद्घाटन

नेशनल दुनिया

जयपुर। जयपुर के मरीजों को अब किडनी, लीवर, हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए अब अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल व मेडिकल यूनिवर्सिटी में ही यह सुविधा मिल सकेगी। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने शनिवार को अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर सहित अन्य अपग्रेडेड सेवाओं का उद्घाटन किया।

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री राजे ने कहा कि राज्य के लोगों के स्वास्थ्य के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाना चाहिए। टेलीमेडिसिन सेवा पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि केवल तीन जिलों में कोई अस्पताल लोगों के स्वास्थ्य पर ध्यान दे, तो यह नाकाफी होगा। सभी 33 जिलों में यह व्यवस्था होनी चाहिए। गौरतलब है कि महात्मा गांधी अस्पताल ने कनेक्टी, सीकर और अलवर में टेलीमेडिसिन सेवा शुरू की है। मुख्यमंत्री राजे ने अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लाण्ट सेंटर सहित अस्पताल के 60 बैड के गहन चिकित्सा ब्लॉक, नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों, टेलीमेडिसिन सेंटर, 21 शैय्याओं की डायलिसिस इकाई तथा 33 किलोवाट सबस्टेशन का भी उद्घाटन किया। राजे ने अस्पताल की सामुदायिक सेवाओं तथा राज्य में नई तकनीकी युक्त सेंटर्स स्थापित किए जाने के प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा कि पैसा नहीं, सेवा धर्म से एक चिकित्सक की पहचान होती है। उन्होंने महात्मा गांधी अस्पताल में जल्दी ही कैंसर सेवाएं शुरू किये जाने की भी मरीजों के लिए अच्छी संकेत बताया।

मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर का उद्घाटन करतीं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे।

समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ ने चिकित्सा सेवा को सबसे बड़ी सेवा बताया। इस अवसर पर महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टैक्नोलोजी के चेयरपर्सन डॉ. एम. एल. स्वर्णकार ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल राज्य का सबसे बड़ा तथा सफल किडनी प्रत्यारोपण केन्द्र है। रोगियों की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लाण्ट सेंटर की शुरूआत की गई है, जिसमें किडनी के अलावा शीघ्र ही हार्ट व लिवर ट्रांसप्लाण्ट किये जायेंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जानेमाने हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. केएम चेरियन, विख्यात लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डा. बलवीर सिंह थे। समारोह में सांसद रामचरण बोहरा, विधायक लक्ष्मीनारायण बैरवा, मोहनलाल गुप्ता, शिक्षाविद् डॉ. हरि गौतम, प्रेसीडेंट डॉ. जी. एन. सक्सेना, प्रो-प्रेसीडेंट डा. सुधीर सचदेव, मैनेजिंग ट्रस्टी आर.आर. सोनी, मैनेजमेंट बोर्ड मेम्बर डॉ. विकास स्वर्णकार, निदेशक योगेन्द्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में डॉक्टर्स उपस्थित थे।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :RASTRADOOT PAGE NO: 2 DATE 01-.02.2015

सरकार आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध : राजे

जयपुर, (कासं)। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा है कि सरकार प्रदेशवासियों को बेहतर एवं अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। यह खुशी की बात है कि इस दिशा में निजी क्षेत्र भी आगे आ रहा है। सरकार के साथ ही निजी क्षेत्र में कार्य कर रही नामी संस्थाओं द्वारा भी लोगों को सस्ता ईलाज सुलभ कराने की पहल सुखद संकेत है। राजे ने शनिवार को यहां सीतापुरा में जगतपुरा में उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं के शुभारम्भ समारोह को सम्बोधित कर रही थीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के राजकीय चिकित्सालयों में कार्यरत चिकित्सक और रेजीडेन्ट्स कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ चुनौतीपूर्ण स्थितियों में लोगों की सेवा करते हैं। हम सरकारी चिकित्सालयों को भी अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करेंगे। उन्होंने कहा कि बड़े लोगों की यह निशानी होती है कि उनके पास सदैव सभी लोगों के लिए समय होता है। चिकित्सकों को भी इसी भावना से मरीजों की सेवा करें, क्योंकि भगवान उन्हीं लोगों की मदद करता है जो दूसरों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। राजे ने कहा कि चिकित्सालयों में स्वच्छता सबसे जरूरी बात है, लेकिन स्वच्छता केवल एक व्यक्ति का काम नहीं है, इसमें सभी लोगों की भागीदारी जरूरी है। हमें यह संकल्प लेना है कि स्वयं स्वच्छता की अपनायेंगे।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :PUNJAB KESERI PAGE NO: 02 DATE 01-.02.2015

मुख्यमंत्री ने थपथपाई डॉक्टरों की पीठ

कहा-विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कर रहे हैं बेहतरीन कार्य

महात्मा गांधी अस्पताल में मास्क पहनकर निरीक्षण करतीं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे। (छाया: पंजाब केसरी)

महात्मा गांधी अस्पताल में नवीन सेवाओं का उद्घाटन

जयपुर, (कासं): मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने सरकारी अस्पतालों में कार्यरत डॉक्टरों, खासतौर पर एसएमएस अस्पताल के डॉक्टरों के कार्यों की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि विपरीत परिस्थितियों और कई तरह के चैलेंजेज के बावजूद यहां के सीनियर और रेजीडेंट डॉक्टर अपना कर्तव्य बखूबी के साथ निभा रहे हैं। मुख्यमंत्री शनिवार को महात्मा गांधी अस्पताल में नई तथा अपग्रेडेड सेवाओं के उद्घाटन कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने यहां नई शुरू हुई टेलीमेडिसिन सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि इससे आमजन को फायदा मिलेगा।

परिसर का दौरा करने के बाद राजे ने महात्मा गांधी अस्पताल में सफाई व्यवस्था की जमकर सराहना की और आवश्यकता जताई कि सरकारी अस्पतालों में भी सफाई इसी तरह की होनी चाहिए। हालांकि उन्होंने चुटकी लेते हुए यह भी कहा कि कहीं कार्यक्रम की वजह से तो यहां सफाई नहीं कराई गई है। उन्होंने कहा कि यह काम कोई एक

▶ शेष पृष्ठ 4 पर II

कठिन परिस्थितियों में डॉक्टरों का बेहतरीन काम : मुख्यमंत्री

महात्मा गांधी अस्पताल में कई सुविधाओं का लोकार्पण

महात्मा गांधी अस्पताल में नई सुविधाओं का लोकार्पण करतीं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे।

जयपुर . मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने चिकित्सा सेवा से जुड़े लोगों को टीम भावना से काम करने की सलाह देते हुए कहा कि इससे बेहतर परिणाम मिलते हैं। एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। वे शनिवार को महात्मा गांधी अस्पताल में नई सुविधाओं के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि एसएमएस अस्पताल में कठिन परिस्थितियों के बावजूद डॉक्टर, रेजीडेंट व अन्य स्टाफ बेहतरीन काम कर रहे हैं। राजे ने कहा कि जहां सफाई है, वहां देवी का निवास होता है।

इससे पहले राजे ने महात्मा गांधी अस्पताल में मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर, 60 बैडेड आईसीयू, नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों, टेलीमेडिसिन सेंटर, 21 बैडेड डायलिसिस इकाई और 33 किलोवाट सब स्टेशन का लोकार्पण किया। समारोह को उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ, डॉ.आर.पी. सोनावाला, डॉ.आर.पी. चैरियन और हैदराबाद से आए लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. बलबीर सिंह ने भी संबोधित किया। अंत में महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने मुख्यमंत्री राजे को उनकी मां विजयराजे सिंधिया की मूर्ति भेंट की। इस मूर्ति का निर्माण अर्जुन प्रजापति ने किया।

NEWS:MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :TOI PAGE NO: 03 DATE 01-.02.2015

Private hosps should also treat underprivileged: Raje

TIMES NEWS NETWORK

Pics: Arvind Sharma

Jaipur: Chief minister Vasundhara Raje on Saturday said that private hospitals should provide treatment to underprivileged people at concessional rates. Raje was speaking at two different functions where she inaugurated the facilities of private hospitals—Mahatma Gandhi Medical College and Hospital (MGMCH) and Eternal Hospital. Raje pointed out that keeping cleanliness in hospitals is necessary as it is directly related to the patients coming to the hospital for treatment. People clean their houses, but it is also necessary to keep the surroundings clean.

The newly inaugurated multi-organ transplant centre at MGMCH will be beneficial for patients who need organ transplant. The hospital administration claimed that kidney, heart and liver transplants will be started soon. Raje also inaugurated 60-bedded ICU, telemedicine centre and 21-bedded dialysis unit.

The Eternal Hospital which has modern and latest equipment was formally inaugurated by Raje. The equipment will help in proper diagnoses of patients. The hospital administration claimed that people belonging to below poverty line (BPL) will also benefit as 10% of the beds will be reserved for them in the hospital.

(Top) Chief minister Vasundhara Raje at the inauguration of MGMCH and Eternal Hospital (above) in the city on Saturday

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : KHABAR MUDDE KI PATE- 4, DATE 2-02-2015

चिकित्सा सेवाओ में हुआ विस्तार

बारहमील। मरीजो को बेहतर चिकित्सा सुविधा मिल सके इसके लिए सुविधाओं में बढ़ोतरी करते हुए सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टैक्नोलोजी में मल्टी आर्गन ट्रांसप्लान्ट सेन्टर, टेलीमेडिसिन सेन्टर, 60 बैड के गहन चिकित्सा इकाई ब्लॉक, नवजात व बाल गहन चिकित्सा इकाई व डायलिसिस ईकाई का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन में मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र राठौड़ व कालीचरण सराफ मौजूद रहे। जनसम्पर्क निदेशक वीरेन्द्र पारीक ने बताया कि महंगाई के इस समय में गरीब लोगो को भी बेहतर स्वास्थ्य सेवाए मिल सके यही हमारी कोशिश है, इसी को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर हॉस्पिटल प्रबंधन द्वारा सुविधाओ में इजाफा किया जाता रहा है।

शनिवार को इटरनल हार्टकेयर अस्पताल में मरीजो का हाल पूछतीं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे।

जेनेटिक डिजीज पर हो काम : सीएम

महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में मल्टी आर्गन ट्रांसप्लांट का उदघाटन

जयपुर। पैसा नहीं सेवा धर्म ही डॉक्टर की पहचान होनी चाहिए। चिकित्सा एक धर्म है और विषम परिस्थितियों में रोगी को स्वस्थ करने का सामर्थ्य भी सेवा भावना से ही आता है। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने शनिवार को महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में मल्टी आर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा एसएमएस में भी शीघ्र लीवर ट्रांसप्लांट शुरू होगा। पद्मश्री डॉ. केएम चेरियन ने कहा कि सैंकड़ों लोगों को चिकित्सा सुविधा नही मिलने से मौते हो जाती है। सांसद रामचरण बोहरा, अस्पताल के निदेशक डॉ. एमएल स्वर्णकार, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. जीएन सक्सेना, डॉ. आरपी सोनावाला, डॉ. पंकज गुप्ता, डॉ. डीपी पूनिया मौजूद थे।

Lung Transplant

State First Heart and Lungs Transplant

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION: SAMACHAR JAGAT
PAGE: 3, DATE- 25.2.2017

एक और कैडेवर दानदाता ने बख्शी चार लोगों को जिंदगी

महात्मा गांधी अस्पताल में पहला पैंक्रियाज ट्रांसप्लांट, किडनी लीवर भी किए प्रत्यारोपित

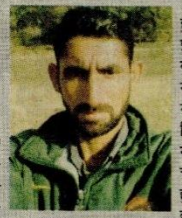

जयपुर,(कासं)। प्रदेश में लोगों में आई जागरुकता के कारण आजीवन लम्बी बीमारी से जूझ रहे लोगों के जीवन की राह आसान होने लगी है। ब्रेन डेड युवक के परिजनों की ओर से कैडेवर दान से आज फिर चार लोगों को जिंदगी मिल गई है। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने एक बार फिर पहल करते हुए राज्य में पहला पेन्क्रियास प्रत्यारोपण करने में सफलता अर्जित की है। डॉ. राज शेखर पी, डॉ. टी सी सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. राजीव कासलीवाल ने यह ऑपरेशन किया। चेयरमैन डॉ. एम एल स्वर्णकार ने बताया कि देश में मात्र चार स्थानों पर पेन्क्रियाज प्रत्यारोपण हुआ है। डॉक्टरों ने बताया कि मरीज का पैंक्रियाज डायबिटीज की वजह से खराब हो गया था।

हनुमानगढ़ निवासी 30 वर्षीय राजेंद्र कुमार खीचड़ के परिजनों ने दी अंगदान की सहमति से उसके लीवर, दो किडनी व हार्ट का अंगदान हुआ। इस कारण चार लोगों को जीवन दान मिला। सुरेश बीएसएनएल में ठेका मजदूर का काम करता था। गड्ढा खोदते हुए मिटटी में दब गया था। आधा घण्टे बाद निकाला जा सका था। 21 फरवरी को महात्मा गांधी अस्ताल में भर्ती हुआ था। 22 फरवरी को शाम 4 बजे चिकित्सकों ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। समझाइश के बाद परिजनों ने अंगदान किया। पेन्क्रियाज, लिवर व किडनी महात्मा गांधी अस्पताल में प्रत्यारोपित किए गए जबकि हार्ट ट्रान्सप्लांट इंटरनल हॉस्पिटल में हुआ। बीकानेर निवासी यतीन्द्र यादव को लिवर लगाया गया। डॉ. एम एल स्वर्णकार ने कहा कि ये अस्ताल में बारहवां लिवर प्रत्यारोपण है।

इटर्नल हॉस्पिटल में हुआ हृदय प्रत्यारोपण

इटर्नल हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने57 वर्षीय मुकेश वर्मा में सफलता पूर्वक हृदय प्रत्यारोपण कर उसे नयी जिंदगी प्रदान की। इस सर्जरी के बारे में हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. अजीत बाना ने बताया कि मरीज मुकेश को 3 साल पहले हार्ट अटैक आया था और एंजियोप्लास्टी की गई थी इसके बाद वह इस्केमिक कार्डियोमायोपैथी से पीड़ित था। इस स्थिति में हृदय की मांसपेशी को रक्त आपूर्ति करने वाली धमनियां संकीर्ण हो गई थी। इसका एकमात्र उपाय हृदय प्रत्यारोपण था। अंगदान करने वाला 35 वर्षीय राजेंद्र कुमार को सिर में चोट की वजह से ब्रेन डेड घोषित किया गया। डॉ. नवनीत मेहता हेड कार्डियक अनेस्थेसिया ने बताया ऑपरेशन की प्रक्रिया गुरुवार रात10 बजे से शुक्रवार सुबह 6 बजे तक चली। सर्जरी के बाद मरीज स्वस्थ्य बताया जा रहा है।

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION: Daily News
Page: 02, DATE- 07.12.2016

चिकित्सा क्षेत्र में राज्य की बढ़ती चमक, पहला मामला

एक ही व्यक्ति के लगाया हार्ट-फेफड़ा

निजी अस्पताल में हुआ ट्रांसप्लांट, मरीज का हृदय बाएं स्थान की बजाय दाईं ओर था

डेली न्यूज, जयपुर। राज्य का नाम देश के चिकित्सा क्षेत्र में एक बार फिर रोशन हुआ है। डॉक्टरों ने एक ही मरीज के हार्ट व लंग ट्रांसप्लांट करने में सफलता हासिल की। संभवतः उत्तर भारत में ऐसी सर्जरी नहीं हुई। 22 वर्षीय अभिषेक विजयवर्गीय हृदय की जन्मजात विकृति से प्रभावित था। उसका हृदय बाएं स्थान की बजाय दाईं ओर था। उसे सांस लेने में परेशानी होती थी। रंग हमेशा नीलापन रहता था। महात्मा गांधी अस्पताल में चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एमए चिश्ती ने 5 दिसंबर को कैडेवर डोनेशन मिलने पर हार्ट व लंग्स अभिषेक को प्रत्यारोपित किए।

डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि दुर्घटना में घायल अंगदाता गिरधारी पांचाल (27) 3 दिसंबर को अस्पताल में भर्ती हुआ। गहरी चोट से उसके बचने की संभावना नहीं थी। उसे ब्रेनडैड घोषित किया गया। गिरधारी के परिजनों ने काउंसलिंग के बाद गिरधारी के अंगदान की स्वीकृति दे दी। लीवर को गुरुग्राम भेजा गया।

नौ घंटे लगे प्रत्यारोपण में

हार्ट व फेफड़े निकालने में जहां एक घंटे का समय लगा, वहीं इनके प्रत्यारोपण में ९ घंटे का समय लगा। अस्पताल में डॉ. विजय आनंद, डॉ. टी.सी. सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. एचएल गुप्ता, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. गोविन्द शर्मा तथा डॉ. आशीष जैन ने एक किडनी चूरू निवासी प्रेमाराम को लगाई तथा एक किडनी एसएमएस अस्पताल में एक मरीज को लगाई गई।

जयपुर में हार्ट और फेफडे का प्रत्यारोपण किया

डोनर गिरधारी

- मरीज के शरीर में प्रत्यारोपित अंगों ने काम करना शुरू किया
- संक्रमण और शरीर द्वारा रिजेक्शन की संभावना अभी भी एक बड़ी चुनौती

जयपुर, (कासं)। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने एक साथ हार्ट व लंग्स ट्रांसप्लांट कर एक बार फिर चिकित्सा क्षेत्र में सफलता हासिल की है। 27 वर्षीय गिरधारी से मिले अंगदान से सोमवार देर रात हार्ट सर्जरी टीम ने मरीज 22 वर्षीय अभिषेक को ट्रांसप्लांट से नया जीवन दिया है।

चिकित्सकों ने बताया कि ऑपरेशन के बाद अभिषेक के शरीर में दिल तथा फेफड़े पूरी तरह काम करने लगे हैं। उसे एक सप्ताह तक गहन चिकित्सा में रखा जायेगा तथा एंटी रिजेक्शन दवाएं दी जाएंगी। अस्पताल प्रशासन का कहना है संभवतः यह उत्तर भारत का इस तरह पहला सफल ऑपरेशन है। गौरतलब है अस्पताल की पहल पर ही प्रदेश का पहला कैडेवर प्रत्यारोपण तथा पहला हार्ट ट्रांसप्लांट भी हो चुका है।

चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एमए चिश्ती ने बताया कि हार्ट व फेफड़े की गंभीर बीमारी से प्रभावित बाइस वर्षीय अभिषेक विजयवर्गीय हृदय की जन्मजात विकृति से प्रभावित था। उसका हृदय बांये के स्थान पर दांयी ओर था। उसे सांस लेने में बहुत परेशानी होती थी। उसके रंग में हमेशा नीलापन रहता था। 5 दिसंबर का सूरज उसके लिए जीवन की रोशनी लेकर आया। उसे एबी पॉजीटिव कैडेवर डोनेशन के जरिये हार्ट व लंग्स मिले, जिसे अभिषेक को प्रत्यारोपण कर दिया गया। दुर्घटना में घायल अंगदाता सत्ताइस वर्षीय गिरधारी पांचाल तीन दिसम्बर को अस्पताल में भर्ती हुआ। गहरी चोट की वजह से उसके बच पाने की संभावना नहीं के बराबर थी। चार दिसम्बर की रात उसे ब्रेनडैड घोषित किया गया। गिरधारी के परिजनों ने काउंसिलिंग में स्वेच्छा से अंगदान की स्वीकृति दे दी।

डॉ. चिश्ती ने बताया कि हृदय की अपेक्षा फेफड़े बहुत नाजुक होते है। दिल तथा फेफड़ों को निकालना बहुत मुश्किल काम होता है। अभिषेक का हृदय विपरीत दिशा में था। ऐसे में प्रत्यारोपण जटिल था। ऐसे ऑपरेशन में यह जरूरी है कि अंगदाता तथा प्राप्तकर्ता के शरीर का वजन व कद का समान हो। उन्होंने कहा कि संक्रमण तथा शरीर द्वारा रिजेक्शन की संभावना अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

डॉ. चिश्ती ने बताया कि दो ऑपरेशन थियेटर्स में दो दर्जन से अधिक डॉक्टर्स तथा तकनीशियन डोनर के तथा प्राप्तकर्ता के शरीर से अंग निकालने तथा प्रत्यारोपण में जुटे रहे। ऑपरेशन सुबह दस बजे शुरू होकर शाम सात बजे तक चला। क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ.विजय आनन्द तथा पूरी गहन चिकित्सा टीम रोगी की जान बचाने में जुटी हुई है।

हार्ट व फेफडे निकालने में जहां एक घण्टे का समय लगा वहीं इनके प्रत्यारोपण में नौ घण्टे का समय लगा। पहले अंगदाता की किडनी तथा लिवर निकाला गया तथा हृदय व फेफडों को एकसाथ ही निकाला गया। इसके बाद ऑपरेशन कर उसके लीवर को गुडगांव भेजा गया। इसी समय तीसरे ऑपरेशन थियेटर में किडनी प्रत्यारोपण शुरू किया गया। डॉ. टी सी सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. एच एल गुप्ता, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. गोविन्द शर्मा तथा डॉ. आशीश जैन की टीम ने किडनी चूरू के तारानगर निवासी प्रेमाराम को लगाई गई। एक किडनी सवाई मानसिंह अस्पताल भेजी गई।

उत्तर भारत का पहला हार्ट व लंग ट्रांसप्लांट

महात्मा गांधी अस्पताल में दिल और फेफड़े का एक साथ प्रत्यारोपण

27 वर्षीय गिरधारी के कैडेवर अंगदान से अभिषेक को मिला नया जीवन

खुशी/नवज्योति, जयपुर

जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने एक बार फिर राज्य का नाम देश के चिकित्सा क्षेत्र में रोशन करते हुए दिल एवं फेफड़े का एक साथ प्रत्यारोपण कर इतिहास रचा है। ऑपरेशन के बाद रोगी के शरीर में दिल और फेफड़े पूरी तरह काम करने लगे हैं। इस अस्पताल की पहल पर ही प्रदेश का पहला कैडेवर प्रत्यारोपण ■ शेष पेज-7

गिरधारी पांचाल

जटिल था ऑपरेशन

डॉ. चिश्ती ने बताया कि हृदय की अपेक्षा फेफड़े बहुत नाजुक होते है। दिल और फेफड़ों को निकालना बहुत मुश्किल काम होता है। अभिषेक का हृदय विपरीत दिशा में था। इस अवस्था में हार्ट व लंग प्रत्यारोपण को जटिल बना दिया था। इस प्रकार के ऑपरेशन में यह भी जरूरी होता ■ शेष पेज-7

अब तक अस्पताल के प्रयासों से राज्य में सर्वाधिक अंगदान और अंग प्रत्यारोपण किए जा चुके हैं। इनमें पहला कैडेवर किडनी प्रत्यारोपण, पहला हार्ट प्रत्यारोपण, पहला लिवर प्रत्यारोपण और अब यहां के चिकित्सकों को हार्ट और लंग्स एक साथ प्रत्यारोपण में सफलता मिली है।

-डॉ. एमएल स्वर्णकार, चेयरमैन, एमजीएम यूनिवर्सिटी।

मेरा बेटा ऑपरेशन की असफलता से भयभीत नहीं था। उसे ईश्वर पर पूरा विश्वास था। ऑपरेशन से अभिषेक ही नहीं हमें भी नया जीवन मिला है।

-सुनीता, अभिषेक की मातजी।

प्रथम पृष्ठ की खबरों का शेष

महात्मा गांधी अस्पताल...

और पहला हार्ट ट्रांसप्लांट भी हो चुका है। दानदाता से मिली एक किडनी को महात्मा गांधी अस्पताल में ही चूरू निवासी 63 वर्षीय मरीज प्रेमाराम को प्रत्योपित कर दिया गया, वहीं एक किडनी एसएमएस अस्पताल भेज दी गई और लिवर को ग्रीन कॉरिडोर के जरिए गुड़गांव भेजा गया है।

इनको मिला नया जीवन :

अस्पताल के चीफ कार्डियक सर्जन डॉ. एमए चिश्ती ने बताया कि हार्ट एवं फेफड़े की गंभीर बीमारी से प्रभावित 22 साल के अभिषेक विजयवर्गीय हृदय की जन्मजात विकृति से प्रभावित था। उसका हृदय बाएं के स्थान पर दांयी ओर था। उसे सांस लेने में बहुत परेशानी होती थी। उसका रंग कुछ नीला रहता था और शरीर बहुत कमजोर था। उसके परिजनों ने महात्मा गांधी अस्पताल में हृदय प्रत्यारोपण के बारे में जानकारी होने पर हमसे सम्पर्क किया और पांच दिसम्बर को उन्हें एबी पॉजीटिव कैडेवर डोनेशन के जरिए हार्ट एवं लंग्स मिले। इसे अभिषेक को प्रत्यारोपण कर दिया गया। ऑपरेशन के बाद उसके दिल और फेफड़े सक्रिय हो गए हैं। उसे एक सप्ताह तक गहन चिकित्सा में रखा जाएगा और एंटी रिजेक्शन दवा दी जाएगी।

गिरधारी हुआ मर कर भी अमर : दुर्घटना में घायल अंगदाता 27 वर्षीय गिरधारी पांचाल तीन दिसम्बर को अस्पताल में भर्ती हुआ। यहां न्यूरोसर्जन डॉ. पंकज गुप्ता उसका उपचार कर रहे थे। गहरी चोट की वजह से उसके बचने की संभावना नहीं के बराबर थी। उसे चार दिसम्बर की रात ब्रेनडैड घोषित किया गया। गिरधारी के परिजनों को कैडेवर अंगदान के बारे में पता था। काउंसिलिंग में उन्होंने स्वेच्छा से अंगदान की स्वीकृति दे दी।

जटिल था...

है कि अंगदाता और प्राप्तकर्ता के शरीर का वजन व कद का समान होना सफलता को सुनिश्चित कर देता है। ऑपरेशन सोमवार सुबह दस बजे शुरू होकर शाम सात बजे तक चला। हार्ट व फेफड़े निकालने में जहां एक घण्टे का समय लगा। पहले अंगदाता की किडनी और लिवर निकाले और हृदय व फेफड़ों को एक साथ ही निकाला गया। इसी समय तीसरे ऑपरेशन थियेटर में किडनी प्रत्यारोपण शुरू किया गया।

Pancreas Transplant

State First Pancreas Transplant

प्रदेश का पहला पैन्क्रियाज का ट्रांसप्लांट सफल

हैल्थ रिपोर्टर. जयपुर

लिवर, हार्ट और किडनी के बाद प्रदेश में पहला पैन्क्रियाज ट्रांसप्लांट (अगन्याशय प्रत्यारोपण) जयपुर में किया गया है। अभी देश के कोयम्बटूर, चेन्नई, चंडीगढ़, मुम्बई और दिल्ली सहित चुनिंदा शहरों में ही यह ट्रांसप्लांट किया गया है। ब्रेन डेड व्यक्ति का अगन्याशय मधुमेह के मरीज को लगाया गया। इसके साथ ही राजस्थान उन प्रदेशों में शुमार हो गया, जहां सभी प्रकार के ट्रांसप्लांट करना संभव हो गया है।

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन **डॉ. एमएल स्वर्णकार** ने बताया कि हनुमानगढ़ निवासी राजेन्द्र कुमार (35) बीएसएनएल में ठेका मजूदर था। लुधियाना में गड्ढा खोदते हुए मिट्टी में दब गया था। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे हनुमानगढ़

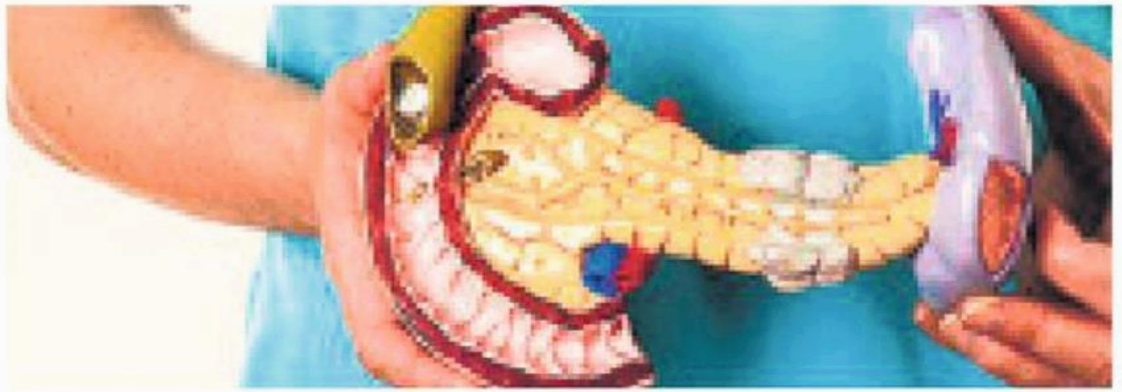

अस्पताल लाया गया, जहां से 21 फरवरी को **महात्मा गांधी अस्पताल** लाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे 22 फरवरी को ब्रेन डेड घोषित कर दिया। समझाइश के बाद राजेन्द्र के परिजन उसके अंग दान करने को तैयार हो गए। उसके बाद पैन्क्रियाज के जरूरतमंद बीकानेर निवासी यतीन्द्र यादव (36) से संपर्क किया गया। डायबिटीज के कारण उसका पैन्क्रियाज खराब होने से इंसुलिन नहीं बन पा रहा था और हालत बिगड़ती गई। डॉक्टर डॉ राजशेखर, डॉ संजय सिंघल, डॉ सुरेश भार्गव और डॉ विपिन गोयल ने 23 फरवरी को 11 घंटे बाद यतीन्द्र को नया पैन्क्रियाज लगा दिया। मरीज को अगले तीन दिन आईसीयू में रखा जाएगा। लिवर और किडनी भी ट्रांसप्लांट किए गए।

MGH NEWS_(HSD_719)/FEB./2017

11-hour operation

Now, pancreas transplant performed

DNA Correspondent @jaipurdna

After creating history by completing first liver transplant in the state, the Mahatma Gandhi Hospital has yet again attained the feat by becoming first in state to transplant pancreas of a brain dead person into the one who's pancreas had been affected due to diabetes.

This transplant could be made possible because of the generosity shown by family members of one Suresh Kumar, a 30-year-old labourer with BSNL, who fell in the same ditch that he was digging and could only be taken out after half an hour. He was rushed to MG Hospital on February 21, and was declared brain dead by doctors the next day after which counselling of family members was done for donation and they had agreed.

Not only pancreas, the donor also saved four other lives by donating kidneys, liver and heart. Of which only heart was flown to Delhi as there was no B+ blood group recipient of the same.

Speaking to **DNA**, Dr ML Swarnkar, Chairman, MG Hospital, said that this is only the fourth instance in the entire country and first in Rajasthan that the prancreatic transplant has taken place.

> Donor saved 4 other lives by donating kidneys, liver and heart. Only heart was flown to Delhi as there was no B+ blood group recipient

"We are really happy that we have done it again for the first time in state. We would like to thank the donor's family members for their generosity and would expect that more and more people come forward to save lives," said Dr Swarnkar.

A team comprising Dr Raj Shekhar P, Dr TC Sadasukhi, Dr Sooraj Godara, Dr Rajeev Kasliwal along with various other technicians, nursing staff and other members, successfully performed the transplant.

The doctors could perform the whole transplant in an 11-hour long marathon time. The first three days are very crucial for the recipient the doctors have said.

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION: DAILY NEWS
PAGE: 1, DATE- 25.2.2017

प्रदेश में पहली बार पेनक्रियाज ट्रांसप्लांट

ब्रेन डेथ व्यक्ति के पांच अंगदान

एक ही मरीज के लगाया पेनक्रियाज और किडनी

निजी अस्पताल में हुआ हार्ट ट्रांसप्लांट

डेली न्यूज, जयपुर। प्रदेश में पहली बार पेन्क्रियाज ट्रांसप्लांट किया गया है। शहर के एक निजी अस्पताल में एक ब्रेन डेथ व्यक्ति के पेनक्रियाज डोनेट करने के बाद यह ट्रांसप्लांट हुआ है। वहीं शहर के ही एक अन्य निजी अस्पताल में हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया है। यह प्रदेश का दूसरा हार्ट ट्रांसप्लांट है। प्रदेश में पेनक्रियाज और हार्ट ट्रांसप्लांट होना केडेवर ट्रांसप्लांट के इतिहास में माइलस्टोन माने जा रहे हैं। अभी हाल ही में एसएमएस अस्पताल में लिवर ट्रांसप्लांट किया गया है।

राजेन्द्र कुमार

देश में केवल चार जगह

पेनक्रियाज ट्रांसप्लांट अभी तक देश में केवल चार जगहों पर हुआ है। केडेवर डोनर हनुमानगढ़ के तीस साल के राजेन्द्र कुमार है। उनके परिजनों की सहमति मिलने के बाद हार्ट, पेनक्रियाज, लिवर और किडनी डोनेट की गई। इससे चार मरीजों को जीवनदान मिला है। केडेवर डोनर ठेका मजदूर था। लुधियाना में डोनर राजेन्द्र आठ फुट गहरे गड्ढे में गिर गया था। उसके बाद उसे हनुमानगढ़ लाया गया। 21 फरवरी को शहर के महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती हुआ था। 22 फरवरी को उसे ब्रेन डेथ घोषित किया गया।

डायबिटीज के कारण पेनक्रियाज खराब

भरतपुर के एम.एम. जायसवाल जो पिछले 23 साल से डायबिटीज टाइप वन से पीड़ित थे। इससे पेनक्रियाज खराब हो गया था, इंसुलिन नहीं बन पा रहा था। उसके यह पेनक्रियाज ट्रांसप्लांट किया गया है। इस मरीज के 12 घंटे तक ऑपरेशन चला है। उसके पेनक्रियाज और किडनी दोनों ट्रांसप्लांट किए गए हैं। वहीं बीकानेर के एक मरीज को अस्पताल में ही लिवर ट्रांसप्लांट किया गया है। हार्ट जवाहर सर्किल स्थित ईएचसीसी अस्पताल में ट्रांसप्लांट किया गया है।

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION: JAIPUR MAHANAGAR TIMES
PAGE: 8, DATE- 25.2.2017

सराहनीय कदम

राज्य के चिकित्सकों को मिली स्वर्णिम सफलता

महात्मा गांधी में हुआ पहला पेन्क्रियास प्रत्यारोपण

महानगर संवाददाता

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के चिकित्सकों ने एक बार फिर इतिहास रच दिया है। राज्य में हुआ पहला पेन्क्रियास प्रत्यारोपण। लिवर व पेन्क्रियास प्रत्यारोपण डॉ. राज शेखर पी, डॉ. टीसी सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. राजीव कासलीवाल ने यह करिश्माई आपरेशन किया।

चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि अब तक महात्मा गांधी अस्पताल के अलावा कोयम्बटूर, चेन्नई, चंडीगढ़ आदि देश में मात्र चार स्थानों पर ही पेन्क्रियास प्रत्यारोपण हुआ है। डायबिटीज की वजह से खराब हो गया था पेंक्रियाज। इस रोगी को इंसुलिन नहीं बन पा रहा था। राज्य में यह पहला अवसर था जब पेंक्रेआज व किडनी एक साथ किए प्रत्यारोपित किए गए हों। इसके साथ ही राज्य को इस दोहरी सफलता ने देश में नाम ऊंचा किया है।

बी पोसिटिव अंग प्राप्तकर्ता न मिल पाने के कारण हार्ट बाहर भेजा गया। महात्मा गांधी अस्पताल में लिवर प्रत्यारोपण भी हुआ है। बीकानेर निवासी यतीन्द्र यादव को लगाया गया है लिवर। 36 वर्षीय रोगी लिवर फेलियर से था प्रभावित। रोगी का लिवर पूरी तरह खराब हो गया था। लिवर प्रत्यारोपण ब्लड ग्रुप समान होने पर किया जा सका है। डॉ. एमएल स्वर्णकार ने कहा कि ये अस्पताल में बारहवां लिवर प्रत्यारोपण है। अब तक राज्य में तेरह लिवर प्रत्यारोपण हुए हैं।

डॉ. राजशेखर, डॉ संजय सिंघल, डॉ सुरेश भार्गव, डॉ विपिन गोयल, की टीम ने किया मैराथन आपरेशन। ग्यारह घंटे तक चला आपरेशन। रोगी को अब आईसीयू में भेज दिया है। अभी तक आपरेशन सफल रहा पर। तीन दिन विशेष ध्यान रखा जाएगा। महात्मा गांधी अस्पताल बना उत्तर भारत का बड़ा अंगदान व प्रत्यारोपण केंद्र।

हेड एवं नेक कैंसर सेमीनार का उद्घाटन

जयपुर। भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय के तत्वावधान में आयोजित इंडो ग्लोबल समिट ऑन हेड एवं नेक कैंसर सेमीनार का उद्घाटन शुक्रवार को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ. प्रवीण तोगड़िया एवं विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सर्राफ थे।

सम्मेलन में करीब 700 अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय चिकित्सक भाग ले रहे हैं। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सराफ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कैंसर के बढ़ते रोगियों की संख्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त की तथा इस भयावह रोग के रोकथाम, जल्द अवस्था में जांच एवं उचित इलाज पर प्रकाश डाला।

First cadaver pancreas transplant done in Rajasthan

HT Correspondent
htraj@hindustantimes.com

Jaipur: Rajasthan's first cadaver pancreas transplant took place on Friday at a private hospital here on Friday.

Chairman of Mahatma Gandhi Hospital Dr ML Swarnakar said Jaipur has become the fourth centre to transplant pancreas after Coimbatore, Chennai and Chandigarh.

Swarnakar said it is for the first time in the state that pancreas and kidney have been transplanted together in a patient.

He further said that Rajendra Kumar Kheechad (30), a contract labourer with the Bharat Sanchar Nigam Limited, working in Ludhiana, and a resident of Hanumangarh on February 21 while digging a trench got buried in mud and was rescued after half an hour later.

He was admitted to the hospital and he was declared brain dead on February 22.

After counselling, the family members agreed for organ donation. Pancreas, liver and kidney were transplanted at the Mahatma Gandhi Hospital in Jaipur.

The heart was sent to another private hospital– Eternal Health Care Centre – in Jaipur for transplantation and a kidney was sent to the government-run Sawai Man Singh Hospital in Jaipur.

Swarnakar said in Rajasthan, 13 cadaver liver transplantations have taken place out of which 12 have been done in Mahatma Gandhi Hospital. The transplantation surgery went for more than 11 hours starting from 1am on Friday.

In Rajasthan, doctors Raj Shekhar P, TC Sadasukhi, Suraj Godara, Rajeev Kasliwal, Sanjay Singhal, Suresh Bhargava and Vipin Goya are experts in the transplantation of organs, Swarnakar said

AFTER COUNSELLING, THE FAMILY MEMBERS AGREED FOR ORGAN DONATION. PANCREAS, LIVER AND KIDNEY WERE TRANSPLANTED AT THE MAHATMA GANDHI HOSPITAL

On February 8, 2015, a six-year-old boy became first cadaver donor, after being declared bread dead, and his family members agreed to donate his liver and kidneys.

His liver was sent to the Institute of Liver and Biliary Sciences (ILBS), New Delhi, and one kidney was used on a patient in the hospital while the other kidney was sent to Delhi.

The state's first heart transplant was performed on August 3, 2015, making Rajasthan the sixth state to have performed such an operation.

The heart of 18-year old Raju Luhar, a brain dead patient, was transplanted to Suraj Bhan (32).

The first liver transplant was done on November 28, 2015, on a 25-year-old man, suffering from liver cirrhosis, when victim of a road accident in Haryana was declared brain dead.

His family members agreed to donate his liver for transplantation.

The state has carved a niche for itself in organ transplantation with 60 transplants until the end of 2016.

The state began organ transplantation in 2014.

According to Dr Manish Sharma, nodal officer of donor organ and transplantation programme in the state, 10 hospitals in Rajasthan are licensed for organ transplants.

Cornea Transplant

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

महात्मा गांधी अस्पताल में कॉर्निया ट्रांसप्लांट

न्यूज़/नवज्योति, जयपुर

सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल के नेत्र रोग विभाग के चिकित्सकों ने एक नेत्रहीन महिला के बांयी आंख में कॉर्निया का सफल प्रत्यारोपण किया है। नेत्र रोग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. इंदु अरोड़ा ने बताय कि टोंक जिले के डिग्गी मालपुरा के समीप स्थित ग्राम प्रतापुरा निवासी नोरती देवी के लगभग 15 साल से आंखों के कॉर्निया में सफेदी थी, इसके कारण उसे दिखाई नहीं देता था। इस पर आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान से संपर्क किया गया तो वहां कॉर्निया उपलब्ध हो गया। इसके बाद महिला के निःशुल्क कॉर्निया ट्रांसप्लांट किया गया। अस्पताल में यह अब तक का 12वां सफल ऑपरेशन है।

कार्निया ट्रांसप्लान्ट

महात्मा गांधी अस्पताल के विशेषज्ञों ने किया 12वां सफल ऑपरेशन

जयपुर (कासं)। सीतापुरा टोंक रोड स्थित महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के नेत्र रोग विभाग के चिकित्सकों ने एक नेत्रहीन महिला के बाईं आंख में कार्निया का प्रत्यारोपण करने में सफलता हासिल की है। टोंक जिले के डिग्गी मालपुरा के समीप स्थित ग्राम प्रतापुरा निवासी नोरती देवी पत्नी रामस्वरूप के लगभग 15 साल से आंखों के कार्निया में सफेदी थी और इस कारण उसे दिखाई नहीं देता था। महिला की नेत्र ज्योति इतनी अधिक कमजोर थी कि यदि उसे अंगुली दिखाई जाती तो उसे हाथ की परछाई ही मात्र दिखाई देती थी। उसने 16 दिसम्बर को महात्मा गांधी अस्पताल के नेत्र रोग विभाग की विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. इन्दु अरोड़ा से सम्पर्क किया तो उन्होंने इसे गम्भीर स्थिति माना और उसे भर्ती कर लिया। साथ ही कार्निया प्रत्यारोपण के लिए आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान से सम्पर्क किया तो वहां से 17 दिसम्बर को कॉर्निया उपलब्ध हो गया। इसके बाद महिला के निःशुल्क कॉर्निया प्रत्यारोपण किया गया। यह ऑपरेशन लगभग डेढ़ घण्टे तक चला। डॉ. अरोड़ा ने बताया कि अस्पताल में कॉर्निया ट्रांसप्लान्ट का 12वीं सफल ऑपरेशन किया गया है। महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एम.एल. स्वर्णकार ने कहा कि अस्पताल द्वारा शुरू से ही ऐसे प्रयास किए जा रहे है, जिसमें राज्य की जनता को दुनिया की नई से नई तकनीकों के जरिए रियायती दरों पर उपचार सेवाएं उपलब्ध कराई जा सके। कार्निया प्रत्यारोपण भी ऐसा ही प्रयास रहा है। डॉ. स्वर्णकार ने बताया कि अस्पताल में कैडेवर हार्ट का एक, लिवर के दो व 170 से अधिक किडनी प्रत्यारोपण के सफल ऑपरेशन किए जा चुके हैं।

उपलब्धि | महात्मा गांधी अस्पताल में सफल रहा कॉर्निया ट्रांसप्लांट

मने तो म्हारी आंख्या सू अब सब दीख बा लाग ग्यो

नेशनल दुनिया

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल के चिकित्सकों ने एक नेत्रहीन महिला के बांयी आंख में कॉर्निया का प्रत्यारोपण करने में सफलता प्राप्त की है। दरअसल, टोंक जिले के डिग्गी मालपुरा के समीप स्थित ग्राम प्रतापुरा निवासी नोरती देवी पत्नी रामस्वरूप के लगभग 15 साल से आंखों के कॉर्निया में सफेदी थी। इसके कारण उसे दिखाई नहीं देता था। महिला की नेत्र ज्योति इतनी अधिक कमजोर थी कि यदि उसे अंगुली दिखाई जाती तो उसे हाथ की परछाई ही मात्र दिखाई देती थी।

महिला ने 16 दिसम्बर को महात्मा गांधी अस्पताल की नेत्र रोग विभाग की विभागाध्यक्ष एवं प्रोफसर डॉ. इन्दु अरोड़ा से सम्पर्क किया। उन्होंने महिला को भर्ती कर लिया और उन्होंने कॉर्निया प्रत्यारोपण के लिए आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान से सम्पर्क किया। वहां से 17 दिसम्बर को कॉर्निया उपलब्ध हो गया। इसके बाद महिला के निःशुल्क कॉर्निया प्रत्यारोपण किया गया। यह ऑपरेशन लगभग डेढ़ घन्टे तक चला। डॉ. अरोड़ा ने बताया कि अस्पताल में कॉर्निया ट्रांसप्लान्ट का 12वां सफल ऑपरेशन किया गया है। मरीज नोरती ने बताया 'मने तो म्हारी आंख्या सूं सब अब दीख बा लाग ग्यो।'

अस्पताल द्वारा शुरू से ही ऐसे प्रयास किए जाते रहे हैं, ताकि जनता को दुनिया की नई से नई तकनीकों के जरिए रियायती दरों पर उपचार सेवाएं उपलब्ध कराई जा सके। कॉर्निया प्रत्यारोपण भी ऐसा ही प्रयास रहा है। अस्पताल में कैडेवर हार्ट का एक, लिवर के दो तथा 170 से अधिक किडनी प्रत्यारोपण के सफल ऑपरेशन किए जा चुके हैं।

- डॉ. एमएल स्वर्णकार, चेयरमैन महात्मा गांधी अस्पताल

जागरुकता ही सबसे बड़ा उपचार

न्यूज सर्विस/नवज्योति, ब्यावर

विकास मंडल ट्रस्ट ब्यावर एवं महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर की ओर से छावनी स्थित अश्विनी हॉस्पीटल में चिकित्सा शिविर के बाद चिकित्सा विशेषज्ञों ने कहा कि किसी भी रोग के प्रति जागरूकता ही सबसे बड़ा उपाचार है। किसी भी बीमारी में उपचार के प्रति बरती गई लापरवाही स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकती है। वह पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे।

महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के हृदय शल्य चिकित्सक डा.अजय मीणा, न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ.गौरव गोयल, यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ.एचएल गुप्ता, एन्ड्रोक्रोनोलोजी विशेषज्ञ डॉ.राजीव कासलीवाल ने विभिन्न रोगों के प्रति आमजन को जागरूक होने की बात कही। विशेषज्ञों का कहना है कई लोगों में आज भी बीमारियों के प्रति भ्रांतियां है। जिसे दूर करना आवश्यक है। किसी भी बीमारी का उपचार लेने के बाद समय-समय पर जांच करवाएं एवं चिकित्सक के परामर्श से ही दवाइयां ले। उन्होंने कहा कि रोगों का कारण दिनचर्या एवं खान पान में परिवर्तन का आना है। अस्पताल के मार्केटिंग निदेशक वीरेन्द्र पारीक ने बताया कि विकास मंडल के प्रयास से ही एक साथ इतने विशेषज्ञ एक साथ आ पाए हैं। उन्होने बताया कि टेलीवर्जन पद्धति से वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिए लोगो को चिकित्सा सुविधा मुहैया कराए जाने का प्रयास किया जाएगा। इस दौरान महात्मा गांधी चिकित्सालय की ओर से विकास विकास ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष महावीर लोढ़ा सहित अन्य सदस्यों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर में 325 लाभांवित

न्यूज सर्विस/नवज्योति, ब्यावर

विकास मंडल ट्रस्ट ब्यावर एवं महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर की ओर से छावनी स्थित अश्विनी हॉस्पिटल में गुरुवार को निःशुल्क उपचार परामर्श शिविर में 325 रोगियों को परामर्श दिया।

अस्पताल के मार्केटिंग निदेशक वीरेन्द्र पारीक एवं विकास ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष महावीर लोढ़ा ने बताया कि हृदय शल्य चिकित्सक डा.अजय मीणा, न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ.गौरव गोयल, यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ.एचएल गुप्ता, एन्ड्रोक्रोनोलोजी विशेषज्ञ डॉ.राजीव कांसलीवाल ने सेवा दी। रोगियों की ईसीजी, शुगर, ब्लेड प्रेशर की जांच भी निःशुल्क की गई। शिविर में श्रीकृष्ण भारद्वाज, कुशलचंद मेड़तवाल, नौरतमल माहेश्वरी, जबरचंद कोठारी, मुरलीधर शर्मा ने सहयोग प्रदान किया।

18 Dec. 2015 | दैनिक भास्कर

अनियमित जीवनशैली रोगों के लिए जिम्मेदार

भास्कर ने डॉक्टरों से जाना कि कैसे लोग अपनी जीवनशैली और खानपान में बदलाव लाकर जी सकते हैं स्वस्थ जिंदगी | प्रदेश के पहले हार्ट प्लांट टीम के डॉक्टर व तीन सुपरस्पेशलिस्ट ने बताया आज की जीवनशैली किस तरह से हार्ट, किडनी, लकवे व डायबिटीज के लिए जिम्मेदार

भास्कर न्यूज | ब्यावर

शहर में पहली बार देश के जाने माने हृदय रोग विशेषज्ञ से लेकर न्यूरोलॉजिस्ट, यूरोलॉजिस्ट व एंडोक्रोनोलॉजिस्ट ने अश्विनि हॉस्पीटल में आयोजित शिविर में अपनी सेवाएं दीं। इस दौरान डॉक्टरों ने मरीजों की ना केवल जांच की बल्कि पाया कि ज्यादातर बीमारियों की वजह आज लोगों की अनियमित जीवनशैली है जिसके चलते व्यक्ति हार्ट, मधुमेह, किडनी एवं मस्तिष्क की गंभीर बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। इस शिविर में भास्कर ने विशेषज्ञ डॉक्टरों से जाना कि हमारे शहर के जो लोग किसी ना किसी बीमारी से ग्रस्त हैं। वे अपने खानपान में किस तरह से बदलाव लाएं। इन बीमारियों के क्या कारण हैं। इन बीमारियों का किस अवस्था में पता लगाया जा सकता है। किस तरह की लाइफ स्टाइल लोगों को अपनानी चाहिए। रोग की पुष्टि होने पर किस तरह का परहेज करें आदि कारणों पर विस्तार से बात की।

40 की उम्र में घेरने लगे रोग

एम्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में प्रशिक्षित तथा महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर में हार्ट ट्रांसप्लांट टीम के डॉक्टर अजय मीणा ने बताया कि बदलती दिनचर्या, खानपान, तनाव आदि की वजहों से नसों में रुकावट जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। बुजुर्गों की इस बीमारी का प्रभाव अब 40 वर्ष की उम्र में ही दिखाई देने लगा है। धूम्रपान की लत ने इस बीमारी को और बढ़ा दिया है। आज कोरोनरी(सीएडी), वॉल्व और जन्मजात डिसीज तीन तरह की बीमारी हृदय रोग से जुड़ी हैं। जिसमें सीएडी का लक्षण पाए जाने पर डायबिटीज का सबसे पहले कंट्रोल होना जरूरी है। ब्लडप्रेशर पर नियंत्रण, स्मोकिंग को छोड़ना, कोलस्ट्राल और पेट बढ़ना रोकना जरूरी है। रोज चार से पांच किलोमीटर पैदल चलना चाहिए। एंजियोग्राफी जैसी जांच से हृदयवाहिनियों की रुकावट का आसानी से पता लगाया जा सकता है। जिसे आवश्यकतानुसार एंजियोप्लास्टी तथा बाईपास सर्जरी से उपचारित किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि हृदयरोग उपचार अब किसी भी तरह से खतरनाक नहीं है। सामान्य ऑपरेशनों की तरह हार्ट सर्जरी भी पूरी सफलता के साथ की जा रही है।

उपचार में नहीं करें देरी

शिविर में यूरिन से संबंधित मरीज ज्यादा आए थे। डॉ. गुप्ता ने बताया कि उपचार की स्थानीय सुविधाओं के अभाव में हो रही देरी से बीमारी गंभीर हो जाती है। आज कल खानपान पर लोगों द्वारा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जिसके कारण किडनी की पथरी, प्रोस्टेट की समस्या बढ़ती जा रही है। यदि बीमारी का समय पर उपचार शुरू हो जाए तो काफी हद तक इन बीमारियों पर नियंत्रण रखा जा सकता है। देरी होने पर ऑपरेशन द्वारा उपचार किया जा सकता है। अधिक देरी होने पर बीमारी को पूरी तरह से ठीक किया जाना संभव नहीं हो पाता है। गुर्दे या पेशाब की थैली में स्थाई समस्या भी हो सकता है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि लोगों को चाहिए कि वह ज्यादा से ज्यादा पानी पीएं। एक सामान्य व्यक्ति को दिन में तीन से चार लीटर पानी पीना चाहिए। जबकि इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति को पांच से छह लीटर पानी पीना चाहिए। इसके अलावा लोगों को बीज वाली चीजें नहीं खाना चाहिए। जैसे अमरूद, टमाटर। पेशाब को ज्यादा देर तक रोकना भी इस तरह की बीमारी को जन्म देता है। इन बीमारियों का प्रमुख लक्षण पेशाब में जलन, रुक-रुक करना आना, पेशाब में खून आना।

लाइलाज नहीं है डायबिटीज

डॉक्टर कासलीवाल कहते हैं कि डायबिटीज लाइलाज नहीं है। हालांकि जिस तेजी के साथ युवा वर्ग डायबिटीज की चपेट में आ रहा है। देश की पंच प्रतिशत आबादी में ज्ञात रूप से इसका असर देखा गया है। अज्ञात रोगियों की संख्या भी इससे कम नहीं होगी। इसे भी साइलेंट किलर माना जाता है। ब्लड शुगर की अनियंत्रित स्थिति आंख, किडनी, मस्तिष्क आदि अंगों को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। ब्लड शुगर जांच के जरिए इसकी पहचान आसानी से की जा सकती है। खाने से पहले 80 से 100 तथा खाने के बाद 125 तक शुगर लेवल सामान्य माना जाता है। इससे अधिक या कम होने पर रोगी को दवाइयां शुरू हो जाना चाहिए। डायबिटीज विशेषज्ञ की देखरेख में समय पर जांचें तथा दवाई लेने पर डायबिटीज के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। थाइराइड के अधिक सक्रिय या कम होने पर रोगियों को सुस्ती, थकान, हाथ, पैरों में, गले में सूजन जैसे लक्षण आ जाते हैं। जिन्हें सामान्य सी जांचें तथा दवा के जरिए पूरी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है। डायबिटिक लोगों को मॉर्निंग वाक पर 30 मिनट तक रोज जाना चाहिए। ये भ्रांति है कि मीठा खाने वालों को ही डायबिटीज हो सकती है।

साइलेंट किलर है ब्लड प्रेशर

महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. गोयल ने बताया कि बदलती दिनचर्या व खानपान ने समाज को लाइफ स्टाइल डिसीज जैसे ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, आदि के करीब ला दिया है। जानकारी के अभाव में साइलेंट किलर के रूप में पनप रहे ब्लड प्रेशर के अनियंत्रित रहने से शरीर अथवा मुंह का लकवा होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में दिमाग की बारीक नसें फट जाती हैं। शरीर के आधे हिस्से में सुन्नता आ जाती है। तथा अंग काम नहीं करते हैं। कई लोगों में चेहरे का लकवा भी आ जाता है। ऐसी गंभीर बीमारियों से बचने के लिए समय-समय पर ब्लड प्रेशर की जांच कराकर न्यूरोलॉजिस्ट की सलाह ली जानी चाहिए। लकवे का उपचार झाड़-फूंक से नहीं किया जाना चाहिए।

शिविर में मिली विशेषज्ञों की सेवाएं

ब्यावर | विकास मंडल ट्रस्ट के तत्वाधान में शहर के छावनी रोड स्थित अश्विनि हॉस्पीटल में एक निशुल्क सुपर स्पेशलिटी शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के चार स्पेशलिस्ट डॉक्टरों ने मरीजों को अपनी सेवाएं दीं। इस अवसर पर इसीजी, ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर की निशुल्क जांच की गई। शिविर में 325 मरीजों को चिकित्सीय परामर्श दिया गया। सुबह दस बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक चले शिविर में काफी संख्या में मरीज आए। ज्यादातर मरीज हार्ट के रोग से संबंधित आए जिन्हें हार्ट के डाक्टर अजय मीणा ने देखा। इसके अलावा न्यूरोलॉजी के डॉक्टर गौरव गोयल, यूरोलॉजी के डॉक्टर एचएल गुप्ता, एवं ऐंडोक्रोनोलॉजी के डॉक्टर राजीव कासलीवाल ने रोगियों की जांच कर उन्हें निशुल्क परामर्श दिया। शिविर में श्रीकृष्ण भारद्वाज, कुशलचंद मेड़तवाल, नौरतमल माहेश्वरी, जबरचंद कोठारी, मुरलीधर शर्मा सहित ट्रस्ट के अलावा अन्य समाजों के विभिन्न लोगों ने शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। महात्मा गांधी अस्पताल के मार्केटिंग निदेशक वीरेंद्र पारीक एवं विकास मंडल ट्रस्ट के अध्यक्ष महावीर लोढ़ा ने बताया कि पहली बार शहर में इस तरह का निशुल्क शिविर का आयोजन किया गया शिविर में विकास मंडल ट्रस्ट परिवार ने 5 असहाय रोगियों का निशुल्क बाइपास ऑपरेशन कराने का लक्ष्य रखा है।

सवा तीन सौ रोगी लाभान्वित

निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा व परामर्श शिविर, पांच असहाय हृदय रोगियों की ट्रस्ट की ओर से कराई जाएगी बाईपास सर्जरी

मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर के दौरान जानकारी देते महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के विशेषज्ञ चिकित्सक। पत्रिका

ब्यावर. महात्मा गांधी अस्पताल, जयपुर के सहयोग तथा विकास मंडल ट्रस्ट ब्यावर के तत्वावधान में छावनी मार्ग स्थित अश्विनी हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेंटर में गुरुवार को निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा व परामर्श शिविर में रोगियों की भीड़ उमड़ी। शिविर में लगभग 325 मरीजों को लाभान्वित किया गया। महात्मा गांधी अस्पताल के मार्केटिंग निदेशक वीरेन्द्र पारीक व विकास मंडल ट्रस्ट के अध्यक्ष महावीर लोढ़ा ने बताया कि शिविर में हृदय शल्य चिकित्सक डॉ. अजय मीणा, न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. गौरव गोयल, यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. एच.एल. गुप्ता व एंडोक्रोनोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. राजीव कासलीवाल ने सेवाएं दी। शिविर में रोगियों की ईसीजी, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर की जांच निःशुल्क की गई। ट्रस्ट की ओर से पांच असहाय हृदय रोगियों का बाईपास सर्जरी के लिए चयन किया गया। शिविर में श्रीकृष्ण भारद्वाज, कुशलचंद मेड़तवाल, नौरतमल माहेश्वरी, जबरचंद कोठारी, मुरलीधर शर्मा आदि ने सहयोग प्रदान किया।

महंगा नहीं हैल्दी खाएं

शिविर के दौरान स्वास्थ्य को लेकर बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में बताते हुए चिकित्सकों ने कहा कि मंहगा नहीं हैल्दी खाएं। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की बीमारी के प्रारम्भिक जानकारी के साथ ही चिकित्सक से सलाह ले लें। डॉ. राजीव कासलीवाल ने कहा कि भारत में शुगर के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले दस सालों में ग्रामीण क्षेत्र में भी इस बीमारी से ग्रस्त लोगों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। महावीर लोढ़ा ने सभी का आभार जताया।

कॉर्निया प्रत्यारोपण से लौटी आँख की रोशनी | ब्यावर में आयोजित विशाल सुपर स्पेशियलिटी शिविर

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL PUBLICATION :
NATIONAL DUNIYA- CITY FRONT PAGE
PAGE NO: 5 DATE 15.07.2015

डी-सैक कॉर्निया प्रत्यारोपण कर बचाई आंख

महात्मा गांधी अस्पताल की नेत्र रोग विशेषज्ञ ने किया ऑपरेशन

नेशनल दुनिया

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल में बुल्लस कैरेटोप्लास्टी (आंख के घाव) का सफलता पूर्वक डी-सैक कॉर्निया प्रत्यारोपण किया गया। ऑपरेशन की खास बात यह थी कि रोगी के कॉर्निया की अंदरूनी परत में खराबी थी। नेत्रदान से प्राप्त हुई आंख का वही हिस्सा निकालकर प्रत्यारोपित किया गया। इससे रोगी को जहां दर्द से छुटकारा मिला, वहीं आंख का धुंधलापन भी दूर हो गया। इस तरह नेत्रदान के जरिये एक व्यक्ति की खराब हो चुकी आंख को बचाया जा सका। यह ऑपरेशन निःशुल्क किया गया।

अस्पताल में नेत्र रोग विभागाध्यक्ष डॉ. इंदु अरोड़ा ने बताया कि जयपुर निवासी 70 वर्षीय गोपीराम पिछले दस सालों से कार्निया के छालों से परेशान था। आंख से लगातार पानी बहना, कांटे चुभना व दर्द जैसी समस्याओं के चलते वह न आंख खोल सकता था और न बंद रखे सकता था। इसका एकमात्र उपचार कॉर्निया ट्रांसप्लाण्ट था। मरीज का पूरा कॉर्निया न बदलकर केवल कॉर्निया की अंदरूनी परत बदली गई। राजस्थान आई बैंक सोसाइटी के जरिए एक दान रूप में मिली एक आंख से यह ऑपरेशन संभव हो सका।

आम कॉर्निया प्रत्यारोपण से अलग

डॉ. इंदु अरोड़ा ने बताया कि यह ऑपरेशन आम कॉर्निया प्रत्यारोपण से अलग था। रोगी के कॉर्निया की पिछली परत ही खराब हो गई थी और उस पर छाले हो गए थे। डी-सैक नामक इस ऑपरेशन में दान से प्राप्त आंख के कॉर्निया की अंदरूनी परत को अलग किया गया। फिर रोगी की खराब बांई आंख के अंदरूनी परत को अलग कर उसके स्थान पर एण्डोथैलियम को लगा दिया गया। इससे रोगी की प्राकृतिक आंख में संरचनात्मक बदलाव भी नहीं करना पड़ा। डॉ. अरोड़ा ने बताया कि यह ऑपरेशन माइक्रोस्कोप के जरिये आंख को 30 से 50 गुना तक बड़ा करके देखा गया। हवा के दबाव द्वारा पर्दे की परत को पूरी तरह प्राकृतिक रूप में आंख में चिपका दिया गया। ऑपरेशन में एनेस्थीसिया विभागाध्यक्ष डॉ. दुर्गा जेतवा ने सहयोग किया।

लो फिर लौट आई आंखों की रोशनी

जयपुर, (कासं)। महात्मा गांधी अस्पताल के नेत्र रोग विभाग के चिकित्सकों ने खेल-खेल में आंखों की रोशनी खो देने वाले बालक का ऑपरेशन कर पुनः रोशनी लाने का कार्य किया है।

अलवर जिले के गढ़ी सवाईराम निवासी 12 साल का सीताराम स्कूल में खेल रहा था कि अचानक आंख में लकड़ी घुस गई जिसके कारण उसके आंख में जख्म तो हो गया ही साथ ही उसे दिखाई देना भी बंद हो गया। महात्मा गांधी अस्पताल के नेत्र रोग विभाग में चिकित्सक डॉ. चेतन्य गुप्ता ने बताया कि उन्होंने मरीज की आंख की सोनाग्राफी कराई तो उसमें ट्रोमेरोटिक केटरेक्ट होना पाया गया। इस पर उन्होंने सीताराम का ऑपरेशन कर लैंस प्रत्यारोपित किया। ऑपरेशन के उपरांत उसकी आंखों की रोशनी लौट आई।

NEWS: MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION: RAJASTHAN PATRIKA (SANGANER)
PAGE: 3, DATE- 25.2.2017

...लौट आई आंखों की ज्योति

सीतापुरा ■ खेल-खेल में आंखों की रोशनी खो देने वाले बालक को एक ऑपरेशन से आंखों की रोशनी लौट आई है। महात्मा गांधी अस्पताल के नेत्र रोग विभाग के चिकित्सकों ने लेंस लगाकर यह कारनामा किया है। अलवर के गढ़ी सवाईराम निवासी सीताराम उम्र 12 वर्ष स्कूल में खेल रहा था कि अचानक आंख में लकड़ी घुस गई जिसके कारण उसके आंख में जख्म तो हो गया ही साथ ही उसे दिखाई देना भी बंद हो गया था। परिचित की सलाह पर वह अस्पताल आया। नेत्र रोग चिकित्सक डॉ. चेतन्य गुप्ता ने आंख की सोनाग्राफी कराई तो उसमें ट्रोमेरोटिक केटरेक्ट होना पाया गया। इसके बाद डॉ. गुप्ता ने सीताराम का ऑपरेशन कर लैंस प्रत्यारोपित किया उसकी आंखों की रोशनी लौट आई।

फ्यूजन इमेजिंग से कैंसर की पहचान करना आसान : डॉ. जंखारिया

महात्मा गांधी विवि में विवेकानंद ओरेशन कार्यक्रम

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी की ओर से बुधवार को संस्थान परिसर में विवेकानंद ओरेशन कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता जंखारिया रेडियोलोजी सेन्टर मुम्बई के निदेशक डॉ.भाविन जंखारिया ने कहा कि कैंसर की जांच एफएनएसी के जरिए की जाती है। जो कि कष्टदायक प्रोसेस है। अब एमआरआई फ्यूजन इमेजिंग से कैंसर की न केवल पहचान बल्कि आंकलन आसानी से किया जा सकता है। इससे मरीज को भी किसी तरह की दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता। रेडियोलोजिस्ट, ओंकोलोजी, कार्डियोलोजी, न्यूरोसर्जरी, यूरोलोजी से संबंधित बीमारियों में अहम भूमिका निभा रहे है। डॉ.जंखारिया के अनुसार थैलेसीमिया व आर्थराइटिस की जांच एमआरआई से पता लगाया जाता है। यूनिवर्सिटी के चेयरपर्सन डॉ.एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि डॉक्टरों को तकनीकी अपडेट के लिए हर साल चार ओरेशन कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। डॉ.स्वर्णकार ने कहा कि अस्पताल में जल्द रेडियो इंटरवेंशन सेवाएं शुरु की जा रही है। इसके लिए आधुनिक मशीनें स्थापित की है। इस मौके पर डॉ.डी.पी.पूनिया व डॉ.सुधीर सचदेवा समेत अनेक डॉक्टर उपस्थित थे।

खबरों के आइने में

महात्मा गाँधी अस्पताल

दैनिक भास्कर जयपुर, शनिवार 25 फरवरी 2017 (सिटी फ्रंट पेज)

एक और उपलब्धि राजस्थान उन प्रदेशों में शुमार, जहां सभी अंगों का ट्रांसप्लांट संभव, ब्रेन डेड का अंग मधुमेह मरीज को लगाया

प्रदेश का पहला पैन्क्रियाज का ट्रांसप्लांट सफल

हैल्थ रिपोर्टर. जयपुर

लिवर, हार्ट और किडनी के बाद प्रदेश में पहला पैन्क्रियाज ट्रांसप्लांट (अगन्याशय प्रत्यारोपण) जयपुर में किया गया है। अभी देश के कोयम्बटूर, चेन्नई, चंडीगढ़, मुम्बई और दिल्ली सहित चुनिंदा शहरों में ही यह ट्रांसप्लांट किया गया है। ब्रेन डेड व्यक्ति का अगन्याशय मधुमेह के मरीज को लगाया गया। इसके साथ ही राजस्थान उन प्रदेशों में शुमार हो गया, जहां सभी प्रकार के ट्रांसप्लांट करना संभव हो गया है।

महात्मा गांधी अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि हनुमानगढ़ निवासी राजेन्द्र कुमार (35) बीएसएनएल में ठेका मजूदर था। लुधियाना में गड्ढा खोदते हुए मिट्टी में दब गया था। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे हनुमानगढ़ अस्पताल लाया गया, जहां से 21 फरवरी को महात्मा गांधी अस्पताल लाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे 22 फरवरी को ब्रेन डेड घोषित कर दिया। समझाइश के बाद राजेन्द्र के परिजन उसके अंग दान करने को तैयार हो गए। उसके बाद पैन्क्रियाज के जरूरतमंद बीकानेर निवासी यतीन्द्र यादव (36) से संपर्क किया गया। डायबिटीज के कारण उसका पैन्क्रियाज खराब होने से इंसुलिन नहीं बन पा रहा था और हालत बिगड़ती गई। डॉक्टर डॉ राजशेखर, डॉ संजय सिंघल, डॉ सुरेश भार्गव और डॉ विपिन गोयल ने 23 फरवरी को 11 घंटे बाद यतीन्द्र को नया पैन्क्रियाज लगा दिया। मरीज को अगले तीन दिन आईसीयू में रखा जाएगा। लिवर और किडनी भी ट्रांसप्लांट किए गए।

सराहनीय कदम राज्य के चिकित्सकों को मिली स्वर्णिम सफलता

महात्मा गांधी में हुआ पहला पैन्क्रियास प्रत्यारोपण

महानगर संवाददाता

जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के चिकित्सकों ने एक बार फिर इतिहास रच दिया है। राज्य में हुआ पहला पैन्क्रियास प्रत्यारोपण। लिवर व पैन्क्रियास प्रत्यारोपण डॉ. राज शेखर पी, डॉ. टीसी सदासुखी, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. राजीव कासलीवाल ने यह करिश्माई आपरेशन किया।

चेयरमैन डॉ. एमएल स्वर्णकार ने बताया कि अब तक महात्मा गांधी अस्पताल के अलावा कोयम्बटूर, चेन्नई, चंडीगढ़ आदि देश में मात्र चार स्थानों पर ही पैन्क्रियास प्रत्यारोपण हुआ है। डायबिटीज की वजह से खराब हो गया था पैंक्रियाज। इस रोगी को इंसुलिन नहीं बन पा रहा था। राज्य में यह पहला अवसर था जब पैंक्रआज व किडनी एक साथ किए प्रत्यारोपित किए गए हों। इसके साथ ही राज्य को इस दोहरी सफलता ने देश में नाम ऊंचा किया है।

बी पोसिटिव अंग प्राप्तकर्ता न मिल पाने के कारण हार्ट बाहर भेजा गया। महात्मा गांधी अस्पताल में लिवर प्रत्यारोपण भी हुआ है। बीकानेर निवासी यतीन्द्र यादव को लगाया गया है लिवर। 36 वर्षीय रोगी लिवर फेलियर से था प्रभावित। रोगी का लिवर पूरी तरह खराब हो गया था। लिवर प्रत्यारोपण ब्लड ग्रुप समान होने पर किया जा सकता है। डॉ. एमएल स्वर्णकार ने कहा कि ये अस्पताल में बारहवां लिवर प्रत्यारोपण है। अब तक राज्य में तेरह लिवर प्रत्यारोपण हुए हैं।

डॉ. राजशेखर, डॉ संजय सिंघल, डॉ सुरेश भार्गव, डॉ विपिन गोयल, की टीम ने किया मैराथन आपरेशन। ग्यारह घंटे तक चला आपरेशन। रोगी को अब आईसीयू में भेज दिया है। अभी तक आपरेशन सफल रहा पर। तीन दिन विशेष ध्यान रखा जाएगा। महात्मा गांधी अस्पताल बना उत्तर भारत का बड़ा अंगदान व प्रत्यारोपण केंद्र।

हेड एवं नेक कैंसर सेमीनार का उद्घाटन

जयपुर। भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय के तत्वावधान में आयोजित इंडो ग्लोबल समिट ऑन हेड एवं नेक कैंसर सेमीनार का उद्घाटन शुक्रवार को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ. प्रवीण तोगड़िया एवं विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सर्राफ थे।

सम्मेलन में करीब 700 अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय चिकित्सक भाग ले रहे हैं। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सराफ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कैंसर के बढ़ते रोगियों की संख्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त की तथा इस भयावह रोग के रोकथाम, जल्द अवस्था में जांच एवं उचित इलाज पर प्रकाश डाला।

Brain dead man gives life to four

In A 1st, Pancreas Transplanted, Apart From Liver, Heart & Kidney

TIMES NEWS NETWORK

TOI

A man offers floral tribute to the deceased at a city hospital on Friday

Jaipur: Friday was a big day for Rajasthan in the field of organ transplant.

City doctors performed transplant of not only heart, liver, kidneys but also pancreas transplant was conducted for the first time.

A brain dead person donated his organs which were transplanted in four different persons. Kidney and pancreas were transplanted into one patient who was suffering from hypertension and diabetes which damaged his kidney. "Now, after pancreas transplant, his diabetes will be cured," Dr Suraj Godara, consultant nephrologist and transplant physician at Mahatma Gandhi hospital (MGH), said.

Godara said the patient was suffering from diabetes as his pancreas was not producing insulin. Also, hypertension and diabetes had adverse effect on his kidneys. "He was suffering from end stage kidney disease. He was on dialysis since May 2016," Dr Godara added.

The organs were donated at Mahatma Gandhi Hospital while heart was transplanted into a patient, in Eternal Hospital, who had suffered heart attack three years ago.

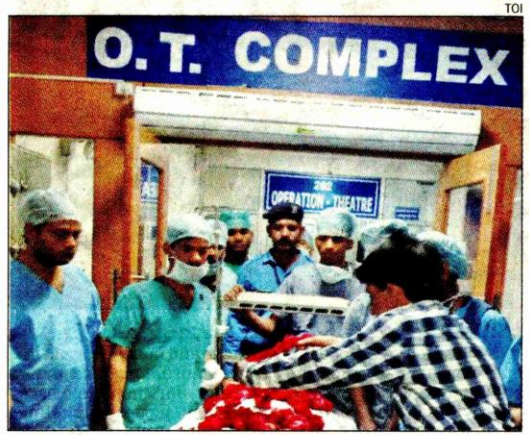

MGH chairman M L Swarnkar said Jaipur is now among five places in the country which has witnessed pancreas transplant.

The heart was transported to Eternal Hospital from MGH for transplant. "We have transplanted the heart into a 57-year-old patient who had suffered heart attack three years back, after which he developed Ischemic cardiomyopathy," Dr Ajeet Bana, chairman of cardiac sciences at Eternal Hospital, said.

In Ischemic cardiomyopathy, a patient's heart is not able to pump enough blood for rest of the body. In such a condition, heart transplant is one of the options available to save lives of such patients. In this case, his blood vessels have narrowed down which supply blood and oxygen to heart. The surgery was started at 10pm and continued till 6am Friday.

Liver and pancreas transplants were conducted in MGH by Dr Raj Shekhar, who is specialist in such kind of complicated surgeries.

The surgeries became possible because of the consent given by family of a patient, who was declared brain-dead, to donate his organs.

Thirty-year-old Rajendra Kumar, a resident of Hanumangarh, was a contractor in a telecom company. While he was laying down some underground cables in Ludhiana, the sand caved in.

He was rushed to a hospital immediately. On February 21, he was brought to MGH for his treatment. But, on Thursday, he was declared brain dead by brain death declaration committee of the hospital. Counselling team of the hospital encouraged his family to donate organs so that they would give new life to four other patients who fighting for life with organ failures. After receiving family's consent, his organs were retrieved by the doctors on Thursday late evening.

Prof-Nirmal Gupta
12 August 2015 ·

#WayForward CSIl congratulates Dr **Murtaza Chishti** and his team of doctors, nurses and technicians at Mahatma Gandhi for performing their First Heart Transplant patient in the State of Rajasthan. Seen here in the picture are Dr Murtaza Chishti, the cardiac transplant surgeon. Best wishes for a great recovery of the patient and many more in the future. **Prof-Nirmal Gupta**

महात्मा गाँधी अस्पताल, जयपुर
श्री राम कैंसर एण्ड सुपर स्पेशियलिटी सेन्टर

सीतापुरा इन्स्टीट्यूशनल एरिया, टोंक रोड, जयपुर

फोन: 0141-2771777, 2771001-2-3, एम्बूलेन्स: 2771000 ■ Toll free : 1800 180 6002, Web.: www.mgmch.org

बधाइयां

उत्तर भारत के प्रमुख एवं अत्याधुनिक
कैंसर सेन्टर में सफल रहा
प्रथम बोन मैरो ट्रांसप्लांट

डॉ. प्रशांत कुम्भज | डॉ. अजय यादव | उपचारित रोगी | डॉ. संजय बैरवा | डॉ. हेमंत मल्होत्रा | डॉ. नवीन गुप्ता

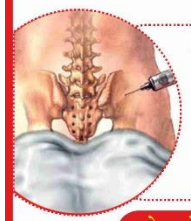

मल्टीपल मॉयलोमा के रोगियों का आटोलोगम एवं थैलेसिमिया के
रोगियों के लिए ऐलोजेनिक **बोनमेरो ट्रांसप्लांट**
की सुविधा महात्मा गाँधी अस्पताल में उपलब्ध

देश के विख्यात केन्द्रों पर प्रशिक्षित अनुभवी विशेषज्ञों की टीम द्वारा उपचार सेवाएं

■ डे-केयर कीमोथैरेपी ■ टारगेटेड कीमोथैरेपी ■ हार्मोनल थैरेपी ■ इम्यूनोथैरेपी ■ हिमेटोलोजी
■ रेडियो थैरेपी ■ एचडीआर ब्रेकी थैरेपी ■ 3D CRT ■ IMRT ■ IGRT ■ Rapid Arc

कैंसर ऑपरेशन कैंसर के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा

मुख्यमंत्री जीवन रक्षा कोष, राजस्थान सरकार व केन्द्र सरकार के समस्त कर्मचारी व पेंशनर्स, ESIC, ECHS, BSNL, रेलवे, FCI, सरस बीमा योजना, RCDF, All MEDICLAIM Cos. TPAs से उपचार हेतु अधिकृत

सम्पर्क : ओ. पी. भवण – 9799999672 | हेमन्त वर्मा – 9116134265 | गौरव शर्मा – 9799999528

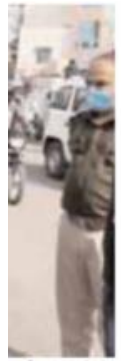

मल्टीपल मायलोमा के रोगी का बोनमैरो प्रत्यारोपण

महात्मा गांधी अस्पताल में सफल रहा प्रथम बोनमैरो ट्रांसप्लान्ट

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। शहर के सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल श्रीराम कैंसर सेन्टर के चिकित्सकों की टीम ने बोनमैरो प्रत्यारोपण करने में सफलता अर्जित की है। अस्पताल के श्रीराम कैंसर सेंटर निदेषक तथा मेडिकल ऑन्कोलोजी विभागाध्यक्ष डॉ. हेमन्त मल्होत्रा ने बताया कि बोनमैरो प्रत्यारोपण देष एवं राज्य के चुनिन्दा केन्द्रों पर ही उपलब्ध है। खास बात यह है कि अब यह सेवा राज्य के महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर में नियमित रूप से उपलब्ध कराई जा रही है। इसके लिए डॉक्टर्स व नर्सेज की टीम विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है। अस्पताल द्वारा बोनमैरो ट्रांसप्लाण्ट रोगियों के लिए हैल्प लाइन सेवा भी शुरू की गई हैं जिसके जरिये रोगियों को घर बैठे ही चिकित्सकों द्वारा परामर्ष उपलब्ध कराया जा रहा है। वरिष्ठ मेडिकल आन्कोलोजिस्ट डॉ. अजय यादव ने बताया कि विजय नगर, अजमेर निवासी अनिल, बदला नामद्ध के मल्टीपल मायलोमा बीमारी का पता लगा जो एक प्रकार का अस्थि मज्जा का कैंसर होता है। इसमें अस्थि मज्जा में खून के साथ साथ कैंसर कोषिकाएं पनपने लगती हैं। मरीज को हड्डियों में तेज दर्द की षिकायत रहती थी तथा उसके सीने की हड्डी के हिस्से में गांठ भी हो गई थी। इस बीमारी में हड्डियां कमजोर होने लगती हैं, बार बार संक्रमण की षिकायत रहती है। रोगी की कीमोथैरेपी शुरू की जिससे बीमारी पर शुरूआत में नियंत्रण पा लिया गया। इसके बाद मरीज का इस माह ओटोलोगस स्टैम सैल ट्रांसप्लान्ट किया गया। लगभग एक माह तक आइसोलेशन में भर्ती रहने के बाद मरीज को स्वस्थ्य अवस्था में छुट्टी दे दी गई।

यह है ओटोलोगस स्टैम सैल ट्रांसप्लान्ट

अस्पताल के हीमेटोलोजिस्ट डॉ नवीन गुप्ता ने बताया कि ओटोलोगस स्टैम सैल ट्रांसप्लान्ट से पहले रोगी के स्टेम सैल को एकत्रित किया जाता है। इसके बाद हाईडोज कीमो थैरेपी देकर हड्डियों से कैंसर को नष्ट किया गया। रक्त निर्माण करने वाली स्टेम सेल्स को रोगी के शरीर में खून की तरह से चढाया जाता है। अस्थि-मज्जा की पुनः संरचना होने में दो से तीन सप्ताह का लगता है। इस दौरान रोगी की प्रतिरोधकता बेहद कम हो जाती है एवं मरीज को गहन आईसोलेशन में रहने की आवष्यकता होती है।

ट्रांसप्लान्ट टीम में ये चिकित्सक थे शामिल

महात्मा गांधी श्रीराम कैंसर सेन्टर में हुए प्रथम बोनमेरो प्रत्यारोपण में डॉ हेमन्त मल्होत्रा, डॉ अजय यादव, डॉ नवीन गुप्ता, डॉ प्रषांत कुम्भज, डॉ अंकुर पूनिया, डॉ संदीप बैरवा तथा ब्लड बैंक के निदेशक डॉ आर एम जायसवाल शामिल थे।

लिमा रिमा तकनीक से बायपास

शादी समारोह की आवश्यक रूप से करवानी

Successful Treatment

CITY FIRST

Autologous bone marrow transplant for a multiple myeloma patient was successfully performed at the Sri Ram Cancer Centre, Mahatma Gandhi Hospital at Sitapura. The Director of the Cancer Centre and Head of Department of Medical Oncology Dr Hemant Malhotra informed that bone marrow transplant facilities are available at only selected centres in the country and now Mahatma Gandhi Hospital will also be offering this on a regular basis. There is no need to go to metro cities to get bone marrow transplantation. Recently, helpline services for Bone Marrow Transplant are also started at the hospital.

Right to left: Dr Naveen Gupta, Dr Hemant Malhotra, treated patient, Dr Ajay Yadav and Dr Prashant Kumbhaj

Dr Ajay Yadav Medical Oncologist informed that the patient was diagnosed as having Multiple myeloma in May this year. He was having complains of bone pains and the lump in the chest region. The disease was initially treated with chemotherapy and it was responded well. After which autologous bone marrow transplant was performed this month. The patient was admitted in strict isolation for nearly a month and was discharged in a healthy state on Monday.

BMT team members at MGH: Dr Hemant Malhotra, Dr Ajay Yadav, Dr Naveen Gupta, Dr Prashant Kumbhaj, Dr Sandeep Bairwa, Dr Ankur Punia and Dr RM Jaiswal gave success to this unique bone marrow transplant.

cityfirst@firstindia.co.in

owner of a
ompany in

Sunil Sharma, an LED screen supplier, said that he had to remove screens at many places. Situation has become

the administration, people have started to cancel 'sangeet' functions. "Around half of my bookings have been cancelled.

pulsory to have hand sanitizers and spray machines at the entry gates at the venues. Some people are very cautious about the seating arrangements, too.

int
ps

TOI

t Shinde

e comp-
d were
get the
ey de-
t arres-
t's fat-

to find
who is
s stay-

ld not
had fo-
touch
nd we-
n him
herea-
noney
would
" said

55-yr-old undergoes special bone marrow transplant

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: City doctors performed a bone marrow transplant on a 55-year-old patient who is suffering from multiple myeloma, a type of white blood cell called a plasma cell that makes antibodies for fighting infections in the body. The patient was discharged from the hospital on Monday.

"We decided to give high dose of chemotherapy and autologous bone marrow transplant. Before chemotherapy, we collected patient's hematopoietic stem cells that form blood and immune cells. Following that, we gave the patient a high dose of chemotherapy. On the next day, we infused the hematopoietic stem cells back into his body and lodged them in the bone marrow, which started producing blood again in the body," said Dr Hemant Malhotra, director of the Ram Cancer Centre, Mahatma Gandhi Hospital, which became the third hospital in the city for performing bone marrow transplant.

TOI

Dr Hemant Malhotra & his team who performed bone marrow transplant

Dr Ajay Yadav, medical oncologist of the hospital said, "The patient was diagnosed as having multiple myeloma in May. He was having complains of bone pains and lump in the chest region. The disease was initially treated with chemotherapy and it was responded well. After which autologous bone marrow transplant was performed this month. The patient was admitted in strict isolation for nearly a month."

The transplant was performed on November 6. He remained in the isolation for at least 14 days as there were high chances of infection as the immunity of the patient was quite low to fight against any infection.

The process of bone marrow regeneration takes 2-3 weeks during which the patient is severely immunocompromised and is to remain admitted under strict isolation.

साथ संचालित
आलम ये है
ने के बाद भी
न बाद की भी

ऐसे में उन लोगों को निराश होना पड़ रहा है और परेशानी का भी सामना करना पड़ रहा है।

हैं। अगर इन ट्रेनों की संचालन अवधि में विस्तार नहीं किया जाता है, तो एक तरफ जहां यात्रियों को बड़ा झटका लगेगा। वहीं रेलवे को भी राजस्व का नुकसान होगा।

तमंद
ताज

योजना चलाई
ताया कि इस
और आर्थिक
को निशुल्क
जाएगी। इसमें
शिशु, बाल
र संक्रामक
, दांतों की
के पीड़ितों
या जाएगा।
अस्पताल
थ्य बीमा
है।

महात्मा गांधी अस्पताल में बोनमैरो ट्रांसप्लांट सफल

जयपुर| महात्मा गांधी अस्पताल के श्रीराम कैंसर सेंटर के चिकित्सकों की टीम ने बोनमैरो प्रत्यारोपण करने में सफलता अर्जित की है। मेडिकल अंकोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ हेमंत मल्होत्रा ने बताया कि विजयनगर अजमेर निवासी रोगी के मल्टीपल माय लोमा बीमारी का पता लगा जो कि एक प्रकार की अस्थि मज्जा का कैंसर होता है। इसमें अस्थि मज्जा में खून के साथ-साथ कैंसर की कोशिकाएं पनपने लगती है। मरीज को हड्डियों में तेज दर्द की शिकायत रहती थी इसके सीने के हिस्से में गांठ भी हो गई थी। रोगी की कीमोथेरेपी शुरू की गई जिसमें बीमारी का शुरुआत में नियंत्रण पा लिया गया। इसके बाद मरीज के खुद का आटोलोगस स्टेम सेल ट्रांसप्लांट किया गया। वरिष्ठ ऑकोलॉजिस्ट डॉ अजय यादव ने बताया कि बोन मैरो ट्रांसप्लांट रोगियों के लिए हेल्पलाइन सेवा भी शुरू की गई है जिसके जरिए रोगियों को घर बैठे ही चिकित्सकों द्वारा परामर्श उपलब्ध कराया जा रहा है।

अस्पताल के ही हिमेटोलॉजिस्ट डॉ नवीन गुप्ता ने बताया कि आटोलोगस स्टेम सेल ट्रांसप्लांट से पहले रोगी स्टेम सेल को एकत्रित किया जाता है इसके बाद हाई डोज कीमोथेरेपी देकर हड्डियों से कैंसर को नष्ट किया जाता है। रक्त निर्माण करने वाली स्टेम सेल रोगी के शरीर में खून की तरह चढ़ाई जाता है। अस्थि मज्जा पुनः संरचना होने में 2 से 3 सप्ताह का समय लगता है। ट्रांसप्लांट टीम में डॉ हेमंत मल्होत्रा, डॉ अजय यादव, डॉ नवीन गुप्ता, डॉ प्रशांत कुंभज, डॉ अंकुर पूनिया एवं डॉ संदीप बैरवा शामिल थे।

IFIED | BhaskarAd अब Classified Ad ऑनलाइन बुक करें

2020/11/25 07:53

मृतकों को सरकारी से कब्र खोदी जाती

कब्रिस्तान ले जाते हैं। कई लोग तो सामान्य लोगों की कब्रों के पास कोविड मृतक को दफना देते हैं।

शन

मल्टीपल मायलोमा के रोगी का बोनमैरो प्रत्यारोपण

महात्मा गांधी अस्पताल में सफल रहा इस तरह का पहला ट्रांसप्लांट

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। महात्मा गांधी अस्पताल के श्रीराम कैंसर सेंटर के चिकित्सकों की टीम ने बोनमैरो प्रत्यारोपण करने में सफलता हासिल की है। वरिष्ठ मेडिकल आन्कोलोजिस्ट डॉ. अजय यादव ने बताया कि अजमेर निवासी मरीज के मल्टीपल मायलोमा बीमारी का पता लगा जो एक प्रकार का अस्थि मज्जा का कैंसर होता है। इसमें अस्थि मज्जा में खून के साथ कैंसर कोशिकाएं पनपने लगती हैं। मरीज को हड्डियों में तेज दर्द रहता है। उसके सीने की हड्डी के हिस्से में गांठ भी हो गई थी। इस बीमारी में हड्डियां कमजोर होने लगती हैं। बार बार संक्रमण की शिकायत रहती है। रोगी की कीमोथैरेपी शुरू की, जिससे बीमारी पर शुरुआत में नियंत्रण पा लिया गया। इसके बाद मरीज का इस माह ओटोलोगस स्टैम सैल ट्रांसप्लांट किया गया। लगभग एक माह तक आइसोलेशन में भर्ती रहने के बाद मरीज को छुट्टी दे दी गई।

यह है ओटोलोगस स्टैम सेल ट्रांसप्लांट

अस्पताल के हीमेटोलोजिस्ट डॉ. नवीन गुप्ता ने बताया कि ओटोलोगस स्टैम सेल ट्रांसप्लान्ट से पहले रोगी के स्टेम सैल को एकत्रित किया जाता है। इसके बाद हाईडोज कीमो थैरेपी देकर हड्डियों से कैंसर को नष्ट किया गया। रक्त निर्माण करने वाली स्टेम सेल्स को रोगी के शरीर में खून की तरह से चढ़ाया जाता है। इस दौरान रोगी की प्रतिरोधकता बेहद कम हो जाती है एवं मरीज को गहन आइसोलेशन में रहने की आवश्यकता होती है। प्रत्यारोपण में डॉ. हेमन्त मल्होत्रा सहित अन्य चिकित्सकों का भी योगदान रहा।

Bone Marrow Transplant Unit
बोन मेरो ट्रांसप्लान्ट यूनिट
MGH

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : DAILY NEWS , PAGE NO : 2 DATE 27.10.2015

शहर के एक निजी अस्पताल ने सरकार को भेजा प्रस्ताव

हार्ट और किडनी के बाद अब हैंड ट्रांसप्लांट!

कैडेवर डोनर से हाथ लेकर लगाया जा सकता है दूसरे मरीज को

दुनिया का पहला हैंड ट्रांसप्लांट करने वाले डॉक्टर कपिला बोले - काफी जटिल है इसकी प्रक्रिया

सिटी रिपोर्टर

जयपुर ▷ 26 अक्टूबर

प्रदेश में हार्ट और किडनी ट्रांसप्लांट के बाद अब हैंड ट्रांसप्लांट की राह भी खुल सकती है। शहर के एक निजी अस्पताल ने इसके लिए सरकार से मंजूरी मांगी है। इसके लिए तकनीकी तैयारियां तो चल रही है, लेकिन यदि सरकार हैंड ट्रांसप्लांट को मंजूरी देती है तो प्रदेश में कैडेवर डोनर से हाथ लेकर दूसरे व्यक्ति के कटे हुए हाथ के स्थान पर लगाया जा सकता है। गौरतलब है कि देश में आज तक केवल दो हैंड ट्रांसप्लांट हुए है, जिन्हें केरल में किया गया है।

प्रदेश के निजी अस्पतालों ने कैडेवरिक ट्रांसप्लांट शुरू होने के बाद हैंड ट्रांसप्लांट में भी दिलचस्पी दिखाई है। इसी के तहत सोमवार को सीतापुरा स्थित एक निजी अस्पताल में हुए एक ओरेशन कार्यक्रम में सिडनी से हैंड ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. हरि एस कपिला आए। उन्होंने हैंड ट्रांसप्लांट को अन्य अंग प्रत्यारोपण के मुकाबले काफी जटिल बताया।

देश में अब तक केवल दो ट्रांसप्लांट

डॉ. कपिला ने बताया कि हैड ट्रांसप्लांट में कैडेवर डोनर का हाथ लेकर दूसरे व्यक्ति के कटे हुए हाथ के स्थान पर जोड़ा जाता है। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन में किसी एक टिशू की वजह से ऑर्गन रिजेक्शन की आशंका भी अधिक रहती है। देश में अब तक केवल दो हैड ट्रांसप्लांट ही हुए है। उल्लेखनीय है कि डॉ. कपिला ने वर्ष 1998 में फ्रांस में दुनिया का पहला हैड ट्रांसप्लांट किया था।

आठ से दस घंटे लगते हैं ट्रांसप्लांट में

उन्होंने बताया कि हैंड ट्रांसप्लांट में आठ से दस घंटे तक ऑपरेशन चलता है। हाथ को डोनर बॉडी से अलग करने के चार घंटे में उसे ट्रांसप्लांट करना पड़ता है। ऑपरेशन से पहले अंग हासिल करने वाले व्यक्ति की पूरी तरह से समझाइश की जानी चाहिए। इस तरह के ऑपरेशन में मॉड्यूलर ओटी, इम्यूनोलॉजिस्ट व फिजियोथैरेपिस्ट की भूमिकाएं भी महत्वपूर्ण होती है।

सरकार की स्वीकृति मिलना शेष

हैंड ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ. कपिला के आने और यहां प्लास्टिक सर्जन, एनेस्थिशिया और फिजियोथैरेपी की टीमें होने की वजह से उम्मीद की जा रही है कि जयपुर में हैंड ट्रांसप्लांट सर्जरी शुरू हो सकती है। सीतापुरा स्थित निजी अस्पताल में हैंड ट्रांसप्लांट के लिए तकनीकी तैयारियां चल रही है। सरकार की ओर से इसके लिए स्वीकृति मिलना शेष है।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL
PUBLICATION : MORNING NEWS , PAGE NO : 2 DATE 27.10.2015

हैण्ड ट्रांसप्लांट सर्जरी अधिक जटिल : डॉ. हरि

ऑर्गन रिजेक्शन है कारण, अब तक मात्र केरल में हुए दो हैंड ट्रांसप्लांट

महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में तैयारियां, सरकार की स्वीकृति का इंतजार

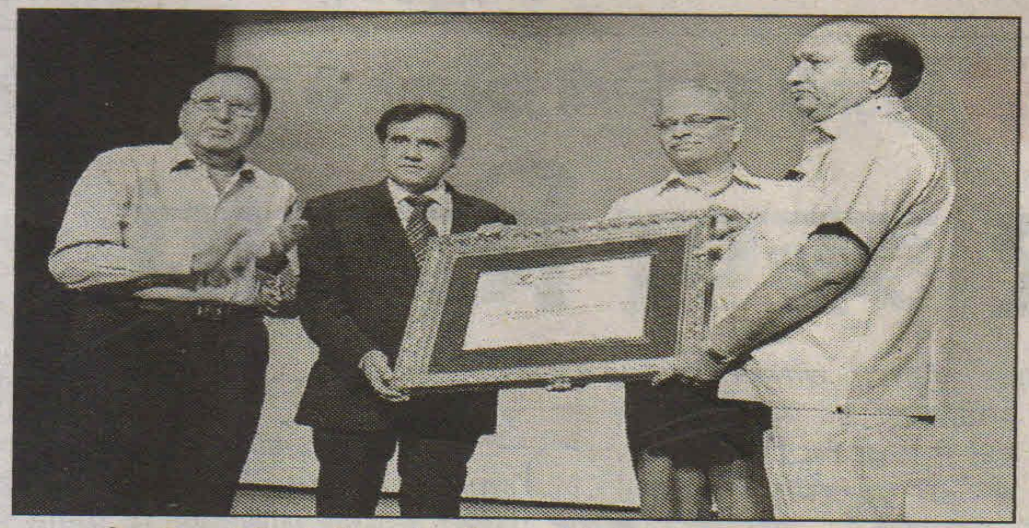

जयपुर,(मोन्यू)। अन्य केडेवर ट्रांसप्लांट की अपेक्षा हैंड ट्रांसप्लांट अधिक जटिल होता है। हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट में कैडेवर डोनर का हाथ लेकर दूसरे व्यक्ति के कटे हुए हाथ के स्थान पर जोड़ा जाता है और ऐसे ऑपरेशन शत प्रतिशत कैडेवरिक डोनर के सहयोग से होते हैं। इस ऑपरेशन के जरिये कम्प्यूजिट टिष्यूज जैसे चमडी, मांसपेषी, हड्डी, धमनियों, वाहिनियों तथा नर्वस को आपस में पूरी सावधानी से जोड़ा जाता है। ऑपरेशन में किसी एक टिष्यू की वजह से भी ऑर्गन रिजेक्षन की संभावना भी रहती है। यही वजह है कि देश में अब तक केवल दो हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट ही हुए हैं वो भी केरल में।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट के लिएहैण्ड ट्रांसप्लाण्ट के लिए उपयुक्त है। यहां की प्लास्टिक सर्जरी, एनेस्थीसिया, फिजीयोथैरेपी टीमें प्रशिक्षित हैं। प्रबंधन के अनुसार तकनीकी तैयारियां ऑपरेशन के लिए चल रही हैं तथा सरकार द्वारा स्वीकृति मिलनी बाकी है।

यह जानकारी सोमवार को विश्वविख्यात हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट सर्जन डॉ. हरि एस. कपिला ने दी। वे महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में श्रीमती गोमती देवी स्वर्णकार स्मृति ऑपरेशन में सम्बोधित कर रहे थे। महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड टैक्नोलोजी के चेयरमैन डॉ एम.एल.स्वर्णकार ने बताया कि हर वर्ष माँ श्रीमती गोमती देवी स्वर्णकार की स्मृति में देश विदेश के जाने माने चिकित्सकों का व्याख्यान आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम में हैण्ड सर्जन डॉ. वी.के.पाण्डे, प्लास्टिक सर्जन डॉ. मालती गुप्ता, वाइस चेयरपर्सन डॉ. मीना स्वर्णकार, डॉ. हरि गौतम, डॉ. सुधीर सचदेव तथा डॉ. जी एन सक्सैना ने भी सम्बोधित किया।

1998 में दुनिया का पहला हैंड ट्रांसप्लांट फ्रांस में : गौरतलब है कि डॉ.कपिला ने वर्ष 1998 में फ्रांस में दुनिया का पहला हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट किया था। डॉ. कपिला ने कहा कि हैण्ड ट्रांसप्लाण्ट में आठ से दस घण्टे तक ऑपरेशन चलता है।

NEWS : MAHATMA GANDHI HOSPITAL

PUBLICATION : MAHANAGAR TIMES , PAGE NO : 15 DATE 27.10.2015

हैंड ट्रांसप्लांट सर्जरी अधिक जटिल : डॉ. कपिला

महानगर संवाददाता

जयपुर। हैंड ट्रांसप्लांट में कैडेवर डोनर का हाथ लेकर दूसरे व्यक्ति के कटे हुए हाथ के स्थान पर जोडा जाता है। ऐसे ऑपरेशन शत प्रतिशत कैडेवरिक डोनर के सहयोग से होते हैं। यह ऑपरेशन दूसरे अंग प्रत्यारोपण के मुकाबले अधिक जटिल होता है। इस ऑपरेशन के जरिए कम्प्यूजिट टिश्यूज जैसे चमडी, मांसपेशी, हड्डी, धमनियों, वाहिनियों तथा नर्वस को आपस में पूरी सावधानी से जोड़ा जाता है। इस ऑपरेशन में किसी एक टिश्यू की वजह से भी ऑर्गन रिजेक्शन की संभावना भी रहती है। यही वजह है कि देश में अब तक केवल दो हैंड ट्रांसप्लांट ही हुए हैं। यह जानकारी विश्वविख्यात हैंड ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. हरि एस. कपिला ने दी। वे महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में गोमती देवी स्वर्णकार स्मृति समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि डॉ. कपिला ने वर्ष 1998 में फ्रांस में दुनिया का पहला हैंड ट्रांसप्लाट किया था।

महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में गोमती देवी स्वर्णकार स्मृति में कार्यक्रम आयोजित

Awareness Activities

महात्मा गाँधी अस्पताल, जयपुर
विश्व अंगदान दिवस – 13 अगस्त 2019
महर्षि दधीचि की अंगदान परम्परा के निर्वाहकों को श्रद्धांजलि
संकल्प अभियान
जीवनदाता
का अग्रणी
कैडेवर अंगदाता
कुल अंगदान
किडनी प्रत्यारोपण
REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

MAHATMA GANDHI UNIVERSITY
MEDICAL SCIENCES & TECHNOLOGY
JAIPUR
MAHATMA GANDHI HOSPITA
Celebrating
Silver Jubilee
week of
Human Organ Trans
01 -07 Ju
~ मोहित ~
जी हाँ !

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

विश्व अंगदान दिवस की पूर्व संध्या पर 22 अंगदाताओं का किया सम्मान

जीवन को नई राह दिखाता अंगदाता : डॉ. आर.सी. गुप्ता

जयपुर (कासं)। जीवन-मृत्यु का दाता भगवान है, किन्तु चिकित्सा विज्ञान की तरक्की एवं नए अनुसंधान के बाद अब मानव अंग भी प्रत्यारोपित किए जाने लगे हैं। यह विचार महात्मा गांधी अस्पताल के मेडिकल अधीक्षक डॉ. आर.सी. गुप्ता ने व्यक्त किए। डॉ. गुप्ता यहां विश्व अंगदान दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा अंगदाता हमारे लिए भगवान हैं। सरकार की संवेदनशीलता के कारण 25 साल पहले यह कानून बनाया जिससे जरूरतमंद को अंग सुलभ हो सके। मेडिकल निदेशक एवं अस्पताल के किडनी प्रत्यारोपण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. टीसी सदासुखी ने कहा महात्मा गांधी अस्पताल ने सन् 2015 से किडनी प्रत्यारोपण आरंभ किया। मात्र चार साल में आठ सौ से अधिक किडनी प्रत्यारोपण का राज्य में कीर्तिमान स्थापित किया जो कि राजस्थान में चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धि है। कार्डियक थोरेसिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलराम एरन ने कहा कि मेरे द्वारा अब तक 65 से अधिक हृदय प्रत्यारोपण किए जा चुके हैं। यह कैडेबर अंगदान में संभव होता है। नेफ्रोलोजिस्ट डॉ. सूरज गोदारा ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल में जितने भी किडनी प्रत्यारोपण हुए जिनमें सफलता दर अन्तर राष्ट्रीय स्तर की रही है। इस अवसर पर अंगदान के लिए प्रेरित करने के लिए अस्पताल में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। कार्यक्रम के दौरान अंगदान करने वाले 22 अंगदाताओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मुख्य आर्गन ट्रांसप्लान्ट समन्वयक आर्यन माथुर, शशांक मेहरा तथा परामर्शदाता किशोर शर्मा सहित अनेक जने उपस्थित थे।

जीवन को नई राह दिखाता अंगदाता : डॉ. गुप्ता

जयपुर। जीवन-मृत्यु का दाता भगवान है, किन्तु चिकित्सा विज्ञान की तरक्की और नए अनुसंधान के बाद अब मानव अंग भी प्रत्यारोपित किए जाने लगे है। यह विचार महात्मा गांधी अस्पताल के मेडिकल अधीक्षक डॉ. आरसी गुप्ता ने व्यक्त किए। डॉ. गुप्ता विश्व अंगदान दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा अंगदाता हमारे लिए भगवान है। सरकार की संवेदनशीलता के कारण 25 साल पहले यह कानून बनाया था, जिससे जरूरतमंद को अंग सुलभ हो सके। इस अवसर मेडिकल निदेशक व अस्पताल के किडनी प्रत्यारोपण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. टीसी सदासुखी ने कहा महात्मा गांधी अस्पताल ने 2015 से किडनी प्रत्यारोपण आरंभ किया। मात्र चार साल में आठ सौ से अधिक किडनी प्रत्यारोपण कर राज्य में कीर्तिमान स्थापित किया है। कार्डियक थोरेसिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलराम एरन ने कहा कि मेरे द्वारा अब तक 65 से अधिक हृदय प्रत्यारोपण किए जा चुके है। यह कैडेबर अंगदान में संभव होता है। नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. सूरज गोदारा ने कहा कि महात्मा गांधी अस्पताल में जितने भी किडनी प्रत्यारोपण हुए उनमें सफलता दर अंतरराष्ट्रीय स्तर की रही है।

गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीजों के जीवन को नई राह दिखाता अंगदाता

अंगदान करने वाले 22 अंगदाताओं का सम्मान

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

विश्व अंगदान दिवस की पूर्व संध्या पर सोमवार को सीतापुरा स्थित महात्मा गांधी अस्पताल में सम्मान समारोह आयोजित हुआ। अस्पताल अधीक्षक डॉ.आर. सी.गुप्ता ने कहा चिकित्सा विज्ञान की तरक्की एवं अनुसंधान के बाद मानव अंग प्रत्यारोपित किए जाने लगे है। अंगदाता हमारे लिए भगवान है। सरकार की संवेदनशीलता के कारण 25 साल पहले बनाया गए कानून से गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों को नई जिन्दगी मिल रही है। अस्पताल के किडनी प्रत्यारोपण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.टी. सी.सदासुखी ने कहा अस्पताल में चार साल पहले ही किडनी ट्रांसप्लांट प्रारंभ कर दिया गया था। पिछले चार साल में ही 800 से अधिक किडनी ट्रांसप्लांट किए जा चुके है। कार्डियक थोरेसिक सर्जरी विभाग के अध्यक्ष डॉ.बलराम एरन ने बताया कि मेरे द्वारा अब तक 65 से अधिक हार्ट ट्रांसप्लांट किए जा चुके है। यह केडेवर अंगदान में ही संभव है। समारोह बेटी को किडनी दान करने वाले उमेश सिंह ने कहा बेटा-बेटी में फर्क नहीं होना चाहिए। अंगदान को प्रेरित करने के लिए अस्पताल में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। किडनी प्रत्यारोपित सुरेश भूषण ने कहा कि सोश्यल मीडिया के माध्यम से अंगदान को प्रेरित करने के लिए अभियान चलाना चाहिए। अंगदान करने वाले 22 अंगदाताओं को भी सम्मान किया। इस मौके पर नेफ्रोलोजिस्ट डॉ.सूरज गोदारा, मुख्य आर्गन ट्रांसप्लांट समन्वयक आर्यन माथुर, शशांक मेहरा तथा परामर्शदाता किशोर शर्मा आदि उपस्थित थे।

क्रेडिट कार्ड से विदेश में

महात्मा गाँधी अस्पताल
श्रीराम कैंसर एण्ड सुपर स्पेशियलिटी सेन्टर
राज्य का सबसे बड़ा अंग प्रत्यारोपण केन्द्र
YOGA
Dr. Amarjeet Mehta
Dr Sudhir Sachdev
Dr. Manish Sharma

PRESIDENT
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, JAIPUR-302 022

अंगदान जागरूकता पर कार्यक्रम आयोजित

जयपुर| विश्व अंगदान दिवस पर महात्मा गांधी अस्पताल में क्रिटिकल केयर विभाग की ओर से अंगदान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट डॉ. सुधीर सचदेव रहे। स्टेट ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन राजस्थान के डॉ. अमरजीत मेहता तथा डॉ मनीष शर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आरसी गुप्ता, सुप्रसिद्ध किडनी प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. टीसी सदासुखी, राज्य में पहला हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाले डॉ. एम ए चिश्ती, लिवर प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. शाश्वत सरीन, क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ. प्रियम्वदा गुप्ता, डॉ. आशीष जैन, डॉ. सृष्टि जैन ने भी सम्बोधित किया। वक्ताओं ने जानकारी दी कि पांच साल में राज्य में 42 अंगदाताओं के जरिये लगभग डेढ सौ रोगियों में अंग प्रत्यारोपण किया गया है। इस मामले में तमिलनाडु सबसे आगे है जहां ये कार्यक्रम पन्द्रह साल पहले शुरू किया गया था। कार्यक्रम में डॉ. सुभाष नेपालिया, डॉ. सूरज गोदारा, डॉ. वीके कपूर, डॉ. दुर्गा जेठवा, डॉ. डीडी जेठवा, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. करण कुमार, डॉ. आनन्द नागर, डॉ. पीयूष वार्ष्णेय आदि मौजूद रहे।

PRESIDENT
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, JAIPUR-302 022

Nitya Tanwar

the director of Grand Safari

(L-R) Dr RX Gupta, Dr Amarjeet Mehta, Dr Sudhir Sachdeva and Dr Manish Sharma

ORGAN DONATION AWARENESS

CITY FIRST

An organ donation awareness program was organised by the Critical Care Department at Mahatma Gandhi Hospital on the occasion of World Organ Donation Day on Friday. Dr Sudhir Sachdeva, President, Mahatma Gandhi Medical University graced the occasion as the Chief Guest. Dr Amarjeet Mehta and Dr Manish Sharma of State Organ and Tissue Transplant Organisation Rajasthan were the special guests of the event.

Medical superintendent Dr RC Gupta, a well-known kidney transplant specialist, Dr TC Sadasukhi, Dr MA Chishti, who performed the first heart transplant in the state, Dr Shashwat Sarin, a liver transplant specialist, Dr Priyamvada Gupta, critical care specialist, Dr Ashish Jain, Dr Srishti Jain also addressed the gathering. The speakers informed that every year 2 lakh patients in the country require kidney transplants but the availability is only 5-7 thousand.

In Rajasthan, the cadaver donation program was started in Mahatma Gandhi Hospital in 2015. Dr Subhash Nepalia, Dr Suraj Godara, Dr VK Kapoor, Dr Durga Jethwa, Dr DD Jethwa, Dr Manish Gupta, Dr Karan Kumar, Dr Anand Nagar and Dr Piyush Varshney among various others were present on the occasion.

cityfirst@firstindia.co.in

Thanks

PRESIDENT
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, JAIPUR-302 022